इस अंक से
रंगीन चित्र-कथा भी
नंदन
नई पीढ़ी के
निर्माण का मासिक
जनवरी १९८९
२.५०
नया वर्ष
शुभ हो

डायमंड कामिक्स की नई भेंट

पिकलू

पिकलू में हर माह पढ़े
कार्टूनिस्ट प्राण के प्रसिद्ध करैक्टर्स
चाचा चौधरी के कारनामे
पिंकी के कारनामे और अन्य कई रोचक स्तम्भ

मनोरंजन की दुनिया में एक नया प्रयोग

कामिक्स

महाबली शाका और जन्नत महल

6/-

दिसम्बर 85 में प्रकाशित

नये

डायमंड कामिक्स

- रमन और खलीफा की दाढ़ी 4-00
- चाचा भतीजा और सर्प भवानी 4-00
- लम्बू मोटू और खतरनाक मिशन 4-00
- महाबली शाका और बौनों का संग्राम 4-00
- अंकुर और डायनासौर से टक्कर 4-00
- पलटू और जादूई सन्दूक 4-00

नये भारत के नये भविष्य के निर्माण में
सूझबूझ से जुटे हुए
हमारे सजग प्रहरी
प्रधान मंत्री राजीव गांधी
की जीवनी चित्रों सहित

राजीव गांधी

6/-

देश की एकता व अखण्डता के
लिये कुर्बानी देने
वाली इन्दिरा जी
की सचित्र जीवनी

राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी

राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी

6/-

PUBLICO/Jan/86

डायमंड कामिक्स प्रा. लि.

2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

आओ बात करें

सिकंदर महान जिधर का रुख करता, जीतता ही चला जाता। एक बार वह कहीं जा रहा था। राह में देखा—एक फकीर। फकीर खुले में लेटा था। सिकंदर रुका। उससे बोला—"मैंने दुनिया को जीता है। मेरे पास सब कुछ है। बोल, तू क्या चाहता है ?"

फकीर ने आंखें फाड़कर सिकंदर की तरफ ताका। क्षण भर जैसे सोचा। बोला—"अरे, तू मुझे क्या देगा ? हट जा यहां से। मेरी धूप मत रोक।"

उस कलंदर की मस्ती के सामने सिकंदर का मुंह उतर गया। मस्ती, खुशी और सुख—धन या साधन से नहीं जुड़े हुए। यह तो स्वभाव बनाने की बात है।

नए वर्ष में हम दूसरों को शुभकामनाएं भेजते हैं। उनके लिए खुशियों की बात करते हैं। खुद खुश रहें—यह भूल जाते हैं। तो उठिए, खड़े हो जाइए। हंसिए-खिलखिलाइए। कहते हैं—हर हाल मगन रह रे बंदे, हर हाल जतन कर रे बंदे !

. . . और हां, अब 'नंदन' के हर अंक में रंगीन चित्र कथा पढ़ो। फोटो सेटिंग की छपाई, ताकि आंखों पर जोर ही न पड़े। खर्चा अधिक पड़ेगा, तो पचास पैसे कीमत भी बढ़ा रहे हैं। लेकिन हमारे पाठक बराबर लिख रहे हैं कि वे 'नंदन' पढ़ेंगे, कीमत कुछ भी हो।

—तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

पत्र मिला

दीपावली विशेषांक बेजोड़ था। चित्र कथा 'तेनालीराम' और 'चटपट' बहुत पंसद आए। विशेषांक मैंने संभालकर रख लिया है।

— शिवकुमार गर्ग, खीरी तिकोनिया, (उ. प्र.)

राजीव गांधी : इक्कीसवीं सदी की ओर कार्टून दिलचस्प था। आगे भी ऐसे कार्टून प्रकाशित करेंगे, ऐसी उम्मीद है।

— मुकेश शर्मा, नरेंद्र नगर, टिहरी (गढ़वाल)।

उपहार अंक पढ़ा। पहले मैं जीव-जंतुओं को बहुत मारता था। इस अंक में 'नई चाल' कहानी पढ़ी, जिससे मैंने जीवों को कभी न सताने की कसम खा ली।

— राजेशकुमार नेमा, सिंहपुर (बड़ा)।

मैं हिंदी अच्छी तरह नहीं जानता, मगर अब मैंने 'नंदन' पढ़ना शुरू कर दिया है। उम्मीद है, इसके सहारे हिंदी अच्छी तरह सीख जाऊंगा।

— उमाकांत दास, मंजरी रोड।

मैं ६० वर्ष की दादी मां हो चुकी हूं, फिर भी न जाने क्यों 'नंदन' से लगाव है। 'श्रीलक्ष्मी और श्रीगणेश' के इतने मनमोहक चित्र छापकर आपने सराहनीय कार्य किया है।

— प्यारी बाई साहू, टीकमगढ़।

'पानी में रानी,' 'देवता की बांसुरी', 'राजा भोज' कहानियां अच्छी लगीं। इस अंक में पृष्ठ अधिक होने के कारण अधिक सामग्री पढ़ने को मिली।

— चंद्रकांत गुप्ता, कटनी।

परीक्षा होने के कारण मैंने सोचा था, इस महीने मैं 'नंदन' नहीं पढ़ूंगा। लेकिन वार्षिक उपहार विशेषांक की सबने तारीफ की। फिर मैं पढ़े बिना कैसे रहता। सचमुच पूरी सामग्री बहुत ही रोचक थी।

— संजयकुमार भदानी, रांची।

इनके पत्र भी उल्लेखनीय थे : निर्मल नागपाल, हिसार; सत्येंद्रप्रसाद वर्मा, पटना; राकेश करहेरिया, ग्वालियर।

नंदन जनवरी '८६

वर्ष: २२ अंक: ३

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : शम्भु मुखर्जी—एलबम : हरीश वर्मा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार; रत्नप्रकाश शील; क्षमा शर्मा; चित्रकार : प्रशांत सेन

वापस नहीं लूंगा

— मोतीलाल पाटीदार

डूंगरपुर राज्य के चुंड़ावाड़ा गांव में एक किसान रहता था। उसका नाम था शिवाजी। बड़ा ही नेक आदमी था। वह गांव का मुखिया था। दूसरों की भलाई में लगा रहता था। गांव वाले उसके प्रशंसक थे। गांव में यदि आपस में कोई झगड़ा होता, तो वह अपनी सूझ-बूझ से निपटा देता था। किसी को अदालत में नहीं जाने देता था। उसका कहना था—'आपस में सहयोग करने में ही गांव की भलाई है।'

शिवाजी की पत्नी केशर बाई भी बड़ी दयालु थी। उनके बच्चे अभी छोटे-छोटे थे, फिर भी दोनों पति-पत्नी अपनी खेती का काम देखने के साथ-साथ, दूसरों के काम भी कर देते थे।

एक बार भयंकर गर्मी पड़ी। इसके बाद वर्षा भी हुई। लोगों को वर्षा से राहत मिली। पशुओं के लिए चारे की आशा बंधी। वर्षा होते ही लोगों ने खेतों में अनाज बो दिया। लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था। एक वर्षा के बाद दूसरी बार वर्षा नहीं हुई। खेतों में खड़ा अनाज सूखने लगा। किसान हमेशा आकाश की ओर ताकते रहते, लेकिन वर्षा नहीं हुई। लोगों के पास सिंचाई के पूरे साधन नहीं थे। फसलें सूखने लगीं। गांव में घबराहट फैल गई। अब क्या करे? अधिक चिंता पशुओं की होने लगी। आखिर कुछ लोग अपने पशुओं को लेकर दूसरे स्थान पर चले गए। कुछ लोग शहर में जाकर मजदूरी करने लगे।

शिवाजी के लिए बड़ी कठिन समस्या हो गई। वह दूसरों की तरह शहर में मजदूरी नहीं कर सकता था। गांव का मुखिया जो था वह। किसी से उधार भी मांगना उसके लिए लज्जा की बात थी। शहर में एक सेठ था मुरलीधर। वह दयालु और धर्मात्मा था। मुसीबत से सताए लोगों की सहायता करता था। लेकिन वह दिए हुए रुपए वापस नहीं लेता था। शिवाजी की उस सेठ से अच्छी जान-पहचान थी, परंतु वह उसके पास जाना नहीं चाहता था।

एक दिन पत्नी ने कहा—''हम शहर जाकर मजदूरी नहीं कर सकते, तो क्या हुआ! अपने खेतों पर तो काम कर सकते हैं। आप मेरे गहने लेकर जाओ। सेठ से उधार मांगने के बजाए, ब्याज पर रुपए ले आओ। कोई पूछे तो कह देना, कुआं खुदवाना है। इससे अपनी लाज भी रह जाएगी और काम भी बन जाएगा।''

शिवाजी शहर में गहने लेकर घूमा, परंतु कहीं रुपए नहीं मिले। आखिर सेठ मुरलीधर के पास गया। कुआं खोदने की बात कही। सेठ ने रुपए देने को कहा, लेकिन वही शर्त रखी—''मैं रुपए वापस नहीं लूंगा।'' शिवाजी सूद सहित रुपए वापस देना चाहता था। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे। अंत में शिवाजी को हार माननी पड़ी। सेठ से हजार रुपए ले आया। उन रुपयों से शिवाजी ने अनाज खरीदा। फिर कुछ लोगों को मजदूरी देकर खेतों की मेड़ें बनवाईं, जिससे खेतों में पानी भरा रह सके। खेतों के पास कुआं खोदा। और उस पर रहट लगवाया। अगले

वर्ष अच्छी वर्षा हुई। जरूरत पड़ने पर कुएं से सिंचाई भी कर दी। इससे अनाज अच्छा हुआ। शिवाजी को देख, गांव के लोगों ने भी अपने खेतों की मेड़ें बनवाईं। कुएं खोदे। अब सारे गांव में फसल अच्छी होने लगी। आसपास के गांव भी इसी तरह करके अपनी फसलें उगाने लगे।

फसल अच्छी होने पर हाथ में रुपया भी आ गया। शिवाजी सोचने लगा —'सेठ जी की कृपा से सब अच्छा हो गया है। उनको रुपए वापस कैसे लौटाऊं ?'

एक दिन शिवाजी खेतों से आ रहा था। गर्मी तेज़ थी। रास्ते में उसे प्यास लगी। उसने सोचा—'क्यों न मैं गांव के बाहर एक प्याऊ बनवा दूं। आसपास के गांवों का शहर जाने का यही रास्ता है। लोग गर्मी के दिनों में यहां पानी पीकर प्यास बुझाएंगे।' यही सोचकर उसने गांव के बाहर एक प्याऊ बनवा दी। प्याऊ पर लिखवा दिया—'मुरलीधर की प्याऊ।' वहां एक आदमी पानी पिलाने के लिए रख दिया। यह बात सेठ के पास पहुंची। उसे आश्चर्य हुआ-'मैंने तो प्याऊ बनवाई नहीं। न किसी से ऐसा करने के लिए कहा है। फिर मेरे नाम से प्याऊ कैसे बन गई।'

एक दिन सेठ स्वयं इसकी जानकारी लेने गांव में आया। उस दिन पानी पिलाने स्वयं शिवाजी बैठा था। सेठ सीधे प्याऊ पर गया। शिवाजी लोगों को पानी पिला रहा था। सेठ को देख, शिवाजी ने नमस्कार किया। सेठ ने प्याऊ के बारे में पूछा। शिवाजी मुसकराते हुए बोला—''प्याऊ आपने ही बनवाया है। दो वर्ष पूर्व आपसे मैं रुपए लाया था। लेकिन आपकी शर्त रुपए वापस नहीं लेने की थी। मैं बिना मेहनत का खाता नहीं। फिर आपका ऋण किसी तरह तो चुकाना ही था। यह प्याऊ इसीलिए बनवाई है। आपका नाम लिखवाया, ताकि लोग आप जैसे उपकारी को दुआएं दें।''

''शिवाजी, मगर परोपकार में तुम मुझसे भी आगे निकल गए।'' —कहते हुए सेठ ने शिवाजी की पीठ थपथपा दी। ●
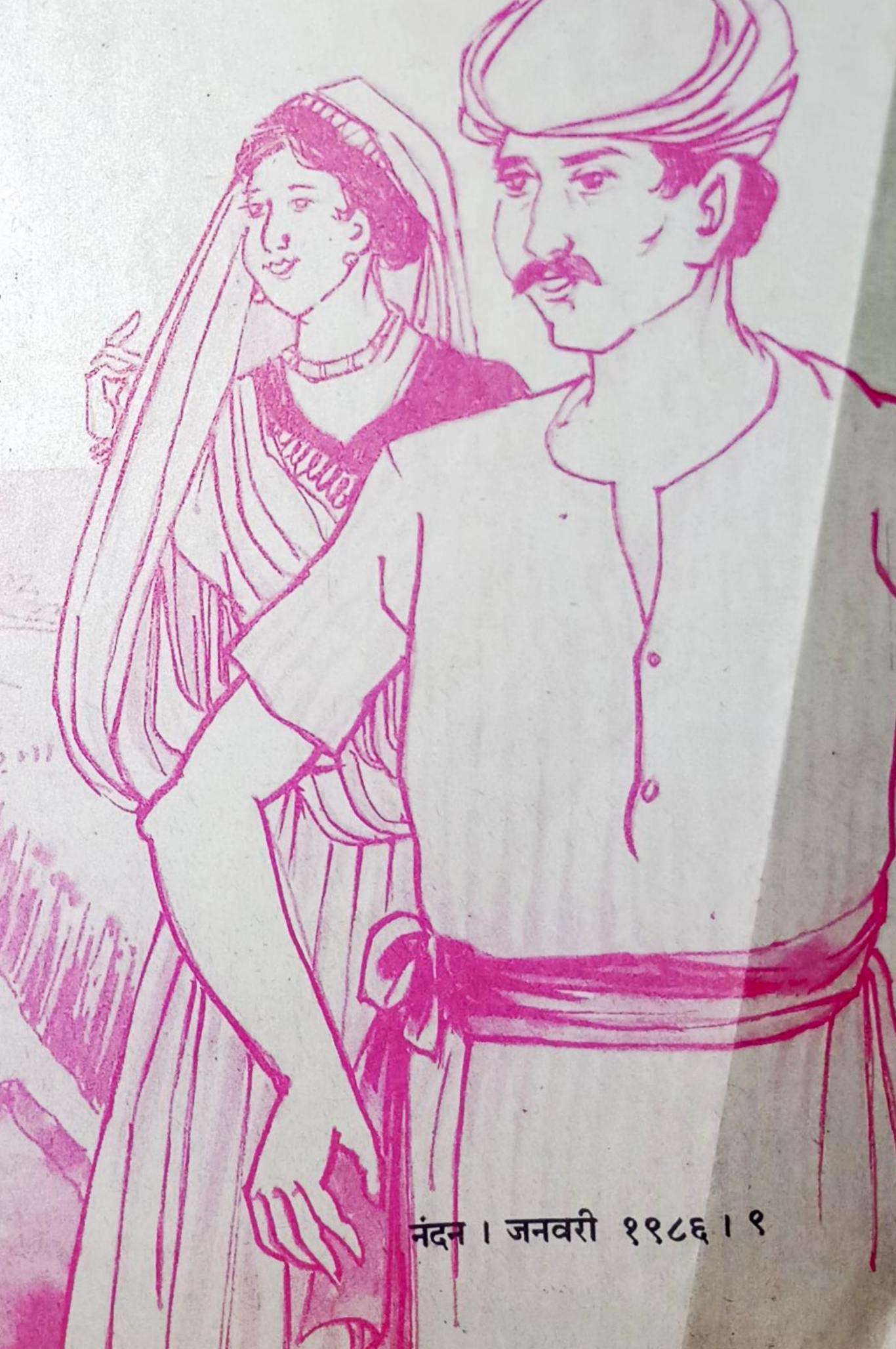
रामजी-श्यामजी

—उर्मिला वार्ष्णेय

किसी गांव में दो आदमी रहते थे—रामजी और श्यामजी । वे दोनों आलसी होने के साथ-साथ परले सिरे के गप्पी भी थे ।

एक दिन रामजी अपने घर के आगे खाट पर बैठा धूप सेंक रहा था । तभी उधर से श्यामजी आ निकला । राम-राम, श्याम-श्याम हुई । रामजी बोला—"आओ, श्यामजी ! काफी दिन बाद मुलाकात हुई है । कहीं बाहर गए थे क्या ?"

"बाहर तो आना-जाना लगा ही रहता है, मगर मेरे लिए रोज दस-बीस मील इधर-उधर आना-जाना कोई मतलब नहीं रखता । तुम सुनाओ अपनी ।"

बस, बातों के घोड़े दौड़ने लगे । रामजी बोला—"तुम इतना घूमते-फिरते हो, तभी तो तंदुरुस्त हो । तुम्हारा बदन कसरती लगता है । यहां तो खाते-पीते भी हड्डियां ही निकलीं रहती हैं ।"

श्यामजी ने खाट पर पैर फैला दिए । बोला—"भइया, इस महंगाई के जमाने में असली घी-दूध तो नसीब नहीं । दूसरी चीजें भी हम जैसे गरीबों को भरपेट कहां मिलती हैं । यह सब तो गंगा मैया का प्रताप है । मैं रोज गंगा नहाता हूं । गंगा जल पीता हूं । बस, जो रूखा-सूखा खाने को मिल जाता है, वह शरीर को पूरी तरह लगता है ।"

"रोज गंगा नहाते हो, मगर कैसे ? गंगा तो यहां से पंद्रह मील दूर है । तुम्हारे पास तो घोड़ा-हाथी भी नहीं । फिर इतनी दूर कैसे आते-जाते हो ?"

सुनकर श्यामजी हंसा । बोला—"तुमने शायद मेरे बारे में सुना नहीं । मेरे पिता जी के बारे में तो तुम्हें मालूम ही क्या होगा ? एक घंटे में साठ मील दौड़ते थे मेरे पिता जी । अब उन जैसी रफ़्तार तो मेरी है नहीं, मगर मैं भी दौड़कर आधा घंटे में गंगाजी पहुंच जाता हूं । नहा-धोकर वापस । जब तक गांव वाले जागें, मैं लौट आता हूं, इसीलिए गांव में आज तक इस बारे में कोई नहीं जान पाया । तुमको पहली बार बताई है मैंने यह बात ।"— यह कहकर श्यामजी चुप हो गया ।

कुछ देर चुप्पी रही । श्यामजी देख रहा था, रामजी भी कुछ कहने के लिए बेताब है । वह बोला—"रामजी भाई, तुम्हारे पास तो काफी खेती है । आजकल तो फसल का मौसम है । तुम यहां आराम कर रहे हो । ऐसे खेती का काम कैसे होता होगा ?"

रामजी बोला—"पहले मैं अकेला ही फावड़ा लेकर एक रात में सभी खेतों को बुवाई के काबिल बना देता था । मगर एक घटना ऐसी हुई कि खेती से मेरा मन हट गया । उस दिन के बाद मैंने फावड़े को छुआ तक नहीं ।"

"आखिर ऐसा क्या हुआ ?"

रामजी बोला—"हुआ यह कि मैं फावड़े से खेत में क्यारियां बना रहा था । अचानक फावड़े का फाल टूटकर मिट्टी में कहीं खो गया । मैंने खूब ढूंढ़ा, मगर फाल न मिला । मैंने सोचा, चलो कोई बात नहीं । फसल काटूंगा, तो फाल मिल जाएगा । कुछ दिन बाद फसल भी कट गई । यहां तक कि अनाज घर में आ गया, मगर फावड़े का फाल न मिला । धीरे-धीरे मैं इस बात को भूल गया ।"

मगर श्यामजी को यह मंजूर कहां था, बोला—"क्या फाल फिर नहीं मिला ?"

"मिला क्यों नहीं । वही तो बताने जा रहा हूं । हुआ यह कि एक दिन मैं उसी अनाज के आटे की रोटियां खा रहा था । अचानक रोटी के कोर में कोई कड़ी चीज आई । जैसे ही मैंने रोटी का कोर दांतों से चबाना चाहा, कड़ाक से वह चीज दांतों से टकराई । उसके टकराने से मेरा एक दांत भी उखड़ गया । मैंने हाथ से उस चीज को मुंह से निकाला । देखा, वह फावड़े का फाल ही था । यह देखो, मेरा टूटा दांत । दांत क्या टूटा, मेरा उत्साह ही टूट गया । तब से लेकर आज तक मैं खेत में नहीं गया ।"

यह सुनकर श्यामजी मुसकराने लगा ।

उठो बेटा

—डा. राममूर्ति वासुदेव 'प्रशांत'

हिमालय की पहाड़ियों में एक छोटा-सा गांव बसा था। वहां सत्यदेव नाम का एक व्यक्ति रहता था। गांव में उसकी परचून की दुकान थी। सत्यदेव बहुत ईमानदार और सच्चा आदमी था। कभी कम तोलकर अधिक लाभ उठाने की उसने कोशिश नहीं की। अपनी मेहनत की कमाई से वह हमेशा संतुष्ट रहता था।

एक बार उस गांव में एक साधु आकर रहने लगा। गांव के बाहर घास-फूस की एक छोटी-सी कुटिया बनाकर जप-तप करता रहता था। सर्दी हो या गर्मी, वह हमेशा एक लंगोटी में ही रहता था।

साधु अपना अधिक समय भजन-पूजन में ही बिताता था। कभी भिक्षा के लिए भी गांव में नहीं आता था। खुद कोई भोजन आदि दे जाता, तो वह खा लेता था। कई बार उसे भूखा भी रहना पड़ता था।

साधु हमेशा चुप रहता था। कोई खास बात हो, तभी बोलता था। उसे एकांत पसंद था। उसकी इस आदत के कारण बहुत कम लोग उसके पास आते-ज़ाते थे।

वह साधु एक उच्चकोटि का सिद्ध था। किंतु उसने इस बारे में कभी किसी को नहीं बताया था। इसलिए कि लोगों को पता चल जाता, तो उसकी साधना में रुकावट आती।

सत्यदेव बहुत धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह साधु-संतों का बड़ा भक्त था। गांव में कोई भी साधु आता, तो वह उसकी बड़ी सेवा करता। इस साधु के साथ भी उसका मेल-मिलाप धीरे-धीरे बढ़ता गया। साधु की उस पर विशेष कृपा रहने लगी।

सत्यदेव दोनों समय का खाना साधु को पहुंचाता था। समय मिलता, तो खुद खाना लेकर उसकी सेवा में जाता, नहीं तो उसका बेटा खाना दे आता था। साधु सत्यदेव के बेटे से भी बहुत स्नेह करता था।

एक दिन अनहोनी घटना घटी। सत्यदेव का इकलौता बेटा बीमार पड़ गया। एक ही दिन में उसकी हालत बिगड़ गई। पास के कस्बे से वैद्य भी आया, मगर कुछ लाभ न हुआ। बेटे की ऐसी हालत देख, सत्यदेव और उसकी पत्नी बैचेन हो उठे। सारा काम-धाम छोड़, बेटे की देखभाल में जुट गए। पास-पड़ोस के लोग भी आ गए।

इसी तरह दोपहर ढल गई। खाने-पीने की भी किसी को सुध नहीं थी। तभी सत्यदेव को ध्यान आया-'आज साधु को भी खाना नहीं पहुंचाया। मुझे खाना पहुंचाना चाहिए।' पत्नी बेटे के दुःख में डूबी

थी । पड़ोसिन से कहकर सत्यदेव ने साधु के लिए खाना बनवाया । सभी आश्चर्य में थे, घर में बेटा बीमार है । खुद पति-पत्नी ने कल से कुछ नहीं खाया । क्या साधु को खाना देना इतना जरूरी है ? मगर सत्यदेव ने किसी की एक न सुनी । खाना लेकर चला गया ।

साधु कुटिया में नहीं था । वह बैठकर इंतजार करने लगा । काफी देर बाद साधु आया । सत्यदेव ने खाना दे दिया । साधु बिना कुछ कहे, हाथ-पैर धोकर खाना खाने लगा । सत्यदेव वहीं पास में बैठ गया ।

इसी बीच सत्यदेव के बेटे की मृत्यु हो गई । एक आदमी दौड़ता हुआ उसके पास आया । उसे बाहर बुलाया । फिर बेटे की मृत्यु की खबर दी । सुनकर सत्यदेव की आंखों के आगे अंधेरा-सा छा गया, मगर तभी जैसे उसे होश आया । उसने अपने को संभाला । उस आदमी से कहा—"तू चल, साधु महाराज खाना खा रहे हैं । खाते हुए को परेशान करना ठीक नहीं । मैं अभी आया ।"

वह आदमी चला गया । परेशान सत्यदेव अंदर आया । साधु तब तक खाना खा चुका था । सत्यदेव की परेशानी भांप, साधु बोला—"क्या बात है ?"

सत्यदेव की आंखों से आंसू फूट निकले । रोते हुए उसने बेटे की दुखद मौत की खबर साधु को दी ।

"बहुत बुरा हुआ ।"—साधु के मुंह से निकला ।

सत्यदेव चलने लगा, तो साधु बोला—"चल, मैं भी चलता हूं तेरे साथ।" यह सुनकर सत्यदेव को बहुत आश्चर्य हुआ । वह सोचने लगा—'साधु तो कभी किसी के घर गया ही नहीं। फिर आज क्या बात है?' किंतु उसने पूछना उचित नहीं समझा ।

घर पहुंचकर साधु ने देखा, लड़के की मृत देह सफेद वस्त्र से ढंकी आंगन में रखी है । पास बैठी स्त्रियां विलाप कर रही हैं । साधु के आने पर वे थोड़ा दूर खिसक गईं । साधु काफी देर आंखें बंद किए मृत देह के पास खड़ा रहा । सभी को यह देख, बड़ी उत्सुकता हो रही थी । फिर वह मुस्कराने लगा । लोगों को बुरा भी लगा । थोड़ी देर के बाद वह बहुत जोर से बोला—"उठो बेटा ! कब तक सोते रहोगे ? आज सुबह तुमने मुझे खाना भी नहीं पहुंचाया ।"

साधु की आवाज मानों लड़के के कानों में पड़ गई । उसकी देह में थोड़ी हल-चल हुई । उसने करवट बदली । फिर उठकर बैठ गया । साधु ने उसके सिर पर हाथ फेरा । इसके बाद साधु लम्बे-लम्बे कदम भरता हुआ, अपनी कुटिया की तरफ चल पड़ा । यह चमत्कार देख, लोग चकित रह गए ।

सत्यदेव भागकर साधु के चरणों में गिर पड़ा । अपना माथा रगड़ने लगा । साधु ने उसे अपने हाथों से उठाया । और उसकी पीठ थपथपा दी । बहुत-से लोग साधु के पीछे-पीछे चल पड़े । किंतु साधु ने उन्हें लौट जाने को कहा । सभी भयभीत हो, रुक गए । साधु की सिद्धि की चर्चा होने लगी । अगले दिन सुबह से ही गांव वाले साधु की कुटिया के आगे इकट्ठा होने लगे । कुटिया का द्वार बंद था । सब लोग यही सोच रहे थे, साधु अंदर बैठा साधना कर रहा होगा । भय से किसी ने द्वार खटखटाने की कोशिश नहीं की । जब काफी देर तक द्वार नहीं खुला, तो एक युवक ने उसे थोड़ा खोल दिया । अंदर झांककर देखा । कुटिया खाली थी । साधु रातों-रात कहीं चला गया था ।

साधु के जाने पर सबको बड़ी निराशा हुई । उन्हें इस बात का पछतावा हो रहा था, साधु के वहां होते उन्होंने कभी उसकी सेवा की सोची भी नहीं । सत्यदेव ने ही सच्चे मन से सेवा की । उसे उसका फल मिल गया । ●
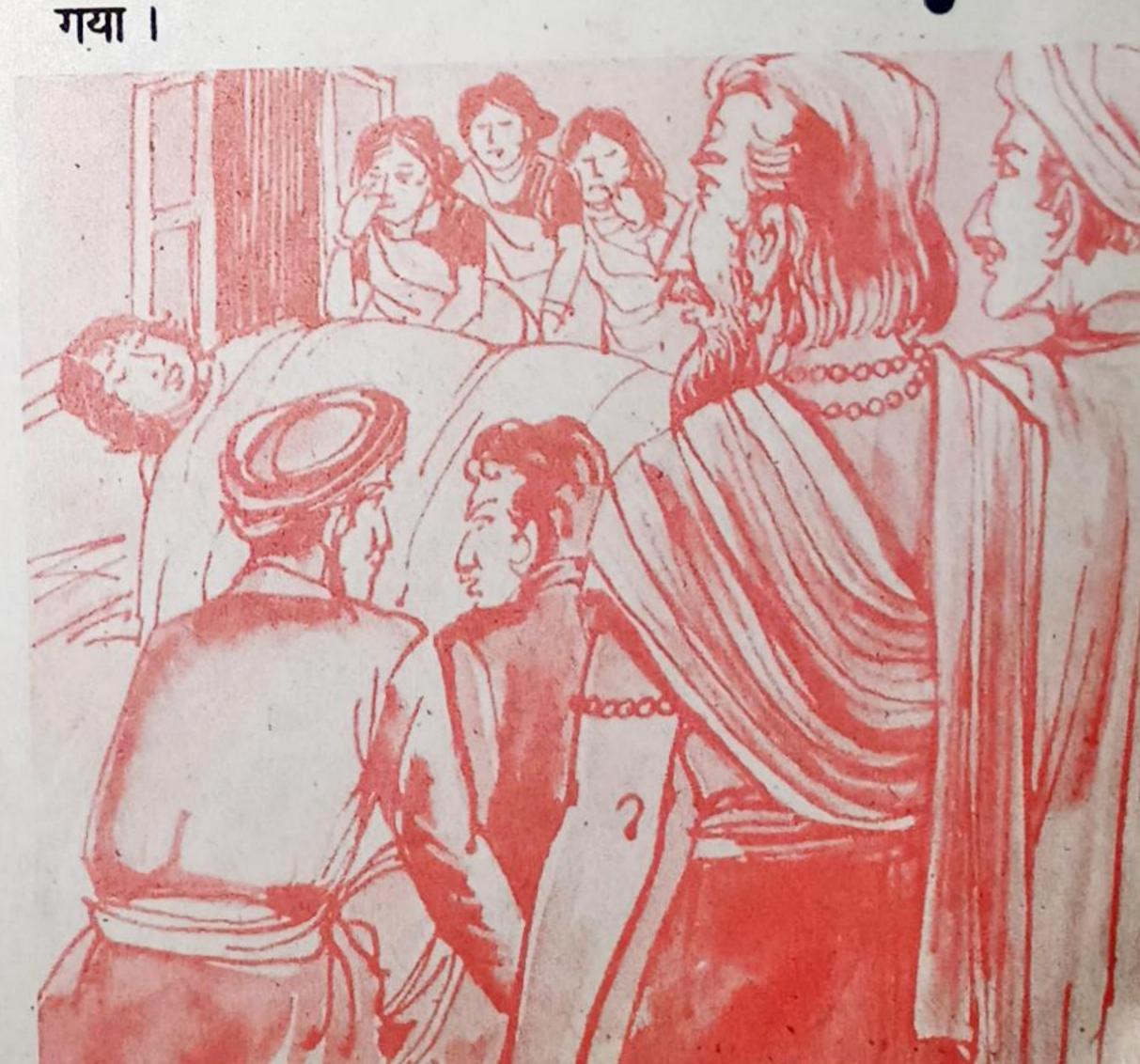
खजाना खोदो

— आकाश शर्मा

जम्मू के एक गांव में गागो नामक एक महा आलसी किसान रहता था। काम से भागता था, इसीलिए गरीब भी बहुत था। था भी संसार में अकेला। जब कभी उसकी शादी की बात चलती, तो लड़की वाले उसे देखकर मुंह मोड़ लेते। उसके पास खाने-खिलाने के लिए कुछ था नहीं, अपनी लड़की को भूखों मारने के लिए भला कौन उसके पल्ले बांधता।

गागो सुबह गांव में रोटी-सब्जी मांगकर पेट भरता। भूख मिट जाती, तो गांव से बाहर एक ऊंचे टीले पर पीपल के पेड़ के नीचे जा बैठता। उस टीले के नीचे ग्राम देवता का खजाना दबा हुआ था।

गागो जब भी सोता, उसे सुहावने सपने आते। सपनों में वह अपने आपको राजसी सुखों में डूबा पाता। लेकिन नींद टूटती, तो भूख उसे सता रही होती। गरीबी का अहसास उसे सपनों की सचाई बताने लगता। लेकिन सुहावने सपने देखना उसकी आदत बन गई थी।

टीले के खजाने की रक्षा एक नाग और नागिन करते थे। गागो को देखकर वे दोनों अब चौकसी से पहरा देते थे, क्योंकि वे जानते थे, आदमी हमेशा धन-दौलत की ताक में रहता है।

नाग ने नागिन से कहा—"कहो तो, इसे डंसकर इसका काम तमाम कर ही देता हूं!"

नागिन बोली—"अभी इसकी आयु शेष है। इसलिए इसे डंसकर हम पाप के भागी क्यों बनें?"

"मगर यह आदमी रोज-रोज यहां आता है। जरूर इसके मन में कुछ खोट होगा।"—नाग ने कहा।

नागिन बोली—"नहीं, यह आलसी आदमी है। दिन भर सपने देखता है। शाम को मंदिर का प्रसाद चुराकर पेट भर लेता है। फिर झोपड़ी में जाकर सो जाता है।" यह जानकर नाग निश्चिंत हो गया।

एक रात गागो को सपने में मंदिर के देवता के दर्शन हुए। देवता ने कहा—"तू हर रोज मेरा प्रसाद चोरी करता है। काम-धाम क्यों नहीं करता?"

गागो बोला—"काम कहां करूं? साहूकार के खेतों में काम करके मैं सात जन्म भी अमीर नहीं बन पाऊंगा।"

"तो तुम बैठे-ठाले अमीर बनना चाहते हो?"—देवता ने व्यंग्य किया।

गागो बोला—"आप कृपालु हों, तो यह बात कठिन नहीं।"

उसके भोलेपन को देख, देवता को उस पर दया आ गई। बोले—"तुम दिन भर जिस पहाड़ी पर सोये रहते हो, कल सुबह वहां काले मुर्गे को कुछ देर उल्टा लटकाकर देवता की पूजा करना। फिर पीपल के नीचे से टीले को खोदना। तुम्हारे कष्ट मिट जाएंगे।"

सुबह गागो जगा, तो सपने के बारे में सोचकर उसे अचंभा हुआ। 'खाली खोपड़ी में सपने की बात याद आती हैं'—उसने सोचा। वह दोपहर को टीले पर फिर सोने के लिए चला गया। वहां दोबारा वही सपना आया। वह बड़बड़ाता हुआ उठ बैठा। बुदबुदाने लगा—'अभी कहीं से काला मुर्गा लाकर इस टीले की खुदाई करता हूं।'

नाग और नागिन ने यह बात सुनी, तो उन्होंने झट जाकर ग्राम देवता को बताया।

उधर गागो गांव के साहूकार के बाड़े से काला मुर्गा चुरा लाया। मगर टीले पर पहुंच, उसे याद आया, वह लटकाने के लिए रस्सी तो लाया नहीं। मुर्गे को बगल में दबाए, वह अपनी झोपड़ी में रस्सी लेने

चला । पीछे से आवाज आई—"गागो, रुक जा !"

उसने मुड़कर देखा, तो एक अदभुत व्यक्ति खड़ा था । गागो चकित होकर उसे देखने लगा । वह ग्राम देवता थे । मगर गागो ने पहचाना नहीं । देवता ने कहा—"क्या तुम टीले को खोदना चाहते हो ?"

गागो बोला—"तुम कौन हो ?"

—"मैं इस स्थान का देवता हूं ।"

गागो कहने लगा—"लेकिन मैं तो अमीर बनने के लिए यहां से खजाना लेना चाहता हूं ।"

"मैं तुम्हारी मनचाही इच्छा पूरी कर दूंगा । बोलो, तुम क्या चाहते हो ?"—देवता ने पूछा ।

"मुझे ऐसा वरदान दीजिए, जिससे मेरे आंगन में पोते-दोहते खेलें । मेरी घर वाली लस्सी से मक्खन निकाले । मैं आंगन में चारपाई पर बैठा हुक्का पिऊं ।"—गागो बोला ।

देवता ने तथास्तु कहा और अंतर्धान हो गए । गागो जब टीले से घर की ओर चला, तो जंगल से एक सफेद गाय उसके साथ-साथ उसके घर चली आई । गागो ने एक खूंटा गाड़कर उसे बांध लिया । सारे गांव में चर्चा होने लगी, गागो की गाय बिना बछड़े के दूध देती है ।

उसी रात साहूकार की बेटी को बड़े जोर का सिर दर्द उठा । वैद्य ने उसे सफेद रंग की गाय का दूध पिलाने को कहा । गांव में गागो के सिवा सफेद गाय किसी के पास न थी । साहूकार के नौकर दौड़े-दौड़े उससे दूध ले आए । दूध पीते ही लड़की भली-चंगी हो गई । लेकिन अब हर शाम उसे दर्द होने लगता । साहूकार इससे परेशान हो उठा । अब उस लड़की से कोई युवक शादी के लिए भी तैयार नहीं था । साहूकार को दूर की सूझी । उसने गागो से अपनी बेटी का ब्याह कर दिया । वह रोज सफेद गाय का दूध पीने लगी । इससे उसका सिर दर्द पूरी तरह दूर हो गया ।

जबसे गाय आई । गागो की काया पलटने लगी । अब उसके घर कई गाय-भैंसें थीं । बाल-बच्चे आंगन में खेलने लगे थे । नौकर-चाकर भी आ गए । झोपड़ी की जगह सुंदर घर बन गया । उसके दिन सुख से बीतने लगे ।

एक दिन गागो को विचार आया, क्यों न टीले पर पीपल के नीचे खोदकर खजाना भी ढूंढ़ निकालूं । खजाना मिल गया, तो मैं बहुत अमीर बन जाऊंगा । जैसे ही वह बाहर निकला, गाय रंभाने लगी । वह खूंटा तोड़कर भागने लगी ।

गागो ने देवता के वरदान की बात पत्नी को बता दी थी । गाय को भागती देख, पत्नी डर गई । गागो से बोली—"रुको, लालच मत करो । देवता नाराज हो जाएंगे । गाय भागने का मतलब समझो ।"

गागो ने कुछ परवाह न की । वह घर से बाहर निकल आया । हाथ में कुदाल उठा लिया । तभी घर की दीवारें हिलने लगीं । पत्नी भागकर बाहर आई । गागो को रोका । घर को हिलता देख, गागो सहम गया । उसे भी लगा, वह गलत काम करने जा रहा है । वह भागती गाय को पकड़ने दौड़ा ।

तभी ग्राम देवता आए । गागो से बोले—"तुमने वचन तोड़ा । इसकी सजा तुम्हें मिलेगी ।"

"नहीं, मुझे क्षमा करो । मैं खजाना लेने नहीं जाऊंगा ।"—गागो ने हाथ जोड़कर कहा—"मुझे गाय वापस दे दो ।"

—"अब गाय वापस तभी आएगी, जब तुम फिर से मेरी बात मानने की प्रतिज्ञा लो ।"

—"ठीक है, मैं तैयार हूं ।"

"तुम्हें निठल्ला नहीं बैठना होगा । काम करना होगा, तभी गाय आएगी ।"—देवता ने समझाया ।

गागो ने बात मान ली । गाय वापस आ गई । फिर मेहनत से उसने अपनी जिंदगी संवारनी शुरू कर दी । कुछ ही दिन में वह अमीर बन गया । वह समझ गया, मेहनत का खजाना ही सच्चा सुख देता है ।●

उपहार

सोया था कल मैं लिहाफ में
जाड़ा था कुछ ज्यादा,
घूम रहा था स्वप्न लोक में
था परियों से वायदा।
कहा परी ने, तेरे घर पर
मुन्ने मैं आई हूं,
जन्म दिवस पर देने को मैं
उपहार हार लाई हूं।
देती तुम्हें वीरता, विद्या,
साहस, शौर्य निराला,
देश, जाति पर मिटने वाला
वह पौरुष मतवाला।
आओ, साथ दिखाऊं शोभा
नंदन वन की न्यारी,
झूम रही है डाल-डाल
हंसती फूलों की क्यारी।
तभी सुबह हो गई
रवि ने किरण-जाल बिखराया,
मां ने भी आ हाथ पकड़
धीरे से मुझे जगाया।
खुली आंख तो टूट गई थीं
स्वप्न हार की लड़ियां,
जाने किधर गया नंदन वन
किधर उड़ गईं परियां।

— चंद्रकला मिश्र
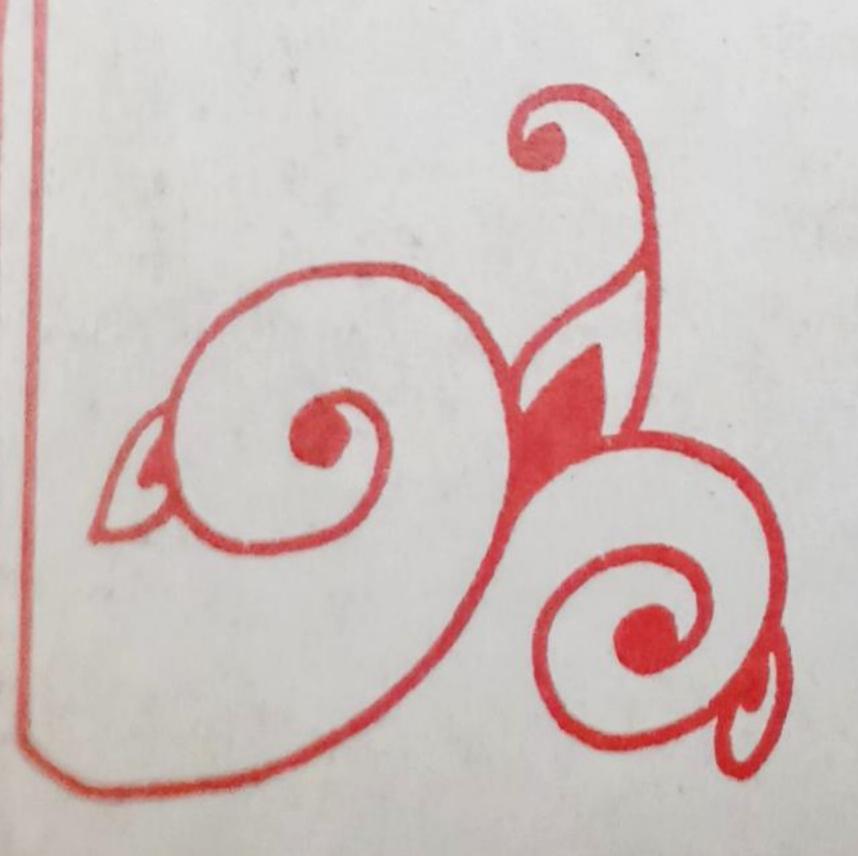
गौरैया

छोटी-सी लगती गौरैया
पर कितनी होशियार है।
उठ जाती है सुबह-सुबह यह
दूर-दूर तक उड़ जाती,
डरती नहीं किसी से भी यह
चुन-चुनकर दाने लाती।

सपने में भी सुना न हमने
गौरैया बीमार है।
इसका मतलब, आलस से यह
कभी नहीं रखती नाता,
कर लेती है उसी समय यह
काम सामने जो आता।
अड़चन आ जाए तो भी यह
नहीं मानती हार है।

छोटी है, लेकिन बुलंद है
देखो इसका हौसला,
तिनका-तिनका जोड़, बनाती
अपना सुंदर घोंसला।
मौसम देता इसे चुनौती
इसको सब स्वीकार है।

— इंदिरा परमार

गोल

गोल-गोल का चक्कर सारा
धरती गोल
सूरज गोल
चंदा गोल
जीरो गोल
मतलब एक समझ यह आया
इस गोले ने जग भरमाया।
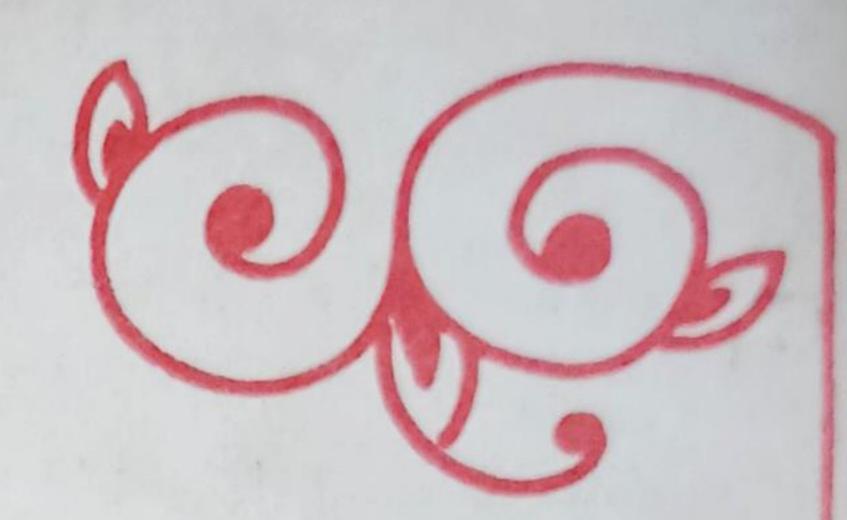
किताबें

अच्छी-अच्छी भली किताबें,
हैं मिसरी की डली किताबें।

नव उमंग से भर उठता मन,
हैं गुलाब की कली किताबें।

भूले-बिसरे पल-छिन में तो,
बस ! यादों की गली किताबें

महका देतीं मह-मह हमको,
हैं खुशबू की फली किताबें।

— रमेशचंद्र पंत

कपड़ा बिगड़ा

चंदा ने पाजामा सिलवाया
मगर नहीं वह बनने पाया।
नाप कभी बढ़ जाता उसका
नाप कभी घट जाता उसका
कपड़ा सारा बिगड़ा उसका
चंदा ने डांटा-फटकारा,
दर्जी बेचारा घबराया
कभी नहीं फिर कुछ सिल पाया।

—डा. कामिनी भटनागर

मोम का गुड्डा

—डा. मुजफ्फर हनफी

मेरे बड़े भाई इंजीनियरिंग की डिग्री लेकर इंग्लैंड से लौटे, तो मेरे लिए मोम का एक गुड्डा लेकर आए। गुड्डा क्या था, लगता था मुझसे उम्र में कुछ ही वर्ष छोटा है। मेरी लम्बाई थी पांच फुट और गुड्डे की लम्बाई साढ़े चार फुट। गुड्डे को मैंने कमरे के कोने में रख दिया था। अक्सर मैं इसे अपने कपड़े पहना देता था। साथ ही उसके सिर पर टोप भी रख देता था। इस तरह उसे सजाकर, जब मैं दूर से देखता, तो वह एक सजीला नौजवान नजर आता था।

मैं अपने विद्यालय में कवि सम्मेलनों, और नाटकों में भाग लिया करता था। नाटकों का रिहर्सल, पढ़ाई तथा खाली समय में आराम भी मैं उसी कमरे में किया करता था।

यह घटना मेरी पंद्रहवीं सालगिरह की है। मेरा जन्म एक अप्रैल को हुआ था, इसलिए सालगिरह हमेशा गर्मी में ही होती थी। मगर इस बार मुझे बिल्कुल गर्मी महसूस नहीं हुई। इसका कारण था, सालगिरह पर मिले उपहार। इन उपहारों में मुझे बिस्कुट, चाकलेट, खिलौने, मिठाइयां, पत्र-पत्रिकाएं और कपड़े इतने अधिक मिले थे कि मेरा पूरा कमरा उपहारों से भर गया। मैं उन्हें देख-देखकर फूला नहीं समा रहा था। उन दिनों मैं पूरे दिन अपने कमरे में बैठा, किस्से-कहानियां पढ़ता रहता था। सिर्फ शाम को पांच बजे थोड़ी देर के लिए क्रिकेट खेलने बाहर जाता था।

एक दिन मैं अपने उपहारों की सूची लेकर सब चीजों का निरीक्षण करने लगा। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब मैंने अपने उपहारों में से बिस्कुट के डिब्बे, चाकलेट, पेन आदि गायब पाए।

मैंने सोचा—'दिन भर मैं इसी कमरे में रहता हूं। कोई इन चीजों को चुराता कब है? शायद चोर तब आता होगा, जब मैं क्रिकेट खेलने जाता हूं। रात में चोरी का सवाल ही नहीं। घर के सब सदस्य साथ ही सोते हैं। चोर है कौन?' मैं बार-बार सोचने लगा-'सुहैल, फुजैल, इरफान, सबा और परवेज न जाने इनमें कौन मेरी चीजों पर हाथ साफ कर रहा है।'

उस दिन से मैंने कड़ी निगरानी शुरू कर दी। हर समय चौकन्ना रहता। बाहर भी जाता, तो ताला लगाकर जाता। ऐसा करने से दो-तीन दिन तक तो चीजें बची रहीं, मगर फिर एक-एक करके गायब होने लगीं। मैंने ताला बदल दिया। इसके बाद दो दिन तक चोरी नहीं हुई। फिर होने लगी। जिस दिन मैं ताला बदल देता, दो-तीन दिन तक चोरी रुक जाती। उन दो-तीन दिनों में चोर ताले की दूसरी चाबी तैयार करा लेता था।

मैंने सोचा—'अगर चोरी की यही रफ्तार रही, तो जल्दी ही मेरे उपहार ठिकाने लग जाएंगे। अब चोर को जैसे भी हो पकड़ना पड़ेगा।' यह सोचकर एक शाम मैं क्रिकेट के मैदान से जल्दी ही वापस आ गया। मैंने देखा, मेरे कमरे की सांकल खुली हुई है। ताला कुंडे पर लटक रहा है। दरवाजा भिड़ा हुआ है। अंदर से खटपट की आवाज आ रही है। आव देखा

न ताव मैंने फौरन सांकल चढ़ा, उस पर ताला लगा दिया ।

अब तक मैं चोर को नहीं देख पाया था । लेकिन जल्दी ही मुझे इस बात का पता चल गया । शाम को जब सब लोग खाने की मेज पर एकत्रित हुए, तो फुजैल की कुर्सी खाली थी । जब भाई साहब ने फुजैल के बारे में पूछा, तो मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया । यह भी कि "उनके लाड़ले को चोरी की सजा देने के लिए, मैंने कमरे में बंद कर दिया है । सुबह से पहले मैं उसे कमरे से बाहर निकालूंगा भी नहीं ।" भाई साहब मुसकरा कर चुपचाप खाना खाने लगे ।

उस रात मैं ठीक से सो भी नहीं सका । सुबह मैं, भाई साहब और बच्चे कमरे की तरफ गए । ताला खोलने पर हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, हमने कमरे को खाली पाया। फुजैल का कहीं अता-पता नहीं था । मेज, कुर्सियां, चारपाई यहां तक कि बक्स के अंदर भी फुजैल कहीं नजर नहीं आया ।

"क्या तुमने उसे कमरे के अंदर देखा था ?"—भाई साहब ने पूछा। मैंने सिर झुका लिया । वास्तव में मैंने उसे कमरे के अंदर देखा ही नहीं था ।

कुछ देर बाद ऐसा लगा, जैसे घर में भूचाल आ गया हो । घर की औरतें जोर-जोर से रोने लगीं । आदमी परेशान हो उठे । नौकर-चाकर इधर-उधर फुजैल को ढूंढ़ने लगे । पुलिस स्टेशन खबर की गई । टेलिफोन किए गए । पूरा शहर छान मारा, मगर फुजैल का कहीं पता न चला । न जाने वह कहां गायब हो गया था !

रो-रोकर भाभी और मां का बुरा हाल था। भाई साहब अलग परेशान थे । मेरा कमरा बंद था । मैंने उसे खोलकर फिर से तलाशी ली। लेकिन फुजैल कोई सुई तो था नहीं, जो दीख न पाए ।

एकाएक मेरी नजर बिस्कुट के खाली डिब्बों और मिठाई की खाली टोकरी पर पड़ी । मुझे अच्छी तरह याद था, तीन दिन पहले बिस्कुट के डिब्बे और मिठाई की टोकरी भरी हुई थी । बिस्तर पर भी सलवटें थीं । लगा, रात भर जरूर कोई वहां सोया है । मैंने और भाई साहब ने मिलकर फिर फुजैल को ढूंढा, मगर निराशा ही हाथ लगी । कमरे से बाहर निकलते हुए मैंने भाई साहब से कहा—"मुझे पूरा यकीन है कि फुजैल यहीं कहीं छिपा हुआ है ।"

वह बोले—"तुम थोड़ी-सी घास लेकर यहां आओ ।"

मैंने ऐसा ही किया । भाई साहब ने कमरे से कुछ दूर घास डालकर उसमें आग लगा दी। फिर सब जोर-जोर से चिल्लाने लगे—'घर में आग लग गई । घर में आग लग गई । भागो-भागो ।' पूरा मकान इन्हीं आवाजों से गूंज उठा । तभी हमने कमरे में किसी के कदमों की आहट सुनी । फिर धड़ाम से दरवाजा खुला। मोम का गुड्डा हम सबके बीच में आकर खड़ा हो गया ।

थोड़ी देर बाद फुजैल मोम के गुड्डे का सिर हाथ में लिए, उसमें छिपे रहने की कहानी सुना रहा था । मैं मोमी गुड्डे की बर्बादी पर अपना सिर पीट रहा था । उसका सिर अपने मुंह पर रखकर तीन दिन तक हमें फुजैल परेशान करता रहा था ।

(प्रस्तुत : एम. फीरोज जामी)

पढ़ो राजा

—विश्वनाथ गुप्त

एक राजा था। उसके पास किसी चीज की कमी न थी। वह आलीशान महल में रहता था। छत्तीस प्रकार के भोजन करता था। एक से एक बढ़िया वस्त्र पहनना उसका शौक था। लेकिन वह था परले सिरे का कंजूस और स्वार्थी। सिर्फ अपने बारे में ही सोचता था। प्रजा की भलाई के बारे में सोचना, उसने छोड़ दिया था। नतीजा यह हुआ, प्रजा का हाल बेहाल हो गया।

नगर से दूर, जंगल में एक महात्मा रहते थे। कभी-कभी वह घूमते-फिरते नगर में आ जाते। लोगों का हाल-चाल पूछते। फिर चले जाते थे। अपना अधिकांश समय वह भगवान के भजन में ही बिताते थे। इधर काफ़ी समय से वह नगर में नहीं आए थे।

एक दिन महात्मा जी ध्यान लगाए बैठे थे। तभी उनको ऐसा महसूस हुआ, नगर की प्रजा उन्हें पुकार रही है। उनका ध्यान टूट गया। वह फौरन ही नगर की ओर चल पड़े।

नगर में पहुंचकर उन्होंने देखा, प्रजा बहुत दुखी है। यह देखकर उनका दिल पसीज उठा। उन्होंने लोगों से पूछा—"क्या बात है ? तुम्हारी ऐसी हालत क्यों है ? क्या राज्य में अकाल पड़ा है ?"

उत्तर मिला—"नहीं, अकाल तो नहीं पड़ा।"

—"फिर तुम्हारा यह हाल क्यों है ?"

महात्मा जी के प्रश्न के उत्तर में लोगों ने कहा—"राजा अपने सुखों में डूबा रहता है। प्रजा-पालन की ओर जरा भी ध्यान नहीं देता। अगर कोई दीन-दुखियारा उसके पास जाता भी है, तो वह उसे दुत्कार देता है। किसी की कोई मदद नहीं करता।"
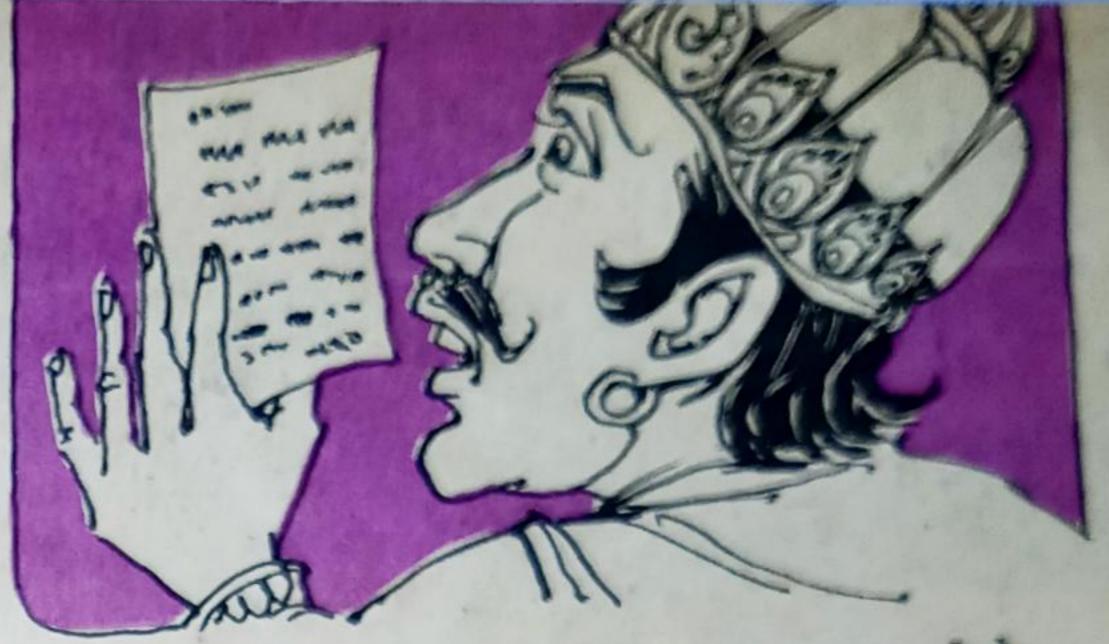
'यह तो बहुत बुरी बात है।'—महात्मा जी ने मन में सोचा। फिर बोले—"देखो, मैं राजा के पास जाता हूं। शायद मेरे समझाने पर वह सुधर जाए।" महात्मा जी की बात सुन, लोगों के मुरझाए चेहरों पर चमक आ गई। वे बोले—"अगर ऐसा हो जाए, तो हम आपका उपकार कभी नहीं भूलेंगे।"

महात्मा जी ने लोगों को ढाढ़स बंधाया। वह चल पड़े राजा के महल की ओर। राजमहल के द्वार पर पहुंचे, तो उनको देखकर, द्वारपाल ने शीश झुकाया। आने का कारण पूछा। महात्मा जी बोले—"मैं राजा से मिलने आया हूं। मेरे आने की खबर भिजवा दो।"

द्वारपाल ने राजा के पास खबर भिजवाई। राजा ने महात्मा जी को अंदर बुलवा लिया। आदर से बैठाया। पूछा—"कहिए, महाराज ! कैसे आना हुआ ?"

महात्मा जी ने कहा—"राजन्, आज वर्षों बाद मैं इस नगर में आया हूं। यहां आकर मैंने प्रजा का जो हाल देखा, उससे मेरा मन दुखी हो गया। ऐसा लगता है, आप प्रजा का बिल्कुल ध्यान नहीं रखते।"

सुनकर राजा ने कहा—"आप भी कैसी बातें कर रहे हैं महात्मा जी ! भला, मैं प्रजा का क्या ध्यान रखूंगा। मैं अपना काम करता हूं। प्रजा को अपना काम करना चाहिए। प्रजा अगर चाहे कि उसे बिना काम किए ही सारे सुख मिल जाएं, तो राजा के पास ऐसा कौन-सा जादू है ?"

राजा की बात सुनकर महात्मा जी बोले—"राजन्, प्रजा में सभी तरह के लोग होते हैं। आलसियों की मदद भले ही न करो, किंतु जो दुखी हैं, बेसहारा हैं, उनकी मदद जरूर करनी चाहिए।"

"ये सब फिजूल की बातें हैं। मेरे पास ऐसी बातें सुनने के लिए समय ही कहां है? आपको कोई और काम हो, तो बताइए।"—इतना कहकर राजा ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया।

महात्मा जी ने मन में सोचा—'यह राजा स्वार्थी ही नहीं, घमंडी भी है। यह इस तरह नहीं मानेगा।' वह बोले—"ठीक है, राजन्! मैं चलता हूं।" इतना कहकर महात्मा जी खड़े हुए और बाहर निकल गए।

दूसरे दिन सुबह राजा सोकर उठा। तभी सेवक ने एक चिट्ठी राजा को लाकर दी। चिट्ठी देते वक्त सेवक डर के मारे कांप रहा था। राजा ने सोचा—'सुबह-सुबह यह कहां से आ गई?' उसने खोलकर पढ़ा। लिखा था—'इस नगर में एक ऐसा राजा रहता है, जो घमंडी और स्वार्थी है। वह सिर्फ अपने बारे में ही सोचता है। प्रभु, उसे सद्बुद्धि दें।'

चिट्ठी पढ़कर राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा—"किसने लिखी है यह चिट्ठी? जाओ, उसे अभी पकड़कर लाओ।"

सेवक ने डरते-डरते कहा—"महाराज, यह कागज तो मैंने आज सुबह ही महल के दरवाजे पर लगा देखा था। जैसे ही मेरी नजर इस पर पड़ी, मैं इसे आपके पास ले आया।"

अब तो क्रोध से राजा का और बुरा हाल हो गया। बोला—"मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। मुझे आज ही पता लगना चाहिए, यह किसने लिखा है? अगर शाम तक इस बात का पता न लगाया गया, तो मैं सारे पहरेदारों को कालकोठरी में डलवा दूंगा।"

राजा की आज्ञा पा, सेवक वहां से चला गया। थोड़ी देर में यह खबर चारों तरफ फैल गई। जब मंत्री को इस बात की खबर मिली, तो वह दौड़ता हुआ महल में आया। उसने ध्यान से चिट्ठी को देखा। फिर बोला—" यह काम उन महात्मा जी का ही है।"

राजा बोला—"तुम्हारी बात ठीक लगती है। जाओ, उस महात्मा को पकड़ लाओ। उस साधु की यह हिम्मत!"

मंत्री चला गया। कुछ घंटे बाद महात्मा जी के साथ वापस लौटा। महात्मा जी के चेहरे पर शांति थी। राजा ने वह चिट्ठी दिखाते हुए पूछा—"क्यों, क्या यह चिट्ठी तुमने लिखी है?"

महात्मा जी ने निडरता से कहा— "हां, यह मैंने ही लिखी है।"

राजा कड़ककर बोला—'यह लिखने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

महात्मा जी ने कहा—"मैंने इसमें कोई गलत बात तो लिखी नहीं। कल आपको बहुत समझाया, लेकिन समझे ही नहीं। मैं यह लिखकर इसीलिए छोड़ गया, ताकि आप उसे पढ़ो और कुछ सोचो।"

साधु की बात सुन, राजा का पारा गरम हो गया। वह बोला—"क्या तुम्हें मौत का डर नहीं? तुम नहीं जानते, मैं तुम्हें सूली पर लटकवा सकता हूं।"

"आप सब कुछ करा सकते हैं राजन्! लेकिन मैंने यह पुर्जा लिखते समय इस बारे में कुछ भी नहीं सोचा। न मुझे इस बात की चिंता है। मेरा क्या होगा? मैं लिखते वक्त सिर्फ प्रजा की भलाई की बात

आओ कश्मीर चलें

कश्मीर की कारीगरी
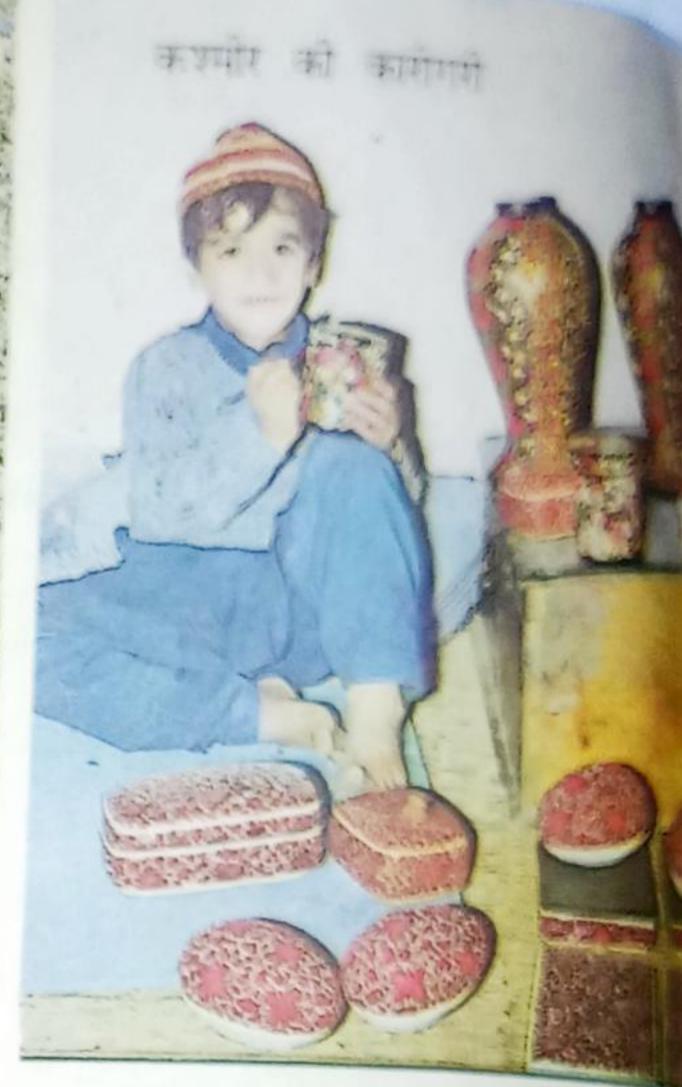
गुलाब, नरगिस, लाला, कवल, कुंगी (केसर की कली), युम्बंरजली (नरगिसी लड़की), हीमाल (चमेली की माला) और जूनी (चांदनी)--इसी तरह के नाम होते हैं कश्मीरी बच्चों के। श्रीनगर के पास पामपुर केसर के लिए मशहूर है। नवम्बर में फूल चुन लिए जाते हैं। फूल में छह तरियां होती हैं— तीन पीली, तीन गहरे संगतरी रंग की। असली केसर है संगतरी रंग की तरियां।

कभी महाराजा ललितादित्य और प्रवरसेन ने यहां राज्य किया। राज तरंगिणी का कवि कल्हण भी यहीं जन्मा। शालीमार और निशात बाग मुगल सम्राटों की याद दिलाते हैं। 'अगर दुनिया में है स्वर्ग कहीं पर तो यहीं पर, यहीं पर, यहीं पर।'

केसर के फूल लिए बालिका

झिलमिल करती नगीन झील

नेहरू बोटेनिकल गार्डन

चित्र : विद्याव्रत

बर्फ ढके पर्वतों के बीच सोनमर्ग

खीर भवानी का मंदिर
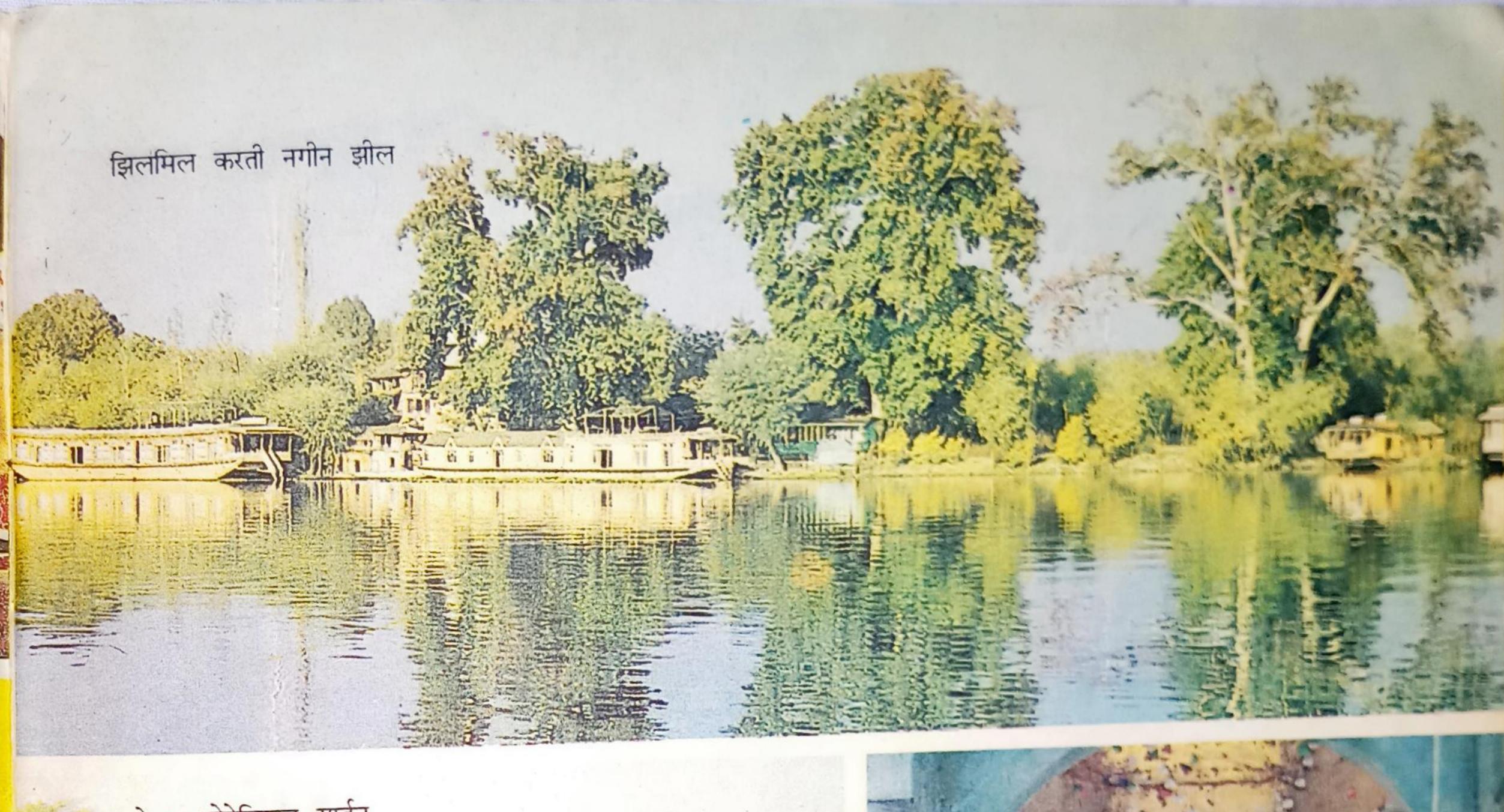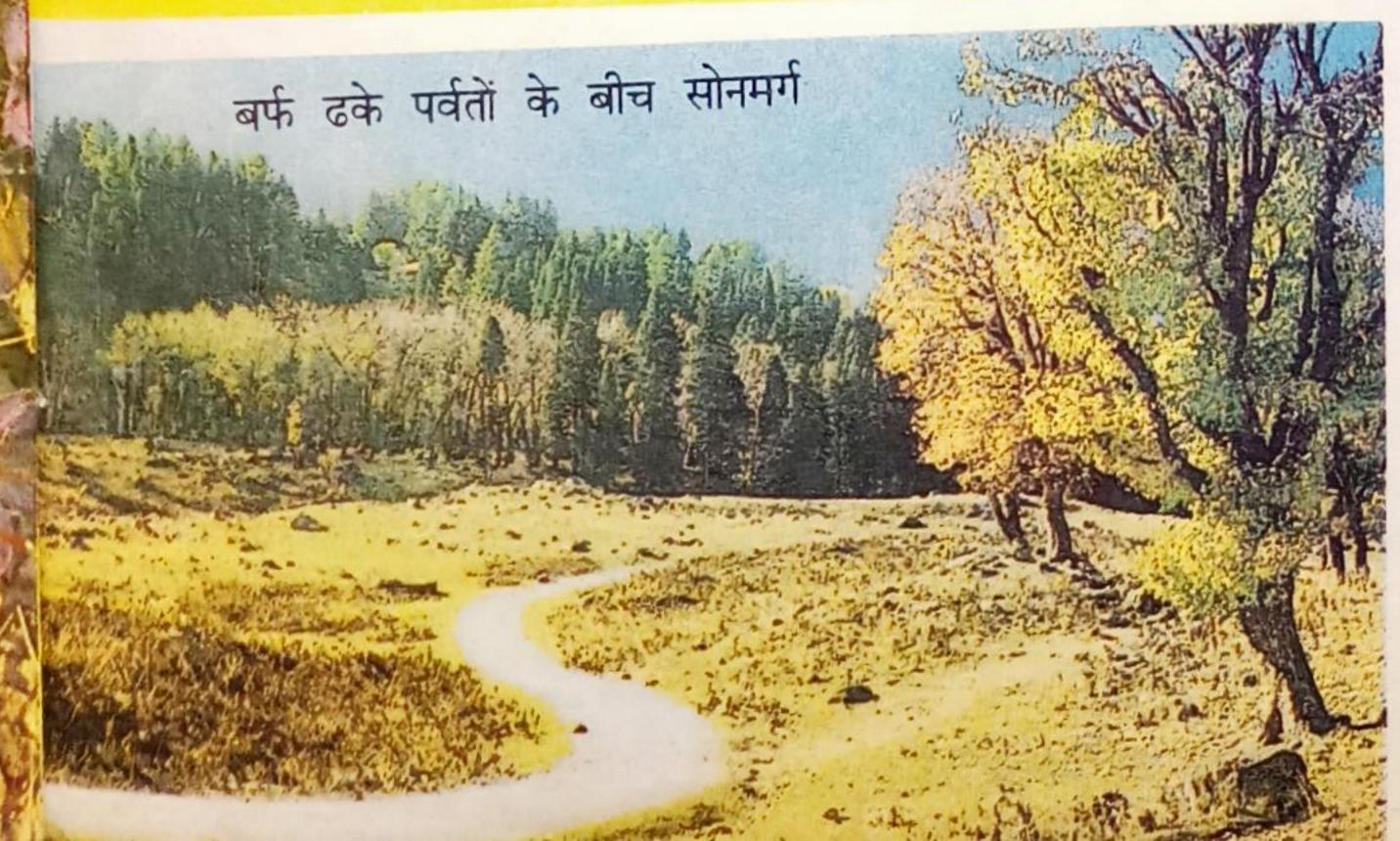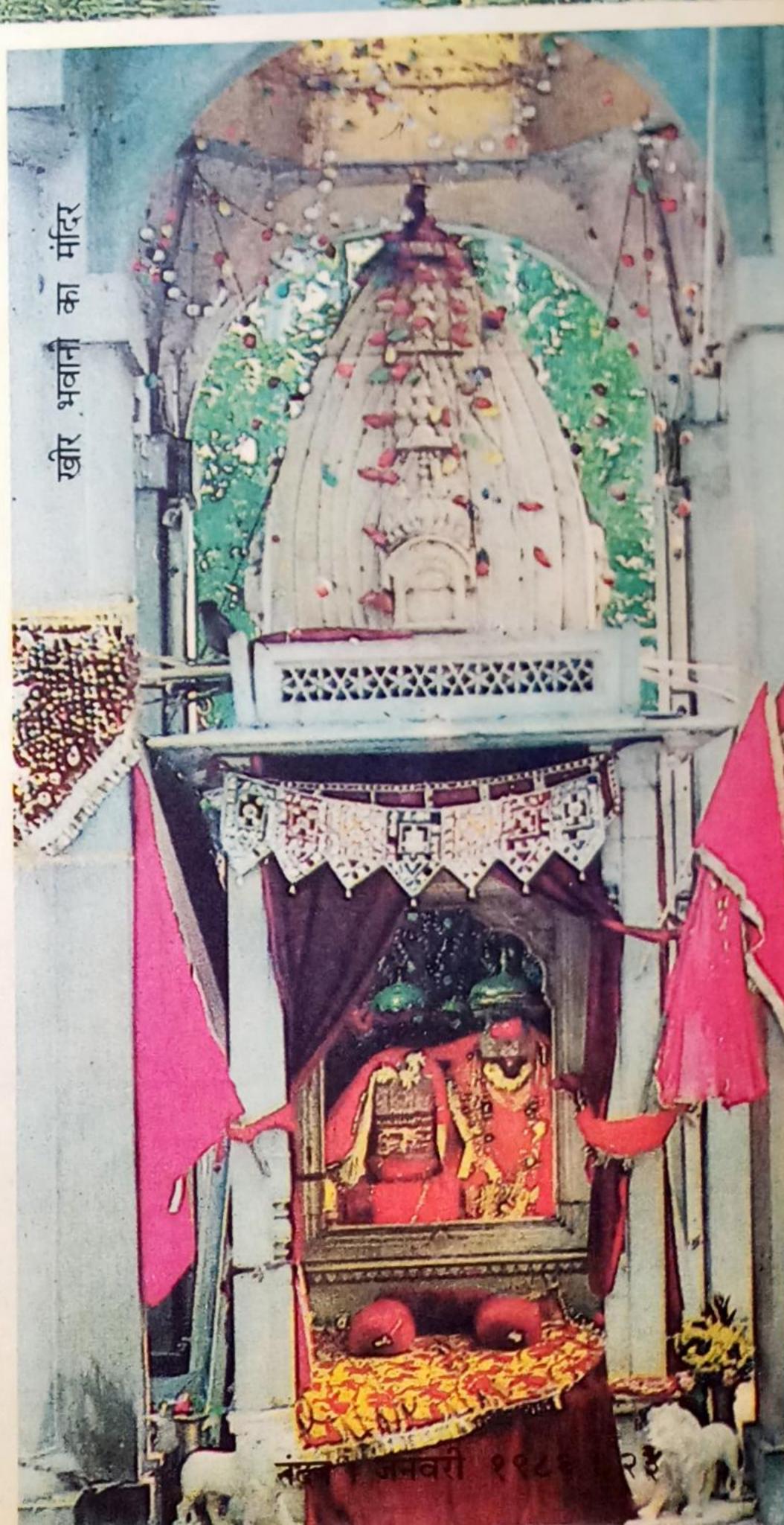
ही सोच रहा था।''

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं देखा था, जो अपने बारे में न सोच, दूसरों के बारे में ही सोचता हो। राजा सोचने लगा—'महात्मा जी में जरूर अद्‌भुत शक्ति है। शक्ति न होती, तो यह सूली से भय खाते ? लगता है, इन्हें दुनिया में किसी से भय नहीं। राजा से भी नहीं।'

राजा को सोच में डूबा देख, महात्मा जी मुसकरा उठे। 'जो राजा मेरी बात सुनने के लिए भी तैयार न था, वह अब गम्भीर है। लगता है, उसे अपनी गलती पर पश्चाताप हो रहा है।'— महात्मा जी मन ही मन कह रहे थे।

बात ठीक थी। राजा को अपनी भूल का अहसास हो गया था। उसने महात्मा जी से अपने कटु व्यवहार की क्षमा मांगते हुए कहा—''आज से मेरे द्वार प्रजा के लिए खुले हैं। अब मैं अपने सुख के लिए नहीं, प्रजा की खुशहाली के लिए काम करूंगा।''

अपने बदले हुए राजा को देख, वहां उपस्थित प्रजा राजा का जय-जयकार कर उठी। इनमें महात्मा जी नहीं थे, वह अपना काम पूरा करके लौट गए थे।

मेहमान

— सुनीता कट्टी
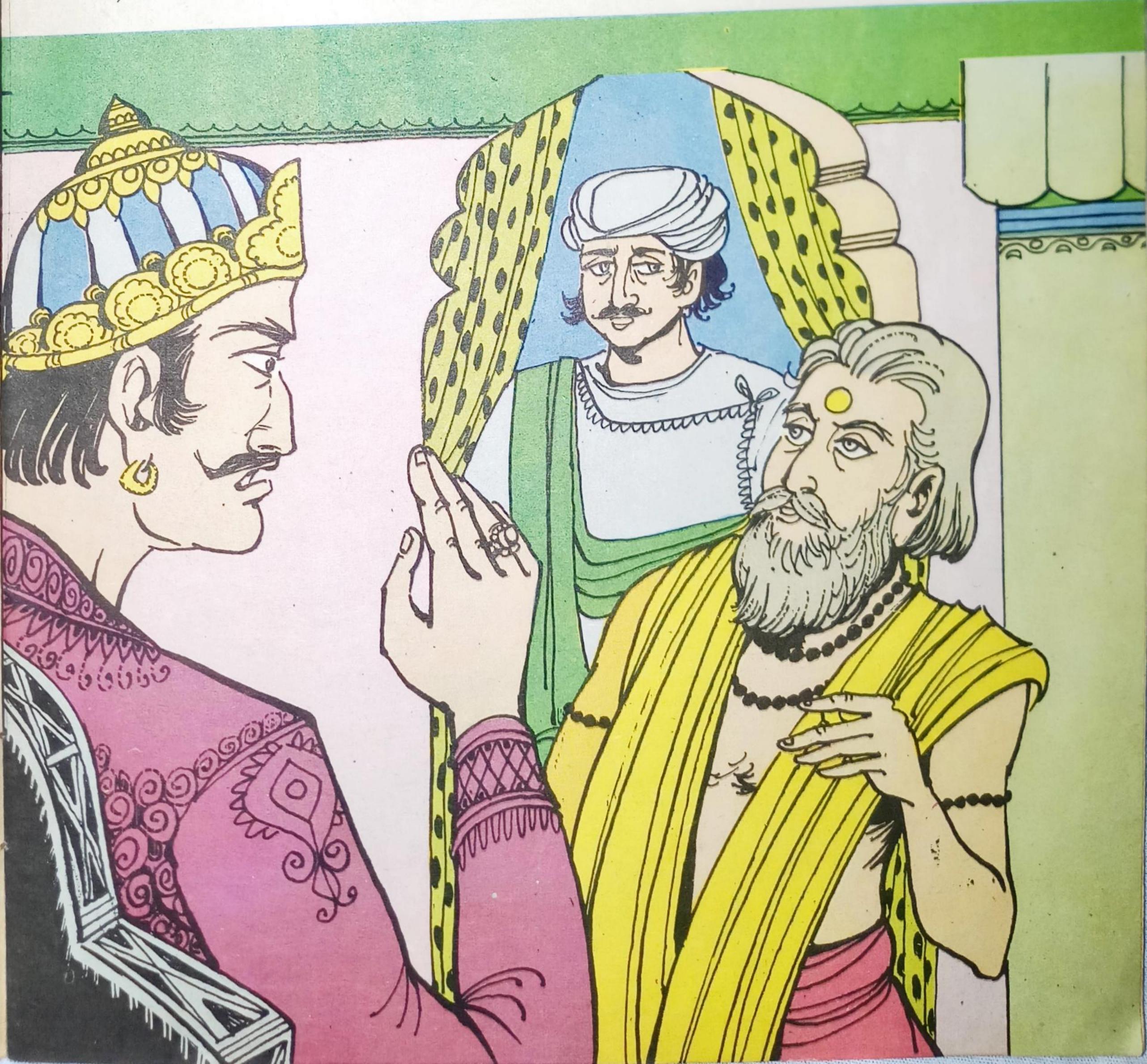
चेकोस्लोवाकिया के राजा थे जोसेफ । जोसेफ उदार एवं न्यायी राजा थे । प्रजा के हित के लिए सदा तत्पर रहते थे । प्रजा सुख-चैन से थी । एक बार उनके मन में विचार आया— 'मैं यहां दरबार में बैठा राजकाज चलाता हूं । अधिकारियों का कहा सच मान लेता हूं । पर कभी-कभार प्रजा के सुख-दुःख मुझे अपनी आंखों से भी देखने चाहिएं । शायद अनजाने में मुझसे कोई भूल हो जाती हो ।'

अगले दिन जोसेफ मुंह अंधेरे ही मुसाफिर के वेश में घूमने चल दिए । देहाती लिबास । हाथ में लाठी और कंधे पर थैली । दिन भर पैदल गांव-गांव, खेत-खलिहानों में घूमते रहे । अच्छे-बुरे, दयालु, उद्दंड कई प्रकार के लोग मिले जोसेफ को ।

गांव में घूम-फिरकर वह किसी घने वृक्ष के नीचे बैठ जाते । थैले में से एक बही निकालते और उसमें कई तरह की बातें दर्ज करते ।

एक शाम की बात है, जोसेफ बेहद थक गए थे । आकाश में पहला तारा चमका, तो सामने नजर आई एक साधारण झोंपड़ी । छप्पर में से धुएं की लकीर उठ रही थी ।

जोसेफ ने दरवाजा खटखटाया । कुछ देर तक कोई आहट न सुनाई दी । फिर एक बूढ़े ने दरवाजा खोला । आंखों पर जोर डालते हुए पूछा—"कौन हो भैया ? क्या चाहिए तुम्हें ?"

"मुसाफिर हूं बाबा ! भूख और थकान से बुरा हाल है । क्या रात भर के लिए यहां टिक सकता हूं ?" —जोसेफ ने कहा ।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं ? आओ, अंदर आओ ।"—बूढ़े ने प्यार से उन्हें अंदर बुलाया । फिर जोसेफ को घर की छोटी-सी रसोई में ले गया । रसोई में सन-जैसे सफेद बालों वाली एक बुढ़िया चूल्हे पर झुककर कुछ भून रही थी ।

"कौन है जी ?"—बिना उनकी ओर देखे, बुढ़िया ने पूछा ।

—"मुसाफिर है । क्या हम अपने मेहमान को

खाने के लिए कुछ दे सकते हैं ?''

इस बार बुढ़िया ने उनकी तरफ देखा। झुर्रियों में से हंसी बिखेरती हुई बोली—''हां, हां, जरूर। लेकिन सिर्फ इन आलुओं से ही मेहमान नवाजी करनी पड़ेगी। घर में और तो कुछ है नहीं. . . अब पहले जैसी बात कहां।''

''सचमुच दिन बहुत बदल गए हैं। मैं मोची का काम करता हूं। मेरी बुढ़िया भी आलू बेचकर कुछ कमा लेती है। बस, किसी तरह गुजारा चलता है।''—बूढ़ा बोला।

''क्यों ? आपके कोई बाल-बच्चा नहीं है ?''—राजा ने हैरत से पूछा।

''है क्यों नहीं ! हैं। तीन लम्बे-तगड़े, बहादुर बेटे हैं मेरे। पर अभी हमारे राजा को उनकी जरूरत है। तीनों फौज में हैं। एक्र से बढ़कर एक हैं मेरे लाल। एक है घुड़सवार सेना में, दूसरा तोपखाने में और तीसरा है शस्त्रागार में। पर कई साल से उनकी कोई खबर नहीं मिली ''—कहते हुए बूढ़े का स्वर उदास हो गया।

—''क्यों, कभी चिट्ठी-पत्री नहीं डालते ?''

''अगर डालते भी, तो क्या फर्क़ पड़ता ! हम दोनों निपट गंवार हैं। पर कुछ भी हो, हमारे बेटे हैं बड़े होनहार। राजा की फौज में भी मुस्तैदी से काम कर रहे होंगे।''—बूढ़े ने कहा।

''चलिए जी, खाना तैयार है। ठंडा हो जाएगा।''—बुढ़िया कमर सीधी करती हुई बोली। राजा और बूढ़ा खाने बैठे। खाना क्या था, सिर्फ नमक लगे हुए उबले आलू। पैदल घूमने के कारण राजा को इतनी भूख लगी थी कि आलू उसे रोज के जायकेदार खाने से कई गुना अच्छे लगे।

''पता नहीं, मेहमान को खाना अच्छा भी लग रहा है या नहीं !''—बुढ़िया ने सकुचाते हुए कहा। राजा बोल पड़े—''क्या बात करती हैं मां जी ! ऐसा स्वादिष्ट खाना जिंदगी में पहली बार खा रहा हूं। बहुत स्वाद है इन आलुओं में।''

खा-पी चुकने के बाद राजा ने थैली और लाठी उठाई। बूढ़े-बुढ़िया को धन्यवाद देकर चलने लगे। तभी बूढ़ा खांसते हुए बोला —''बेटा, जाड़े की इस अंधियारी रात में कहां जा रहे हो ? दो फालतू कम्बल हैं हमारे पास। इस अंगीठी के पास लेट जाना। सुबह अपनी राह चल देना।''

और राजा जोसेफ उस गरीब की झोंपड़ी में पसर गए। ऊबड़-खाबड़ जमीन। बिछौने के लिए फटा-पुराना कम्बल और ओढ़ने के लिए वैसा ही एक बदरंग कम्बल। पर बूढ़े-बुढ़िया के सत्कार और स्नेह से वह संतुष्ट थे। लेटते ही नींद आ गई।

सुबह भी राजा को बड़े प्यार से नाश्ता कराया गया। राजा ने पूछा— ''बूढ़े बाबा, नाम क्या है आपका ? आपने मुझ पर बड़ा अहसान किया है।''

''अरे, काहे का एहसान ! मुझे माइकेल ब्रेडा कहते हैं और यह है मार्थाल ब्रेडा।''—बूढ़े की आंखें गीली हो आई थीं।

''अच्छा, आपके लायक बेटों के नाम क्या हैं ?''

—''विंसेल, कार्ल और मार्टिन !''

थैली में से बही निकालकर फर्राटेदार अक्षरों में राजा ने तीनों के नाम दर्ज किए। बुढ़िया कुतूहल से

राजा की बही की तरफ देख रही थी।

"वाह, ! मेरे बेटों के नाम बही पर भी कितने फब रहे हैं ? पर मेरे लाड़ले ही जब इतनी दूर जा बैठे हैं, तो इस सबका क्या फायदा ? बरसों गुजर गए। उन्हें देखने को हम तरस गए।"

"शायद कुछ सालों में आ जाएंगे।"— राजा ने हमदर्दी जताते हुए कहा।

"आ तो जाएंगे। पर तब तक तो बूढ़े मां-बाप कब्र में पहुंच चुके होंगे।"—बूढ़ा उदास और बुझी आवाज में बोला।

—"तो क्या आपको बेटों का राजा की फौज में काम करना अच्छा नहीं लगता ?"

"नहीं, नहीं ! राजा से हमें कोई शिकायत नहीं बेटा ! सुना है, राजा सचमुच बहुत अच्छा आदमी है। जरूरत होगी, तभी तो उसने हमारे बेटों को फौज में भर्ती कर लिया। पर बेटे, ये बुढ़ापे के दिन भारी पड़ रहे हैं उनके बिना। राजा को हमारे दुखों का पता कैसे चलेगा भला ?"—बुढ़िया सोचती हुई बोली।

"अगर हो जाता, तो बेहतर था।"—राजा ने आह भरकर कहा। फिर उनका शुक्रिया अदा कर, राजा वहां से चल पड़े।

दो-तीन दिन पूरे मुल्क में घूम-फिरकर राजा जोसेफ राजधानी लौट आए। वहां पहुंचते ही उन्होंने, माइकेल ब्रेडा के बेटों को एक के बाद एक घर वापस भेजा। छोटे मार्टिन के साथ राजा ने एक थैली में सोने की सौ मोहरें भी भेजीं।

बेटों की वापसी से माइकेल और मार्था ब्रेडा की झोंपड़ी हर्षोल्लास से भर गई। मार्टिन के हाथ की थैली देख, पिता ने मजाक में कहा—"थैली में क्या है बेटा ? कहीं मां-बाप के लिए हीरे-जवाहरात तो नहीं ले आया ?"

मार्टिन बोला—"मां, हीरे-जवाहरात नहीं। पर हां, सौ मुहरें जरूर हैं, खालिस सोने की। खुद राजा जोसेफ ने भेजी हैं। यह भी कहला भेजा है कि स्वादिष्ट भोजन, नाश्ते तथा आरामदेह बिस्तर का लाख-लाख शुक्रिया।"

"तो क्या वह मुसाफिर राजा जोसेफ था ? हाय ! कैसा फीका, बेस्वाद खाना दिया था मैंने। बिस्तर भी फटा-पुराना। राजा जोसेफ का मन सचमुच ही प्यार का सागर है। उस भलेमानुस को मैं कुछ भी तो नहीं दे पाई।"—बुढ़िया दुखी हो उठी।

"पर उसी ने कहा था कि ऐसा स्वादिष्ट खाना उसने जिंदगी में पहली बार खाया था।"—बूढ़ा कुछ याद करता हुआ बोला। तभी उसने देखा, घर की सबसे बड़ी टोकरी में बुढ़िया चुन-चुनकर आलू रख रही है। कुछ ही मिनटों में टोकरी आलूओं से भर गई। और भारी टोकरी को सिर पर उठा, बुढ़िया राजधानी की तरफ चल भी दी।

राजमहल के पहरेदार ने रोका, तो बुढ़िया ने सिर से टोकरी उतारकर कहा—"राजा जोसेफ से मिलना चाहती हूं। अभी, इसी क्षण।"

"तुमसे वह अभी मिलेंगे, इसमें संदेह है मुझे।"—पहरेदार ने उसे घूरते हुए कहा।

बुढ़िया ने हंसकर कहा—"मिलेंगे, जरूर मिलेंगे। राजा जोसेफ तो देवदूत हैं। उनसे कह दो, मार्था ब्रेडा आई है। मिलना चाहती है।"

और सचमुच राजा ने बुढ़िया को फौरन बुला लिया। राजा को देखते ही मार्था के दिल में प्यार का सागर हिलोरें लेने लगा। राजा की बलैया लेकर बोली—"बेटा, तुमने कहा था, मेरे आलू बड़े स्वादिष्ट हैं। इसलिए भेंट दे रही हूं। तुम्हें किसी बात की कमी नहीं, फिर भी यह भेंट स्वीकार करो मां की ओर से। भगवान भला करे तुम्हारा।"

बुढ़िया की ममता से राजा जोसेफ की आंखें भी नम हो गईं। बुढ़िया को सहारा देते हुए कुर्सी पर बैठाया। बढ़िया खाना खिलाया। बुढ़िया आशीष देकर जाने को मुड़ी, तो राजा ने उसे रोकते हुए कहा—"मां, अपने बेटे के घर से टोकरी खाली ले जाओगी ? अभी ठहरो।" और उन्होंने सेवक को टोकरी में सोने की सौ मोहरें रखने को कहा।

उमड़ते आंसुओं को पोंछ, बुढ़िया धीरे-धीरें अपनी झोंपड़ी की तरफ वापस चल दी। ●

शेर वाला सिपाही

— श्रेतियां द' त्राय

राजा आर्थर अपने दरबार में बैठे थे। सभी सामंत उपस्थित थे। कुछ सामंत राजा को अपनी वीरता के कारनामे सुना चुके थे। तभी आर्थर ने कोलोग्रीनेंट नामक सामंत से कहा—"तुम भी सुनाओ कोई किस्सा।"

कोलीग्रीनेंट कुछ पल चुप रहा। उसके चेहरे पर लज्जा के भाव थे। फिर उठकर बोला—"हर सामंत ने आपको अपनी वीरता की कहानियां सुनाई हैं, पर मेरे पास लज्जा और पराजय का प्रसंग है। आज मैं वही सुनाऊंगा।"

पूरे दरबार में खामोशी छा गई। सब जानना चाहते थे, उसके साथ ऐसा क्या घटा था?

वह बताने लगा—"एक दिन मैं शिकार पर निकला था। जंगल में रात हो गई। मैं ठहरने का ठिकाना खोज रहा था, तभी मुझे एक दानव दिखाई दिया। वह बहुत लम्बा था। मैं उसे देखकर डरा नहीं। दानव को मेरे सामंत होने की बात पता चली, तो उसने कहा—'अगर तुम रोमांच की खोज में निकले हो, तो यहां से दक्षिण में एक घना जंगल है। जंगल में एक झरना है। झरने के पास एक पत्थर पड़ा है। झरने का पानी लेकर उस पत्थर पर डालना और तमाशा देखना।'

"मैं जंगल के झरने के पास जा पहुंचा। पत्थर पर पानी डालते ही तेज आंधी चलने लगी। फिर बादल घिर आए। बिजली कड़क उठी। तभी एक घुड़सवार वहां आया। उसने मुझे युद्ध के लिए ललकारा। हम दोनों काफी देर तक लड़ते रहे। आखिर मेरी तलवार टूट गई। उसने मुझे धरती पर गिरा दिया और गायब हो गया। यह घटना आज भी मुझे अच्छी तरह याद है। पता नहीं, वह कौन था?"

दरबार में यवेन नामक वीर सामंत भी बैठा था। उसने सुना और मन ही मन कसम खाई, वह कोलोग्रीनेंट के इस अपमान का बदला अवश्य लेगा।

राजा आर्थर ने कहा—"मैं स्वयं उस रहस्यमय जंगल में जाऊंगा। झरने के पानी और पत्थर का रहस्य पता करूंगा।" उन्होंने सामंतों को अपने साथ चलने का निमंत्रण भी दिया। लेकिन यवेन ने निश्चय किया, वह अकेला ही जाएगा। वह दरबार से उठा। घोड़े पर बैठकर जंगल की ओर चल दिया। अनेक नदी-नाले पार करता हुआ यवेन उसी झरने के पास जा पहुंचा। उस समय चारों ओर सन्नाटा था। यवेन ने झरने का पानी लेकर पत्थर पर डाल दिया।

पानी डालते ही जैसे आफत आ गई। जोर का तूफान आ गया। तूफान थमा तो एक घुड़सवार वहां प्रकट हो गया। उसने यवेन को युद्ध के लिए ललकारा। यवेन जैसा वीर भला इस चुनौती को कैसे ठुकरा सकता था। उसने तलवार निकाली और घुड़सवार से भिड़ गया। दोनों काफी देर तक लड़ते रहे। धीरे-धीरे यवेन अपने प्रतिद्वंद्वी पर हावी हो गया। उसने तलवार का एक ऐसा वार किया कि प्रतिद्वंद्वी का टोप टुकड़े-टुकड़े हो गया। वह पलटकर भागा, तो यवेन ने उसका पीछा किया। थोड़ी दूर पर एक किला नजर आया। उसके दरवाजे खुले हुए थे। भागता हुआ घुड़सवार किले में चला गया। यवेन भी उसके पीछे-पीछे था!

तभी यवेन एक पिंजरे में फंस गया। पिंजरा जादुई था। यवेन ने पिंजरे से निकलने की बहुत कोशिश की, पर असफल रहा। उसने देखा, चारों ओर से सैनिक तलवारें लेकर उसकी ओर बढ़ रहे हैं। उसने समझ लिया, अब मौत से कोई नहीं बचा सकेगा। तभी एक औरत वहां आई। उसके हाथ में एक अंगूठी थी।

श्रेतियां द' त्राय (११५०-११९०)—मध्यकाल के प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक ! अनेक पुस्तकें लिखीं । ब्रिटेन के किंग आर्थर की रोचक कथाओं को पहली बार इन्होंने ही पेश किया ! यहां हम इनकी रचना 'यूवैं, ऊलु शिवालिए ओ लीओं' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं । —सं.

अंगूठी के छुआते ही पिंजरे का दरवाजा खुल गया । उस औरत ने कहा—"यह अंगूठी जादुई है । इसे पहनने वाला अदृश्य हो जाता है ।" उस औरत का नाम ल्युनेट था । अंगूठी पहनते ही यवेन अदृश्य हो गया । सैनिक उसे ढूंढते रहे । और वह उनके सामने खड़ा हंसता रहा ।

वहां की रानी का नाम ल्युडाइन था । वह घुड़सवार उसका पति था । पत्थर पर झरने का पानी पड़ते ही लड़ने के लिए निकल पड़ता था । ल्युडाइन के पति की मृत्यु हो गई । उसका दुःख देखकर यवेन छिपा न रह सका । अंगूठी उतारकर ल्युडाइन के सामने जा खड़ा हुआ । ल्युडाइन उसे पति का हत्यारा मानकर बहुत नाराज थी । वह उसे कोई कठोर ढंड देना चाहती थी । तब यवेन ने पूरी घटना सुनाई । कहा, उसने अपने आप लड़ाई शुरू नहीं की थी ।

तब ल्युडाइन कुछ शांत हुई। यवेन ने कहा—"आप मुझ पर विश्वास कर सकती हैं । मैं हर संकट में आपकी मदद करूंगा ।" ल्युडाइन ने यवेन को क्षमा कर दिया । वह उसकी वीरता और ईमानदारी से प्रभावित थी । इसके बाद वे पति-पत्नी की तरह रहने लगे ।

उधर राजा आर्थर अपने सामंतों के साथ उस जादुई झरने पर आ पहुंचे । सब आपस में इस बात की चर्चा कर रहे थे कि यवेन कहां चला गया ? उसे तो इस समय यहां अवश्य होना चाहिए था । उससे ईर्ष्या रखने वाले सामंत कह रहे थे, यवेन डरकर भाग गया । उसने राजा से विश्वासघात किया है । राजा आर्थर ने झरने का पानी पत्थर पर डाला, तो आंधी चलने लगी । फिर यवेन अपना चेहरा ढंके हुए प्रकट हुआ । उसने आर्थर के कई सामंतों से युद्ध किया और सबको हरा दिया । राजा आर्थर उसकी वीरता देखकर चकित रह गए । वह सोच रहे थे, यह सामंत कौन है ? तभी यवेन ने चेहरे पर लगी नकाब हटा दी । उसने राजा को नमस्कार किया ।

यवेन को सुरक्षित देख, राजा बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने पूछा तो यवेन ने पूरी घटना बता दी । वह इस तरह अकेले चले आने के लिए क्षमा मांगने लगा । उसके बाद यवेन सबको किले में ले गया । वहां ल्युडाइन ने सबका स्वागत किया । राजा आर्थर के सम्मान में शानदार दावत का आयोजन हुआ । राजा आर्थर और उनके साथी कई दिन तक किले में रहे । जब चलने लगे, तो सेनापति ने यवेन से कहा—"तुम देश वापस चलो । वहां खेल-कूद और वीरता की प्रतियोगिताएं होने वाली हैं । तुम्हें उनमें भाग लेना चाहिए ।"

यवेन चलने को राजी हो गया । चलते समय ल्युडाइन ने उसे एक अंगूठी दी । उसे पहनने वाला विपत्तियों से बचा रहता था ।

वापस याकर यवेन ने सब प्रतियोगिताओं में भाग लिया । उसने अपने प्रतिद्वंद्वियों को परास्त कर दिया । पूरे देश में उसके नाम का डंका बज उठा । वहां रहते हुए यवेन ल्युडाइन के बारे में बिल्कुल भूल गया । काफी समय बीत गया, तो ल्युडाइन ने उसके पास संदेश भेजा, उसे अंगूठी वापस चाहिए ।

जादुई अंगूठी वापस देकर यवेन पागल-सा हो गया । घने जंगलों में मारा-मारा फिरने लगा । पिछली सब बातें भूल गया । एक दिन वह बुरी तरह घायल हो, जंगल में पड़ा था, तभी किसी रियासत की रानी वहां आई । उसके पास एक ऐसी दवा थी, जिसे लगाने से यवेन के घाव भर गए । यवेन ने रानी से कहा—"मैं हर मुसीबत में आपका साथ दूंगा ।" और उसने अपना वादा पूरा भी किया । एक विरोधी सामंत के हमलों से रानी की रक्षा की ।

एक बार यवेन जंगल में घूम रहा था । तभी उसने शेर की दहाड़ सुनी । उस दहाड़ को सुन, उसे लगा शेर मुसीबत में है । वह उस ओर गया । देखा, एक भयंकर सांप ने शेर की पूंछ पकड़ रखी है । सांप के मुंह से आग का धुआं निकल रहा था ! यवेन डरा नहीं । उसने तलवार निकाली और आग उगलने वाले सांप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए । वह वहां से चला, तो देखा, शेर भी उसके पीछे-पीछे आ रहा है । उस दिन

से वह शेर हमेशा ही यवेन के साथ-साथ रहने लगा ।

घूमता-फिरता यवेन एक दिन फिर उसी झरने के पास जा पहुंचा । वहां उसने एक गुफा में ल्युनेट को कैद में देखा । वह ल्युडाइन की दासी थी । ल्युनेट ने बताया-'रानी ल्युडाइन ने नाराज होकर यह दंड दिया है । आपके न लौटने का अपराधी मुझे मानती हैं ।'

यवेन ने कहा, वह उसकी मदद करेगा । वह जंगल में रात बिताने की जगह खोजने लगा । उसे चार युवक मिले । वे चारों एक दैत्य से परेशान थे । दैत्य उन्हें मारने आ रहा था । यवेन ने कहा—"तुम लोग डरो मत । मैं दैत्य का काम तमाम कर दूंगा ।" थोड़ी देर बाद उसने दैत्य को आते देखा । वह बादल की तरह गरज रहा था ! यवेन बढ़कर दैत्य से लड़ने लगा । शेर ने भी दैत्य पर हमला बोल दिया । इस दो तरफ के आक्रमण से दैत्य घबरा गया । वह घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा और मर गया ।

इसके बाद यवेन उस स्थान पर पहुंचा, जहां ल्युनेट कैद थी । उसे चिता पर जीवित जलाने की तैयारियां हो रही थीं । यवेन के साथ शेर को देखकर सब लोग भाग गए । उसने ल्युनेट को मुक्त कर दिया । ल्युनेट ने कहा—"मैं आपके और रानी ल्युडाइन के बीच समझौता कराने की कोशिश करूंगी ।"

लड़ाई में यवेन और शेर बहुत घायल हो गए । उन्हें कुछ दिन आराम की जरूरत थी । वे जंगल में एकांत स्थान पर चले गए । अब सब जगह शेर वाले सामंत की वीरता के किस्से मशहूर हो गए थे ।

एक दिन यवेन और उसका साथी शेर एक किले के पास से गुजर रहे थे । तभी उसके कानों में चीखने-चिल्लाने की आवाजें आईं । पूछने पर पता चला, किले में कई सौ लड़कियां कैद हैं ।

यवेन ने निश्चय किया , इन बंदी लड़कियों को छुड़वाया जाए । वह किले में घुसा, तो परेशानी में पड़ गया । दैत्य ने छल से शेर को एक तहखाने में बंद कर दिया । तभी यवेन को दैत्य के सैनिकों ने पकड़ लिया । यवेन वीर था, मौत सामने देखकर भी वह डरा नहीं । तलवार निकालकर शत्रुओं पर टूट पड़ा । उधर शेर भी खामोश नहीं था । उसने अपने पंजों से कैदखाने की सलाखें तोड़ डालीं । वह वहां पहुंचा, जहां यवेन जीवन और मृत्यु का युद्ध लड़ रहा था । शेर ने भी शत्रुओं पर आक्रमण किया । कुछ घायल हो गए,बाकी भाग गए । शेर के आ जाने से यवेन की हिम्मत भी बढ़ गई । उसने दैत्य के सैनिकों को हरा दिया । फिर दैत्य को भी मार डाला । वहां कैद लड़कियों को कैद से छुड़या ।

अब उसने ल्युडाइन के पास लौटने का निश्चय किया । वह जादुई झरने के निकट जा रहा था, तो उसे रास्ते में एक युवती मिली । यवेन को देखते ही उसने पुकारा—"भाई शेर वाले सामंत ! मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है ।"

यवेन ने पूछा, तो उसने बताया—"राजा आर्थर का एक सामंत मेरे शत्रुओं की मदद कर रहा है । अब मैं कहां जाऊं !' यवेन ने कहा—"मैं आपकी मदद करूंगा । मैं भी राजा आर्थर का ही सामंत हूं ।"

वह लड़की के साथ राजा आर्थर के दरबार की ओर चल दिया । यवेन ने अपना चेहरा ढंक रखा था । वहां दोनों सामंत भिड़ गए, पर कोई किसी को परास्त नहीं कर सका । तभी दोनों ने एक दूसरे की आवाज पहचान ली । युद्ध बंद कर दिया । बाद में यवेन ने राजा आर्थर को प्रणाम किया । फिर अपने अनुभव सुनाए । अपने वीर सामंत के लौट आने पर राजा बहुत प्रसन्न हुआ । उन्होंने यवेन को ढेर सारे पुरस्कार दिए । अब सभी जान गए कि शेर वाला सामंत यवेन ही है ।

राजा से आज्ञा लेकर यवेन जादुई झरने के पास पहुंचा । वह ल्युडाइन से मिला । ल्युडाइन ने भी यवेन के बारे में सब कुछ सुन लिया था । अब उसे कोई शिकायत नहीं थी । दोनों फिर सुख से रहने लगे ।

चलो पार

—अरविंद कुमार सिंह

किसी नदी के किनारे बकरा, खरगोश, चूहा और छिपकली साथ-साथ रहते थे। इन चारों में गहरी दोस्ती थी। एक दिन अचानक उस नदी में बाढ़ आ गई। वे चारों दोस्त नदी के किनारे खड़े थे। उन्हें पार जाना था, किंतु डर रहे थे। वे सोचने लगे, नदी को कैसे पार किया जाए ?

तभी एक बड़ा कछुआ नदी में तैरता हुआ उनके पास से गुजरा। चारों ने कछुए को रोका। उससे पूछा—''क्या आप हम लोगों को उस पार पहुंचा देंगे ?'' कछुआ राजी हो गया। चारों मित्र खुश होकर कछुए की पीठ पर सवार हो गए। नदी में थोड़ी दूर पहुंचने पर कछुआ अचानक रुक गया। बोला—''मैं तो बहुत थक गया हूं। अपनी पीठ पर अब इतना बोझ सहन नहीं कर पा रहा हूं। बोझ के कारण कहीं मैं पानी में न डूब जाऊं। तुममें से अगर एक कोई मेरी पीठ पर कम हो जाए, तो तुम्हें पार पहुंचा सकता हूं।''

कछुए की बात सुनते ही बकरे ने खरगोश की तरफ, खरगोश ने चूहे की तरफ और चूहे ने छिपकली की तरफ देखा। छिपकली भला किसकी ओर देखती ? तभी अचानक चूहे ने छिपकली को पानी में गिरा दिया। अब बचे तीन— बकरा, खरगोश और चूहा।

कछुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। कुछ दूर चलकर फिर रुक गया। बोला—''भाई, मैं तो फिर थक गया हूं। तुममें से कोई एक और कम हो जाए, तो काम चल जाएगा।'' अब चूहा किसकी ओर देखे ? तीनों में वही कमजोर था। इस बार खरगोश ने चूहे को धक्का दे दिया। चूहा नदी में गोते खाने लगा।

कछुए की पीठ पर बचे कुल दो— बकरा और खरगोश। उन दोनों को पीठ पर लादकर कछुआ चल दिया। कुछ दूर चल पाया था, फिर रुक गया। कहने लगा—''क्या बताऊं, अब भी किनारे तक पहुंचना मेरे लिए मुश्किल है। बकरा सारी बात समझ गया।
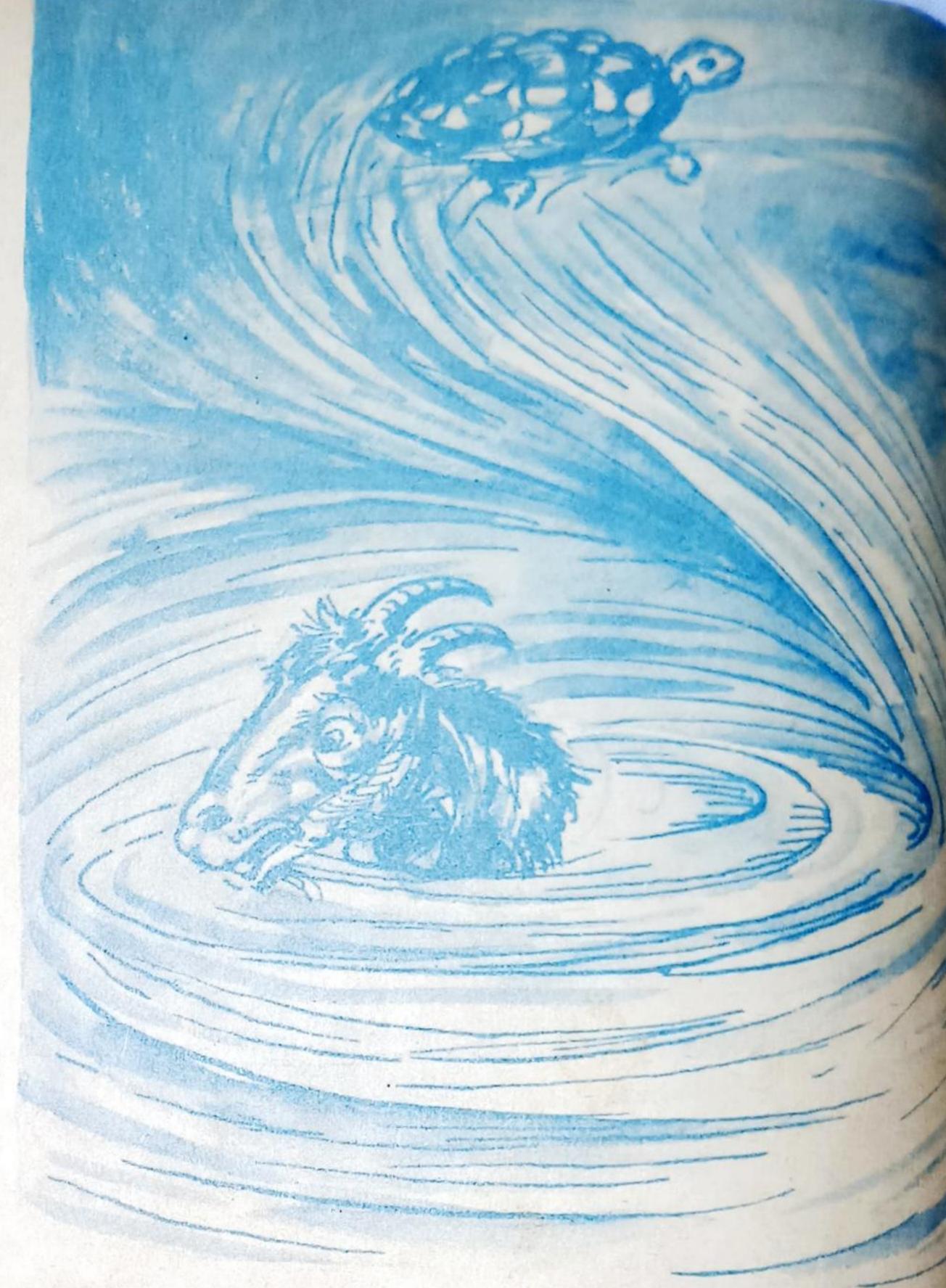
उसने खरगोश को अपने सींगों से उठाकर नदी में फेंक दिया। अब बचा केवल बकरा।

किनारा अभी दूर था। चलते-चलते कछुआ फिर ठहर गया। बकरे से बोला—''अब तो तुम्हारा बोझ भी मुझसे सहा नहीं जाता।''

बकरा सहम गया। घबराकर बोला—''नहीं, नहीं, यह आप क्या कर रहे हैं ? क्या आपने हम चारों को इसी तरह छोड़ने के लिए पीठ पर चढ़ाया था ?''

कछुए ने कहा—''मैंने तुम चारों को आपस में दोस्त समझकर अपनी पीठ पर चढ़ाया था, किंतु तुम अपनी जान बचाने के लिए स्वार्थ में एक-दूसरे को धक्का देते रहे हो। तुम सहयोग की बात करते, तो मैं खुशी-खुशी चारों को उस पार पहुंचा देता, लेकिन तुम सब महा ढोंगी निकले।'' इतना कहकर कछुआ पानी में डुबकी लगा गया। कुछ देर में बकरा भंवर में फंसकर न जाने कहां गुम हो गया। मित्रता में घात करने का परिणाम दुःखद ही होता है। ●

उज्जयिनी के महाप्रतापी राजा उदयसिंह की सबसे छोटी रानी बड़ी ही सुंदर थी। राजा भी उसे बहुत चाहते थे। रानी का नाम रूपवती था। स्वभाव बालिकाओं जैसा चंचल।

एक दिन रानी रूपवती ने राजा से कहा—"राजन! मेरे लिए एक अलग नौकर की नियुक्ति कर दीजिए। रामू को मैं बचपन से जानती हूं। आप उसे ही मेरा नौकर नियुक्त कर दीजिए। बेचारा गरीब है। सुख से जीवन बिता सकेगा।"

राजा ने रानी की बात मान ली। नौकरी देने के

देखा हुआ झूठ

– रसिक बिहारी मंजुल

लिए मालिक शर्तें रखते हैं, पर यहां बात ही उल्टी थी। रामू ने शर्त रखी। शर्त थी— 'वह दिन में केवल एक बार ही रानी रूपवती का काम करेगा। एक बार से अधिक काम कराया, तो वह बाहर जो भी देखकर आएगा, उसका रहस्य राजा से जानना चाहेगा। यदि राजा उसे रहस्य न बता सके, तो वह तुरंत नौकरी छोड़कर अपने शहर चला जाएगा।'

रानी रूपवती ने रामू की शर्त मान ली। शर्त के अनुसार राजा उदयसिंह और रानी रूपवती दिन में केवल एक बार ही रामू से काम के लिए कहते थे।

एक दिन अचानक रानी रूपवती को दूसरा जरूरी काम याद आ गया। रामू ने कहा—"रानी जी, मैं जाता तो हूं, पर रास्ते में जो देखूंगा, उसका रहस्य राजा जी से पूछूंगा।" यह कहकर रामू चला गया।

रास्ते में रामू ने देखा, एक युवती सोलह श्रृंगार किए समुद्र तट पर खड़ी है। उसके पैरों के पास तोते का एक पिंजरा रखा है। पिंजरे में एक मरा हुआ तोता है। तभी पानी का जहाज लड़की के पास आया और लड़की जहाज पर बैठ गई। लड़की के चेहरे पर प्रसन्नता होते हुए भी उसकी आंखों में आंसू थे।

रामू लड़की की प्रसन्नता और रोने का कोई अर्थ न लगा सका। उसने निश्चय किया, वह इसका रहस्य राजा से पूछेगा।

उसने रानी रूपवती को उनका काम पूरा करके आने की सूचना दी। फिर राजा के पास गया। कहने लगा—"महाराज, आज मैंने समुद्र तट पर सोलह साल की एक युवती को देखा। वह सजी-धजी थी। उसके पैरों के पास तोते का एक पिंजरा रखा था। पिंजरे में मरा हुआ एक तोता था। सहसा पानी का जहाज आया, जिसमें बैठकर वह चली गई। उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी, पर उसकी आंखों से आंसू भी बह रहे थे। इसका क्या राज है?"

राजा का गुप्तचर विभाग बहुत ही सतर्क था। राजा इन्हीं की सहायता से रहस्य जान लेता था।

राजा ने रामू से कहा—"रामू वह युवती हमारे पड़ोसी राजा वीरसेन की इकलौती कन्या है। वह बचपन से ही राजकुमारों जैसी साहसी है। राजा उसे अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने यह शर्त रख दी—'यदि राजकुमारी पड़ोसी राज्यों का भ्रमण कर, वापस लौट आएगी, तो वह उसे अपना राजपाट सौंप देंगे। मगर उसे पुरुष वेश में जाना होगा। कोई जान न पाए, वह राजकुमारी है।'

"रामू, इस युवती का नाम स्वर्णलता है, पर जाने से पहले उसने अपना छद्म नाम स्वर्णकुमार रखा। पुरुषों वाला वेश बनाया। अपने प्राणों से प्यारे तोते को लेकर वह भ्रमण करने चल पड़ी।

"स्वर्णलता पुरुषवेश में हमारे पड़ोसी चंदेरी के

राजा की अतिथि बनी।

"चंदेरी के राजा बलवंतसिंह की बड़ी रानी बहुत ही सयानी है। उनका नाम समरदेवी है। समरदेवी का बड़ा लड़का है—राजकुमार सबलसिंह। समरदेवी को संदेह हुआ, यह अतिथि लड़का नहीं, लड़की है। उसने सोचा—'यदि यह लड़की है, तो मैं इससे अपने पुत्र राजकुमार सबलसिंह का विवाह कर दूंगी।'

"रानी समरदेवी ने राजा बलवंतसिंह से कहा—'राजन, हो न हो, यह अतिथि लड़की ही है।' 'राजा बोले—'रानी, तुम इसकी परीक्षा लेकर देख लो। यदि यह लड़की है, तो हम इससे युवराज सबलसिंह की शादी कर देंगे।'

"तोते ने राजा-रानी का यह गुप्त वार्तालाप सुन लिया। फिर जाकर स्वर्णलता को बता दिया। स्वर्णलता सतर्क हो गई। इधर राजमहल में रानी समरदेवी की देख-रेख में परीक्षा लेने की तैयारी होने लगी। रात होते ही, खाना परोसते समय रानी ने उल्टी पटली बिछा दी। जैसे ही स्वर्णकुमार बनी स्वर्णलता खाना खाने आई, तो पटली उल्टी बिछी देखी। वह बोल पड़ी—'यह उल्टी पटली किसने डाली है? उल्टी पटली पर बैठकर तो औरतें खाना खाती हैं।'

"रानी समरदेवी अपनी करनी पर झेंप गई। राजा बलवंत सिंह को निश्चय हो गया कि हमारा यह अतिथि लड़का है। रानी के हृदय में अभी भी संदेह बना था।

"खाने में रानी ने खट्टी, चटपटी चीजें भी परसी थीं। स्वर्णलता ने सादा खाना ही खाया। रानी ने कहा '—आपने इतना कम खाना क्यों खाया? मैंने आपके लिए ये चटपटी चीजें बनाई हैं।'

स्वर्णलता ने रानी से कहा—'मैंने भरपेट खाना खा लिया है। औरतें ही खट्टी-चटपटी चीजें खाती हैं।

"ऐसा सटीक उत्तर पाकर रानी निरुत्तर हो गई। पर परीक्षा अब भी चल रही थी। सहसा रात हुई। रानी समरदेवी ने खिले हुए गुलाब के फूलों से सेज सजा दी। स्वर्णलता को उसी सेज पर सुलाया। उसके पास ही खूंटी पर तोते का पिंजरा टांग दिया गया। अपनी एक दासी को पास ही सुला दिया।

"रात भर स्वर्णलता पुरुष वेश में सोती रही। स्त्रियों की आदत होती है, करवटें बदल-बदलकर सोने की। तोता इस बात पर नजर रक्खे हुए था। वह चाहता था, बेचारी स्वर्णलता का भेद न खुले।

"लगभग रात के तीन-चार बजे तक स्वर्णलता के बिस्तर के सारे फूल करवटें बदलने के कारण टूट-टूटकर बिखर गए थे। तोते को चिंता हुई। वह टें-टें करने लगा। पास में सोई हुई दासी की नींद खुल गई। नींद खुलने से उसे क्रोध आ गया। उसने पिंजरा जमीन पर दे मारा। पिंजरा खुला और तोता उड़ गया।

"तोते ने दूसरे तोतों को इकट्ठा कर लिया। तोते गुलाब के टूटे हुए फूल चोंचों में लेकर जंगल में डाल आए। उनकी जगह नए-नए फूल ले आए। उन्होंने स्वर्णलता की सेज फिर से सजा दी। उसने स्वर्णलता को समझा दिया, वह सबेरा होने तक एक करवट से ही लेटी रही। इसके बाद स्वर्णलता ने तोते को पिंजरे में बंद कर दिया।

"सवेरे रानी समरदेवी ने देखा, तो दंग रह गई। राजा साहब से कहा—'आश्चर्य है।' राजा साहब ने भी कहा—'रानी जी, यह लड़का है, लड़की नहीं।' रानी समरदेवी के मन से शंका दूर नहीं हुई थी।

"सवेरे का कलेवा करके उसने राजा से विदाई ली। चलते समय रानी ने तोते से पूछा—'प्यारे तोते! यह राजकुमार हैं या राजकुमारी?' तोता बराबर यही कहता रहा, यह राजकुमार है।

"रानी ने क्रोध में आकर तोते की गरदन मरोड़ते हुए कहा—'यदि तू सच्चा है, तो जिंदा रहेगा।' यह कहकर रानी ने तोते की गरदन मरोड़ दी। मरते दम तक तोते ने वफादारी दिखाई। हारकर रानी ने राजकुमार को दुखी दिल से विदा कर दिया।

"तोते की मौत के कारण स्वर्णलता दुखी थी। प्रसन्न इसलिए थी, राजकुमार बने ही वह अपनी यात्रा पूरी कर आई थी।"

सुनकर रामू फिर से रानी रूपवती की सेवा में लग गया। ●

लगभग ७०० वर्ष पहले की बात है। पंढरपुर (महाराष्ट्र) में दामाजी सेठ रहते थे। वह छीपी का काम करते थे। भगवान विट्ठल के परम भक्त थे।

उनकी पत्नी गोणाई ने एक दिन सवेरे एक स्वस्थ और सुंदर बालक को जन्म दिया।
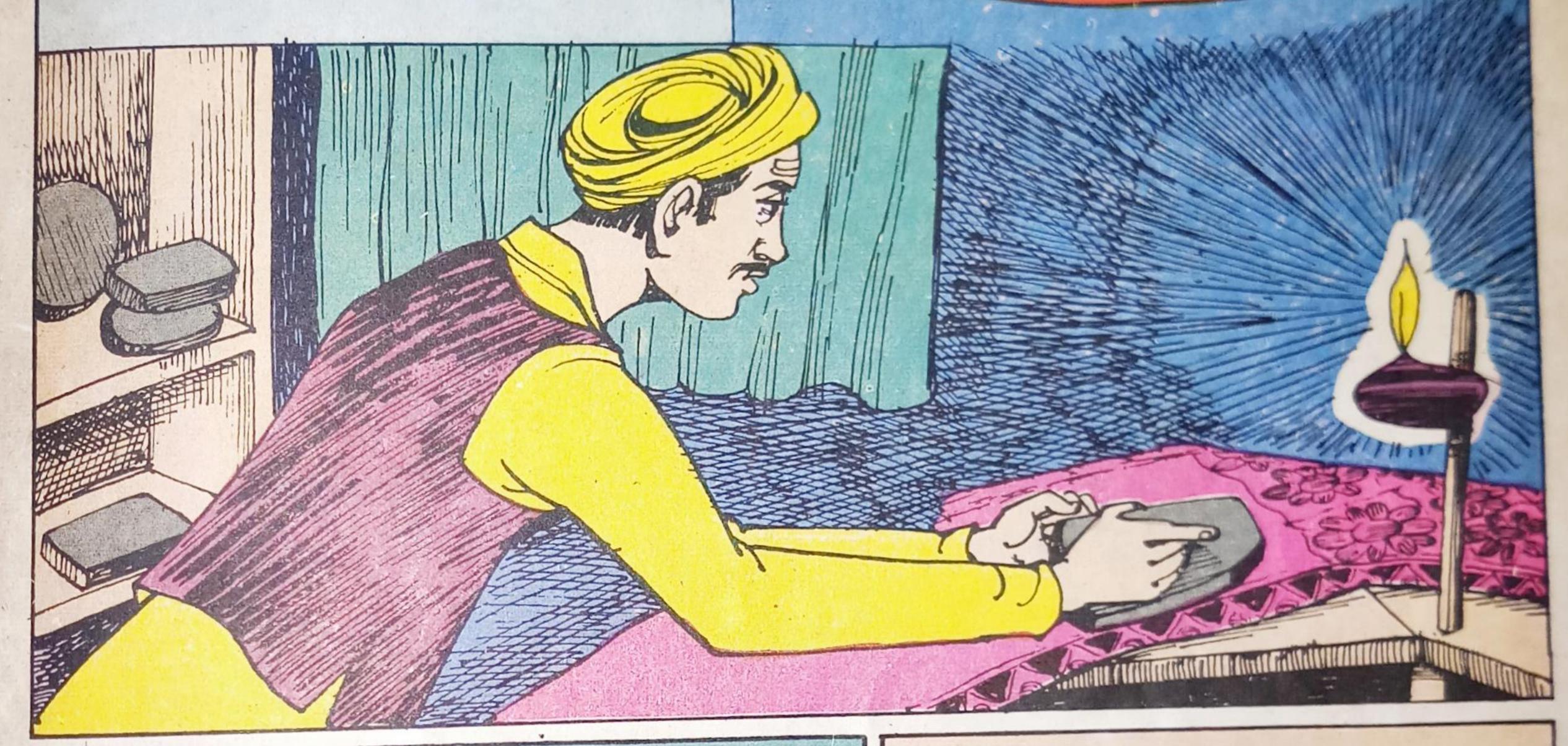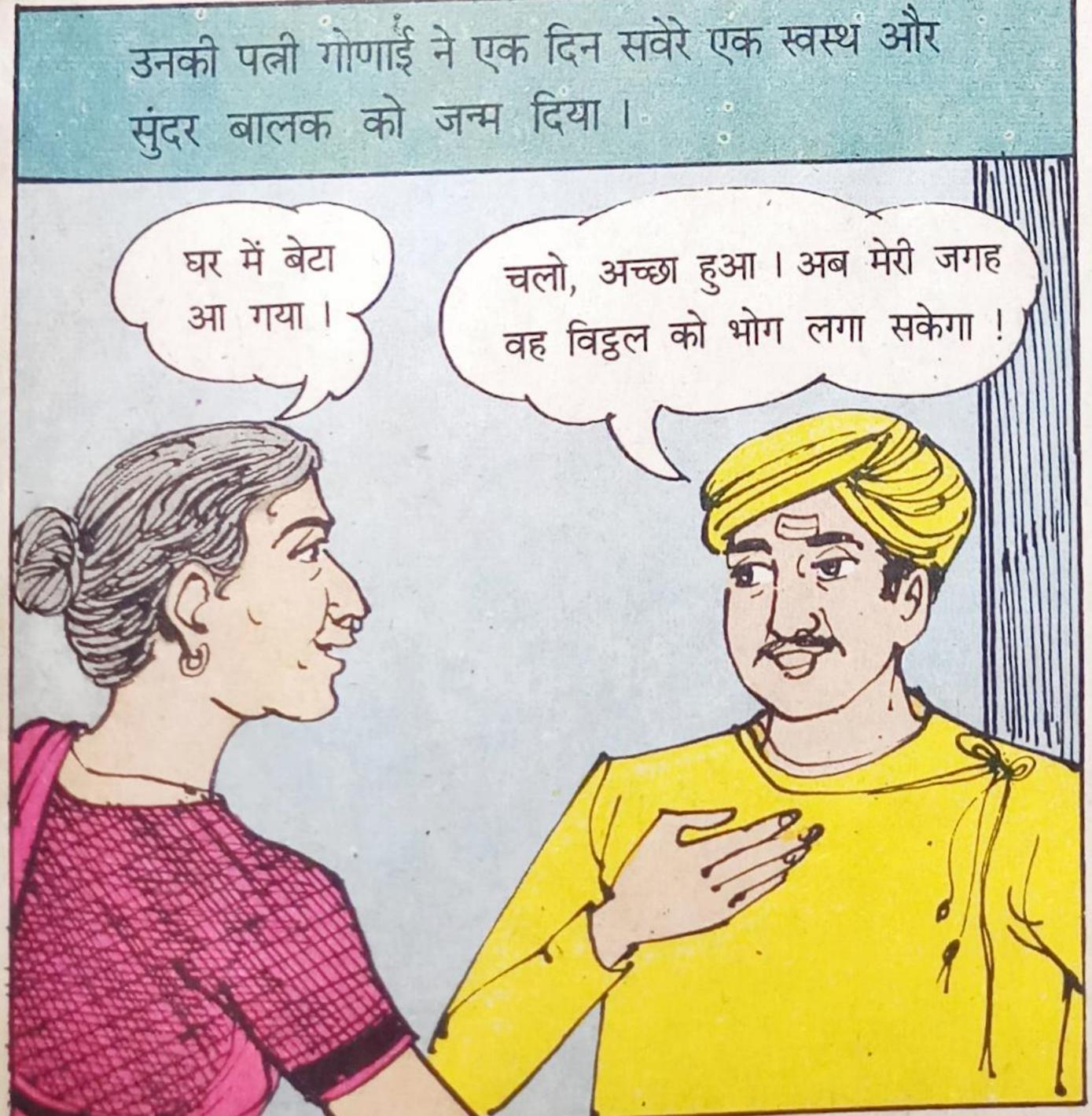
दामाजी ने उसका नाम रखा नामदेव। प्यार में सब उसे नामाजी कहते थे।
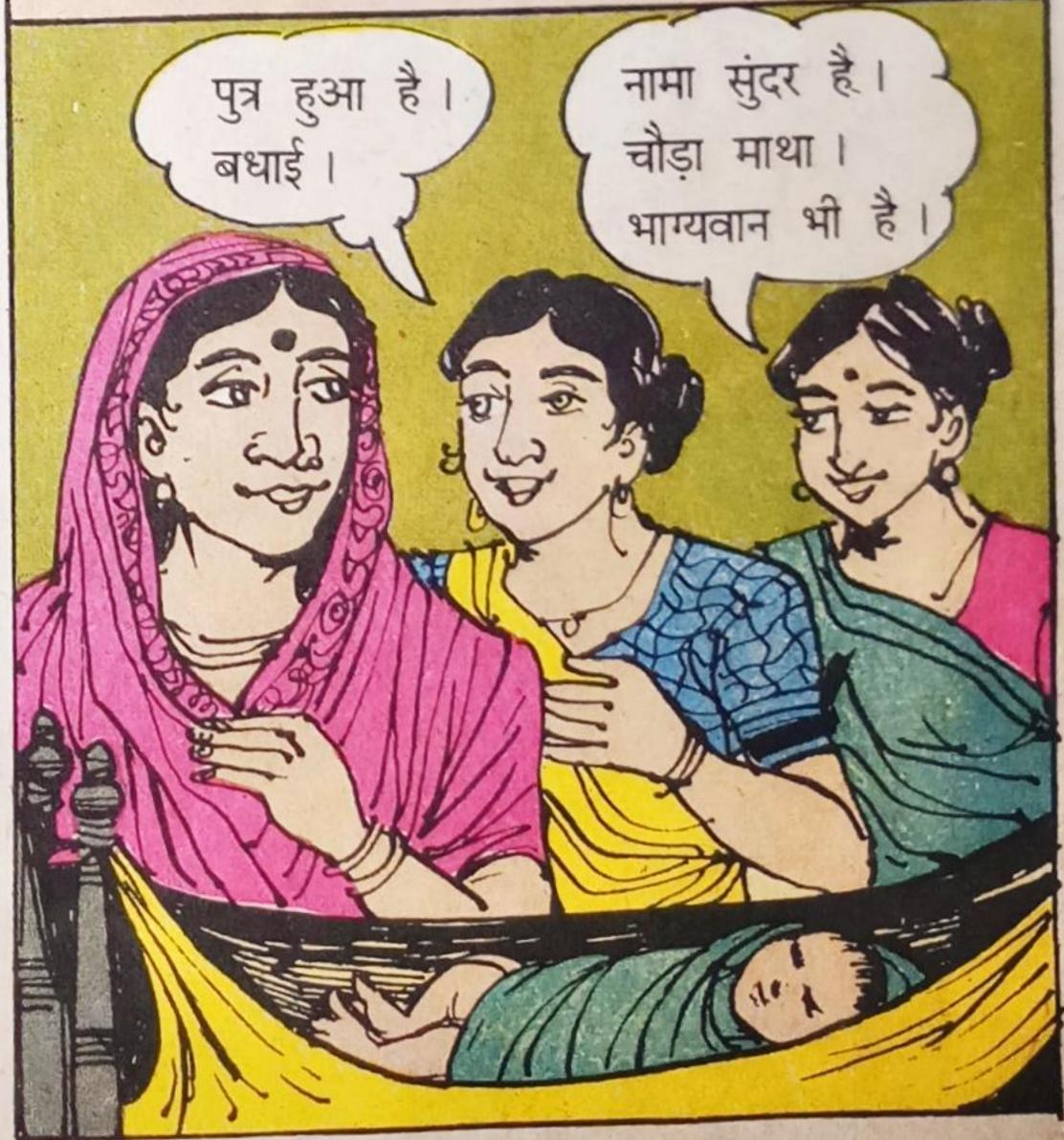
बालक नामदेव बड़ा शैतान था। छीपीगिरी का काम उसे फूटी आंख न सुहाता था। वह बड़ा हुआ, तो जल्दी धनी बनने के लिए लूटमार करने लगा।
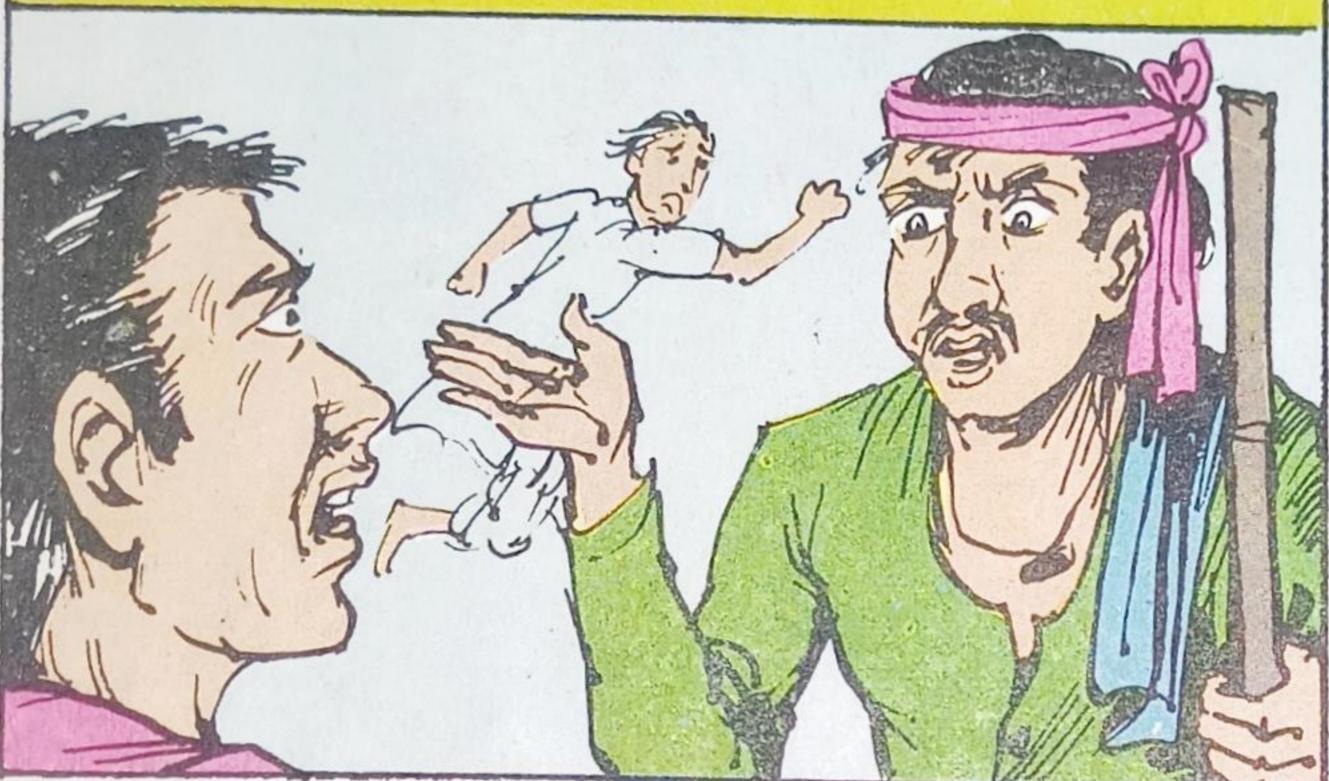
पुत्र के रंग-ढंग देख, दामाजी और गोनाई चिंता में पड़ गए।

गोणाई की बात मान, दामाजी ने नामदेव का विवाह कर दिया। भोली-भाली राजाई बहू बनकर घर आई।
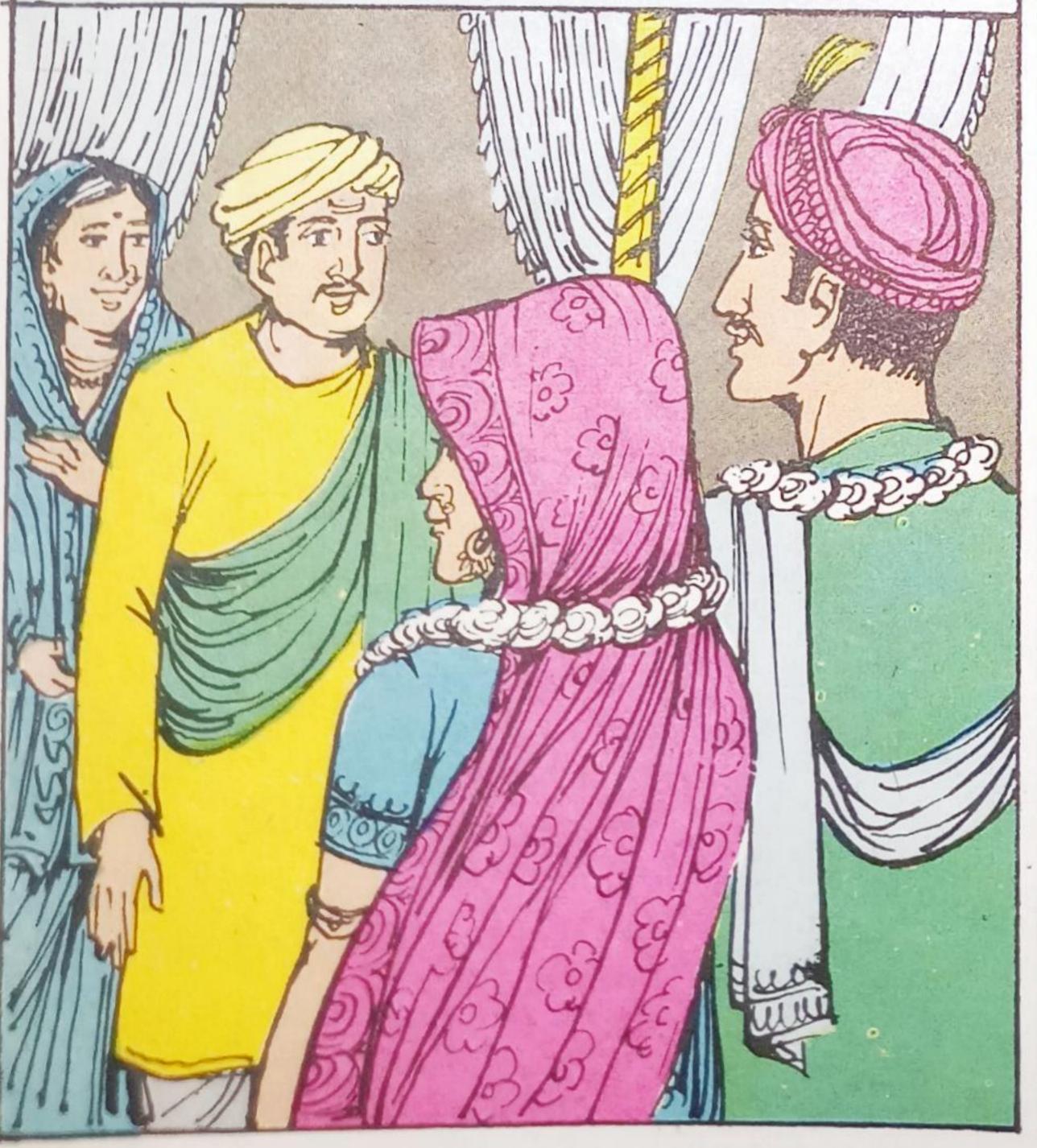
फिर भी नामदेव नहीं सुधरा। एक दिन वह आषाढ्या के नागनाथ मंदिर की ओर जा रहा था। उसने देखा, एक स्त्री अपने छोटे-से बच्चे को पीट रही है।

सुनकर नामदेव को अपने कामों पर पछतावा हुआ। उसने लूटमार छोड़ दी। पिता के साथ भगवान विट्ठल की सेवा में लग गया।

कुछ समय बाद दामाजी का स्वर्गवास हो गया। राजाई एक बेटे की मां बन चुकी थी। नामदेव तो दिन-रात भगवान की भक्ति में लीन रहता था। अतः कमाता कौन? घर की हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी।

तू दिन भर भजन-कीर्तन में लगा रहता है। घर में खाने के लिए दाने तक नहीं। कब तक चलेगा ऐसे?

मां के कड़वे वचन सुन, नामदेव बड़े दुखी हुए। मंदिर में जाकर भगवान से प्रार्थना करने लगे। उनकी मां गोणाई पेट भरने के लिए कुछ मांगने पड़ोस में चली गई। इसी बीच...

तभी मेहमान ने बाहर से पुकारा—

राजाई ने सकुचाते हुए केशव सेठ से थैली ले ली। अंदर आकर उसे खोला, तो आनंद विभोर हो उठी। थैली सोने के सिक्कों से भरी थी। कुछ सिक्के बेच, वह खाने-पीने का सामान ले आई।

सुनते ही नामदेव सब समझ गए। आंखों से आंसुओं की धाराएं बह निकलीं। उन्मत्त हो विट्ठलनाथ को पुकारने लगे।

उन्होंने गांव के सारे ब्राह्मणों को भोजन कराया। थैली का धन उनमें बांट दिया।

अब नामदेव पूरी तरह भगवान विट्ठल को समर्पित हो गए। संत ज्ञानेश्वर के साथ घूम-घूमकर भक्ति का प्रचार करने लगे।

जय विट्ठल !

जय विट्ठल-विट्ठल

एक दिन संत मंडली के साथ संत ज्ञानेश्वर गोरा कुम्हार के घर पधारे। गोरा कुम्हार भी विट्ठलनाथ का परम भक्त था।
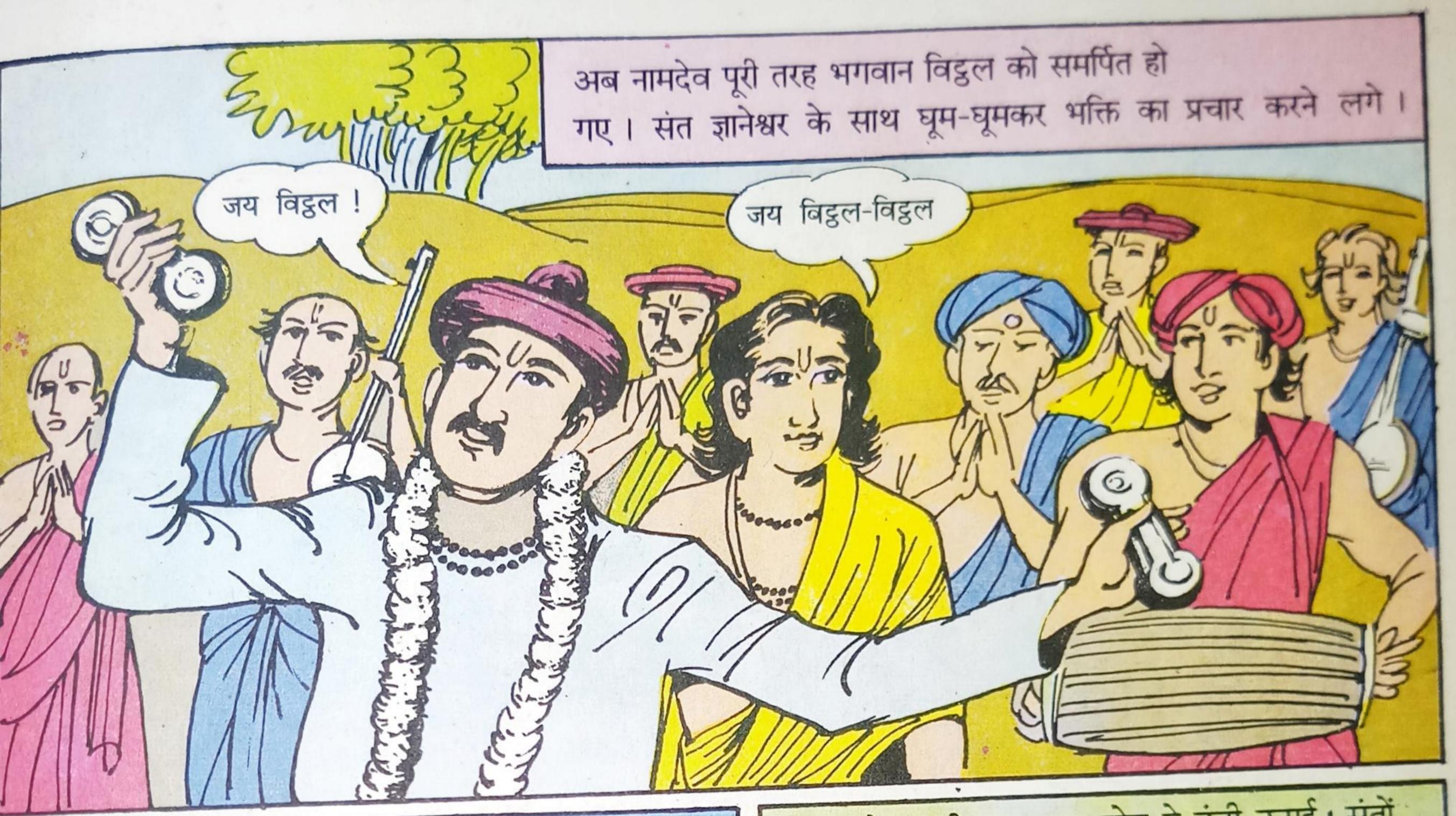
संत ज्ञानेश्वर की बात सुन, गोरा ने डंडी उठाई। संतों को पीटना शुरू कर दिया। मार खाकर भी सारे संत चुप रहे, किंतु जब नामदेव की बारी आई, तो—

नींद टूटने पर बूढ़े विठोबा ने नामदेव को देखा। उनसे आने का कारण पूछा। नामदेव ने उन्हें सपने में दिए भगवान विट्ठल के आदेश को सुनाते हुए कहा—

आप इतने बड़े संत होकर भी भगवान की ओर पैर किए सोते हैं?

मैं बूढ़ा हूं। तुम मेरे पैर उठाकर वहां रख दो, जहां शिव न हो।
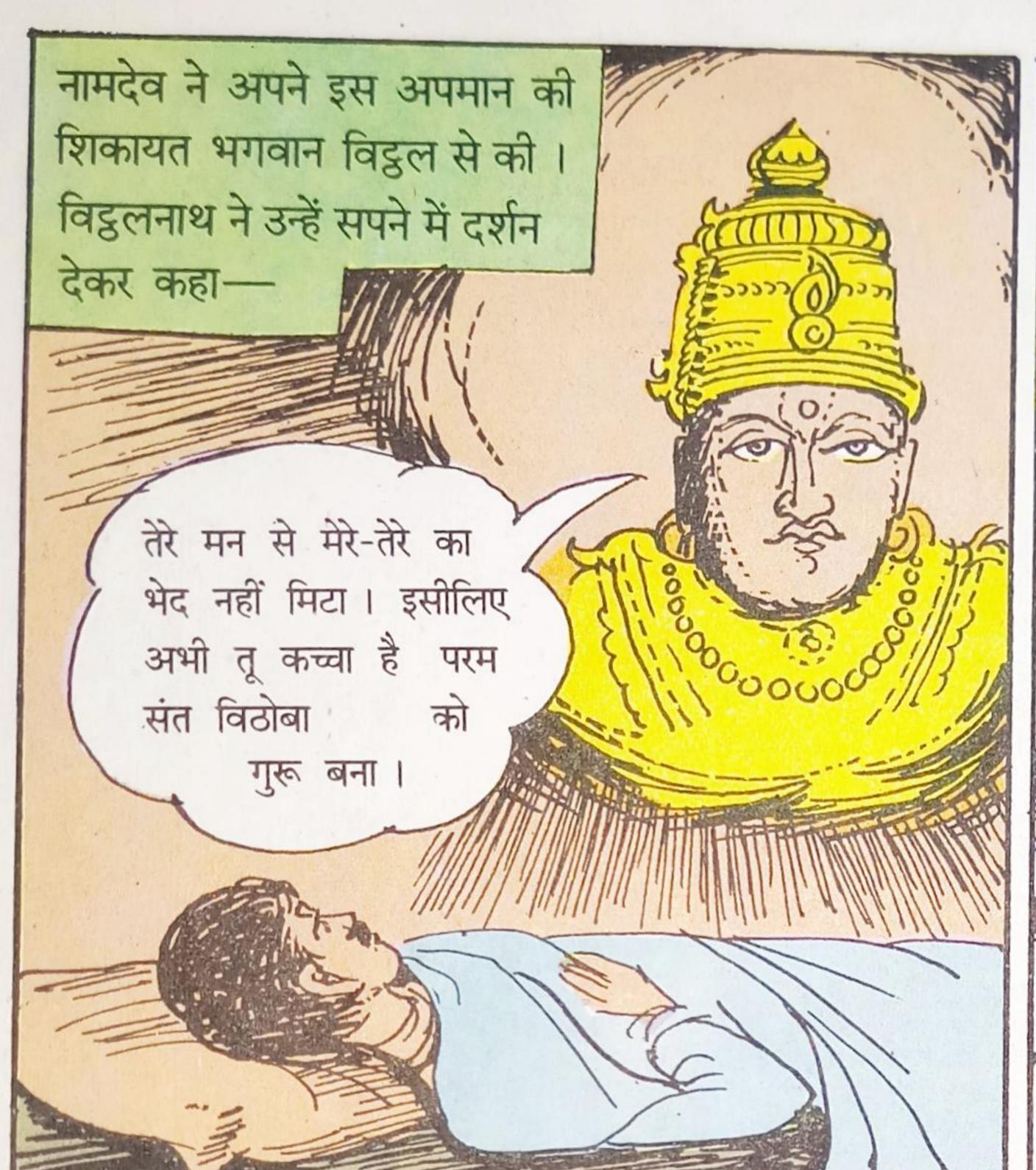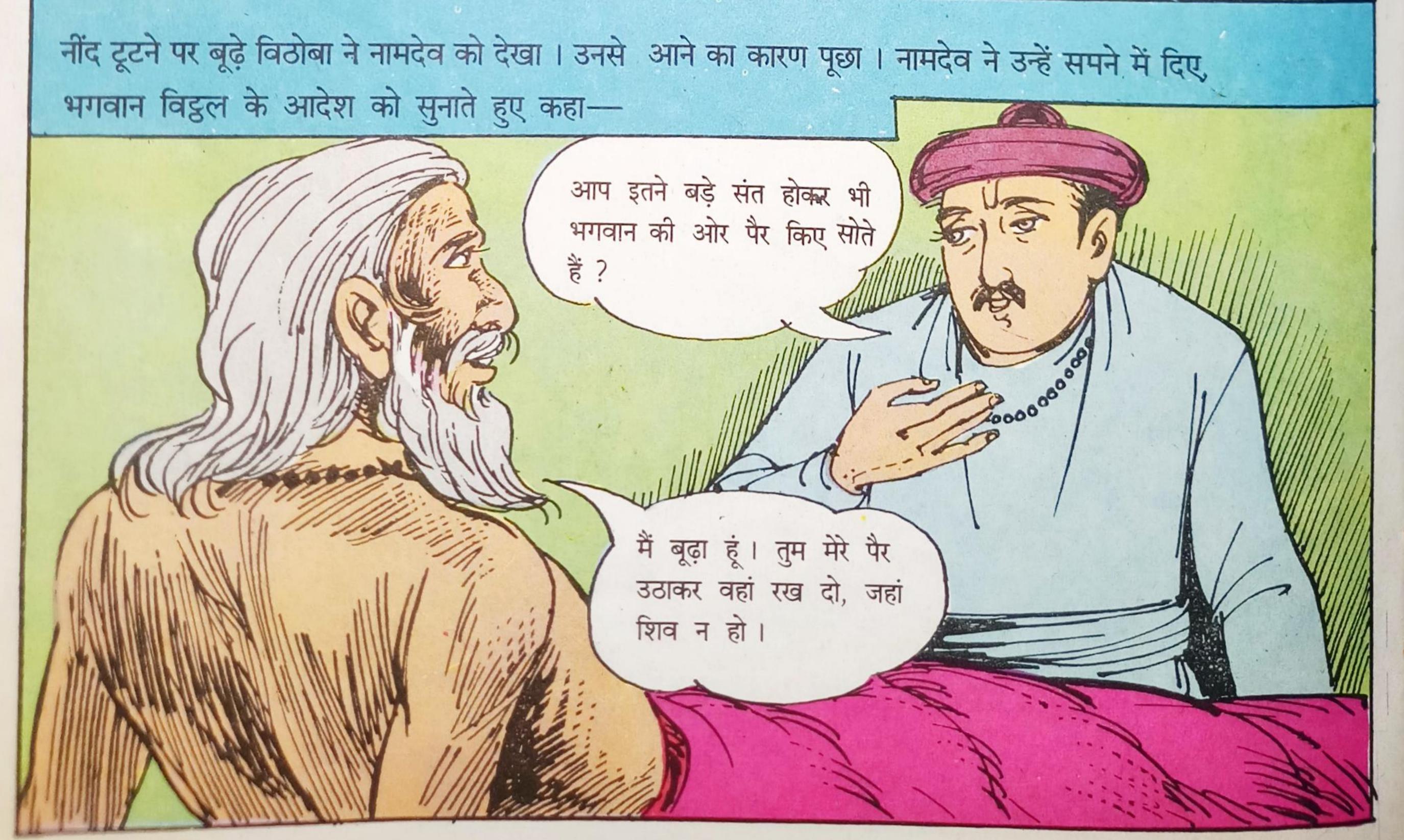
वह समझ गए, विठोबा साधारण संत नहीं । बस, उनके चरण पकड़ लिए । शिष्य बन गए । विठोबा ने उन्हें बताया—आत्मा और परमात्मा दो अलग-अलग नहीं, एक ही हैं । हर जीवधारी के अंदर भगवान हैं ।
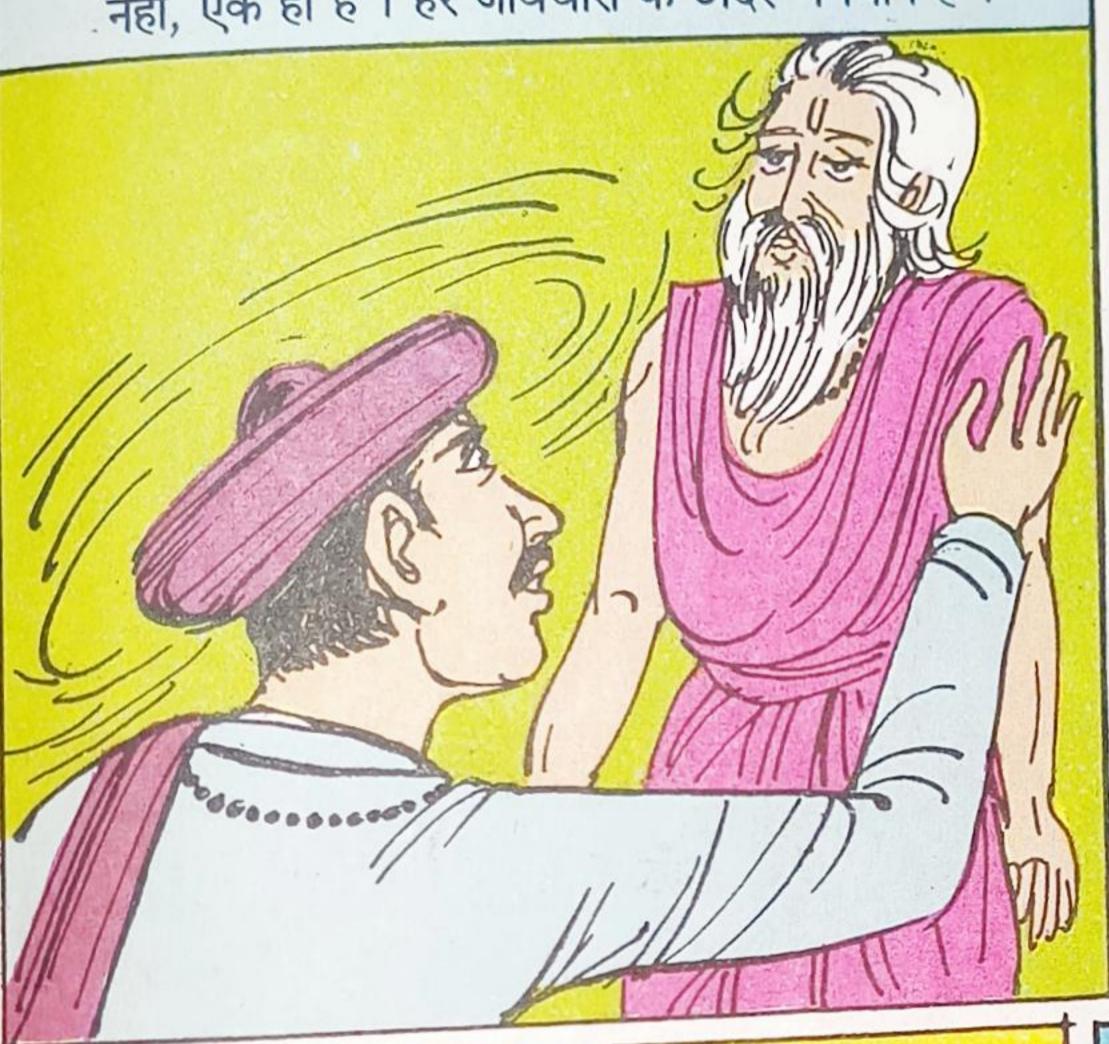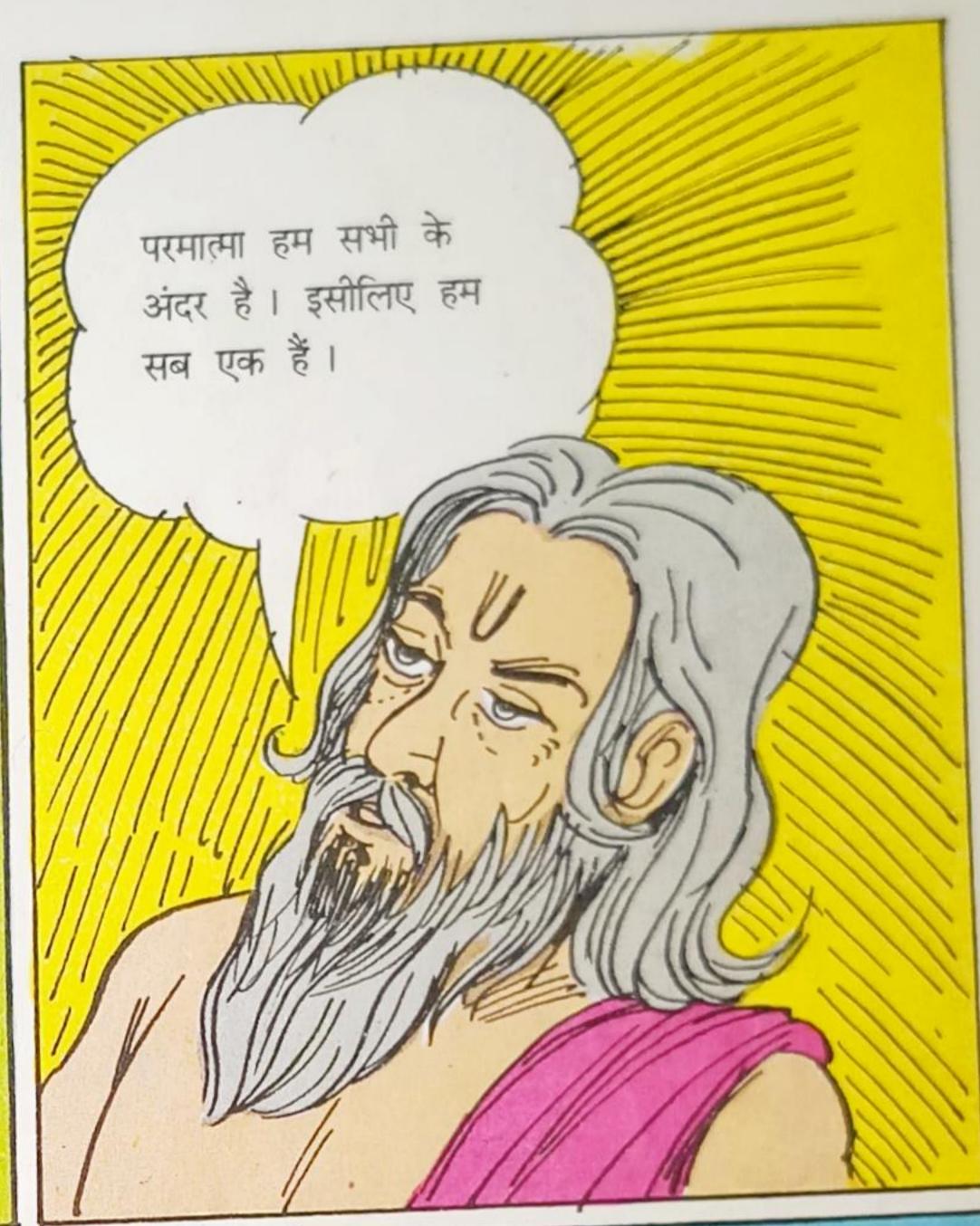
पूरा ज्ञान पाकर संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर के साथ उत्तर भारत की ओर चले । जो उनका नाम संकीर्तन सुनता, सुध-बुध खो बैठता ।
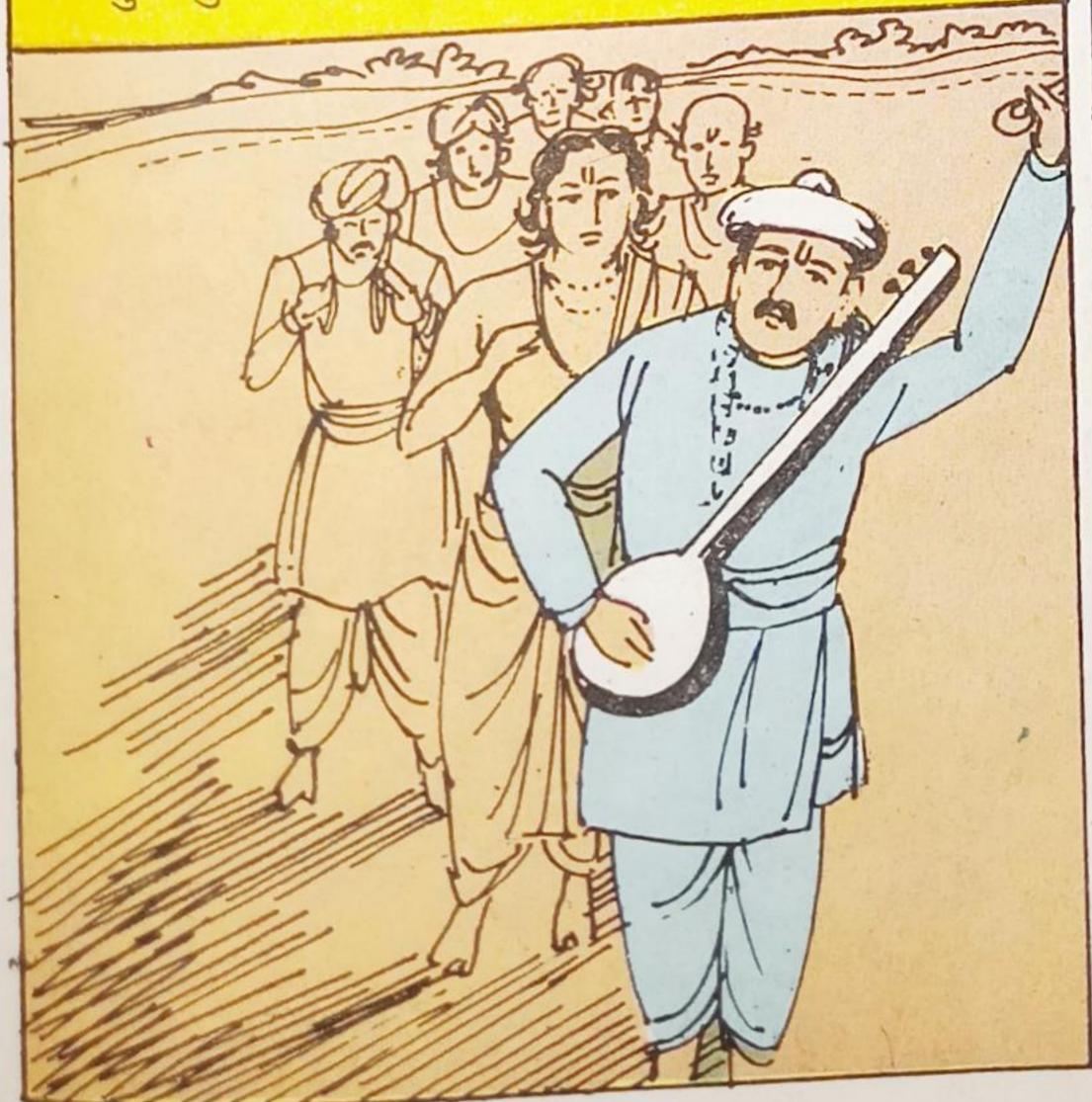
मारवाड़ में कोलदर्जी स्थान से संत ज्ञानेश्वर लौट गए । आलंदी में उन्होंने समाधि ले ली । इस विछोह से संत नामदेव का मन महाराष्ट्र से उचट गया । वह संत मंडली के साथ दिल्ली आ गए । दिल्ली में नाम संकीर्तन की ऐसी धूम मची कि एक रात—
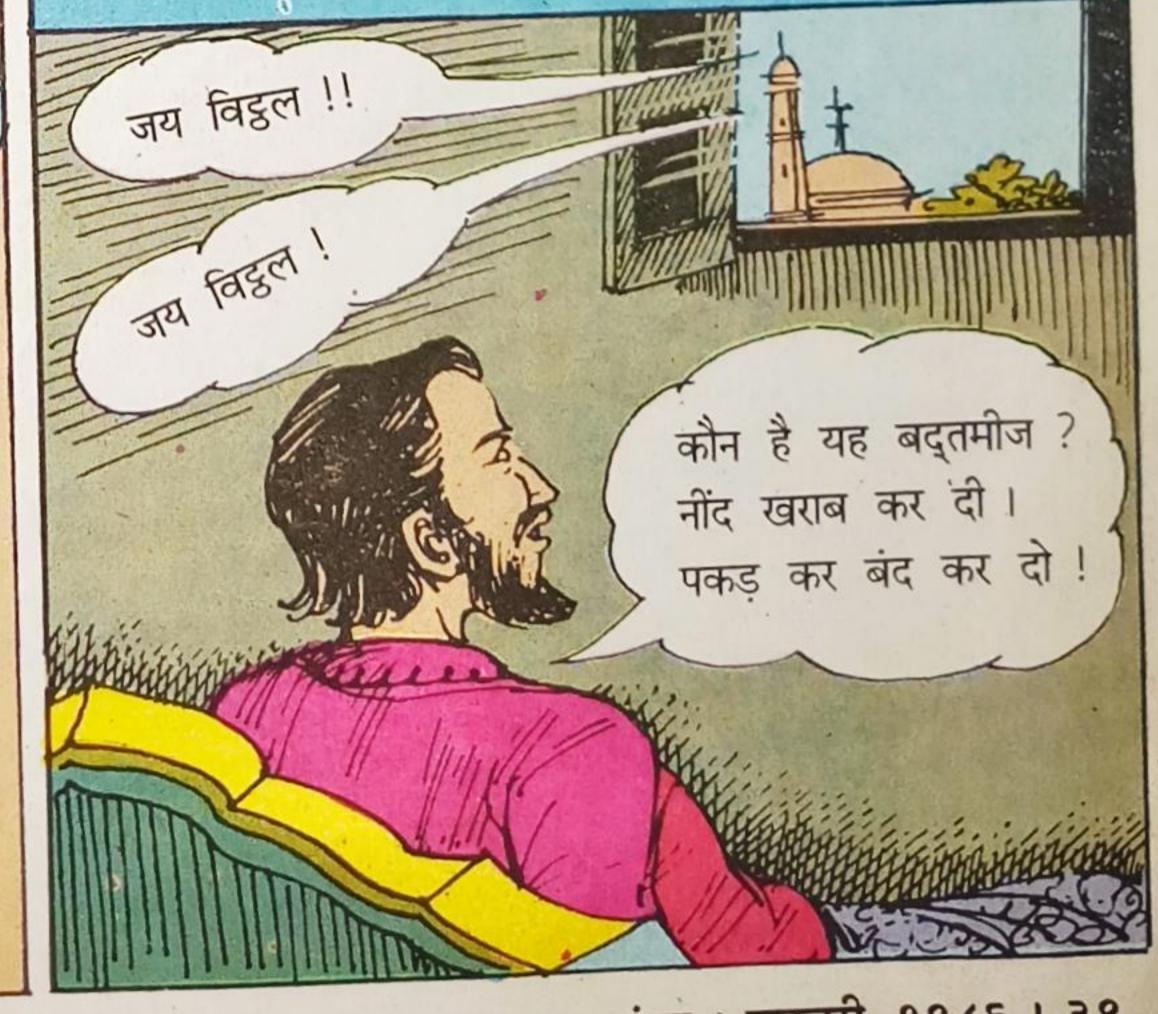
किंतु नामदेव का भगवान विट्ठल में अडिग विश्वास था। मन से उन्हें पुकारा, तो.), . .
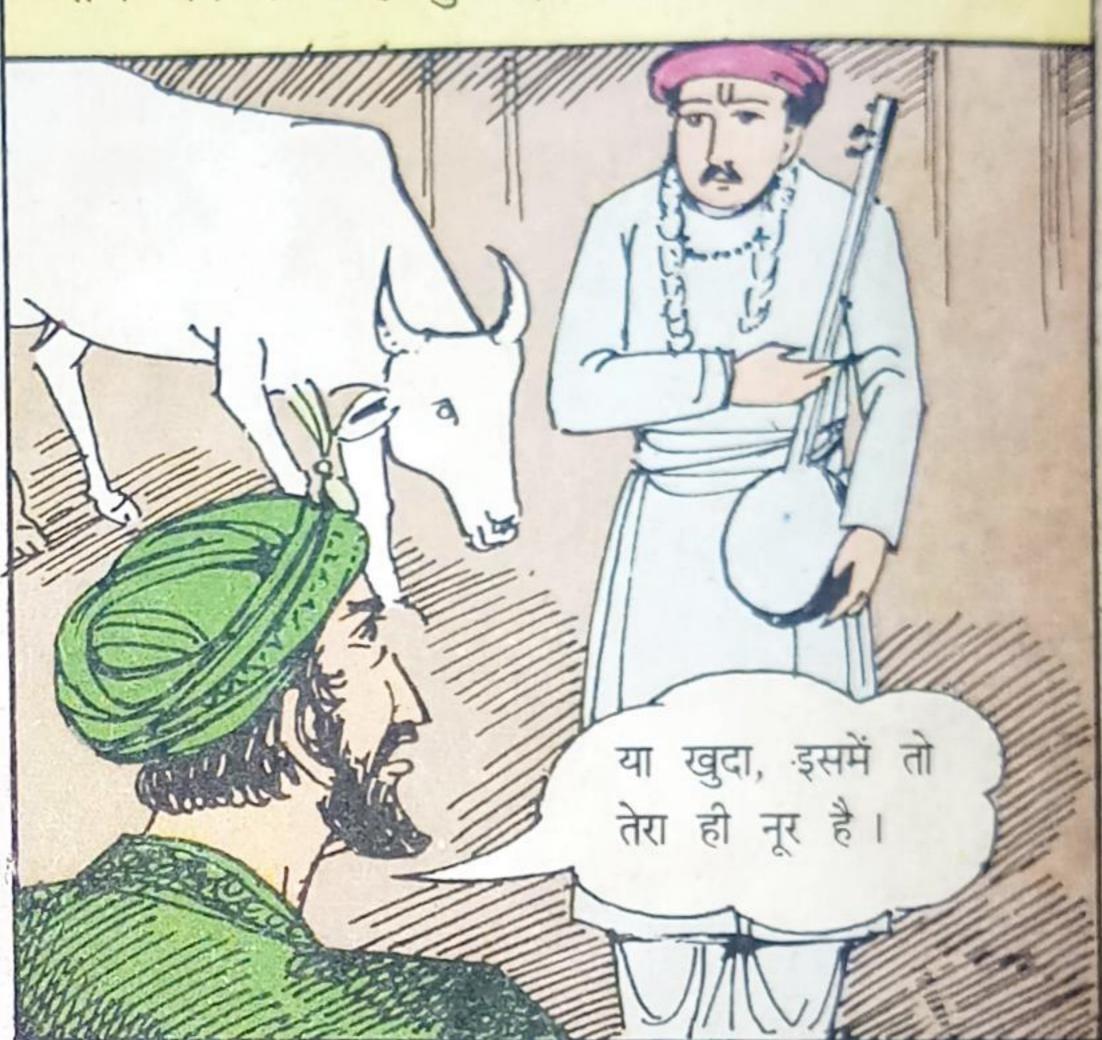
दिल्ली के बादशाह को अपना चमत्कार दिखा, संत नामदेव पंजाब पहुंचे। सारे पंजाब में भगवान नाम का अमृत लुटाते गुरुदासपुर आए। कुछ दिन वहीं रहे। उनके उपदेशों से धर्म को नया बल मिला। घोमान में उनका एक मंदिर आज भी है।

८० वर्ष की आयु तक, महाराष्ट्र से पंजाब तक भक्ति-सुधा बरसाकर संत नामदेव ने पंढरपुर के विट्ठल मंदिर के द्वार पर चिर समाधि ले ली।

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ गलतियां ढूढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट ।**

कहानी लिखो : २७

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १० जनवरी, '८६ तक **सम्पादक, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर, प्रकाशित की जाएगी । **परिणाम : मार्च '८६ अंक**

चित्र-पहेली : २७

'वह जगह जो तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद है' विषय पर चित्र बनाइए । उसे १० जनवरी, '८६ तक 'नंदन' कार्यालय के पते पर भेज दीजिए । चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : अप्रैल '८६ अंक ।

कबीले का देवता

— राजकुमार जैन 'राजन'

घने वन के बीच एक झील थी। रात को चांदनी धरती पर उतरती, तो झील का पानी चमकने लगता। झील से थोड़ी दूर आदिवासी कबीले की एक बस्ती थी।

पूर्णिमा की रात आती, तो कबीले की लड़कियां खूब नाचती-गातीं। फिर बस्ती वाले इकट्ठे होकर पहाड़ी के पार जाते थे। वहां हुंगा कबीले की बस्ती थी। वे वहां जाकर हुंगा कबीले के देवता की पूजा करते थे। मगर कबीले वाले इससे खुश नहीं थे। पूजा से लौटते समय सबके चेहरे उदास होते। छोटे बच्चे बड़े-बूढ़ों से पूछते—"हमारे कबीले के देवता कहां हैं? हम हुंगा कबीले के देवता की पूजा क्यों करते हैं?"

सुनकर कबीले के बड़े-बूढ़े चुप हो जाते। कबीले का अपना कोई देवता था ही नहीं। बहुत दिन पहले की बात है। कबीले के किसी अन्यायी मुखिया से नाराज हो, देवता उनकी बस्ती छोड़कर चले गए थे। इसके बाद देवता का मंदिर भी जमीन में समा गया था। अब उस जगह पर एक गहरा गढ़ा बना हुआ था। उसमें से काला-काला धुआं निकलता रहता था।

एक रात बस्ती नींद में डूबी थी। तभी कोई सितारा जोर से चमका। वह धीरे-धीरे धरती की ओर गिरने लगा। हर पल उसकी रोशनी तेज होती जा रही थी। आकार भी बड़ा होता जा रहा था। कबीले के मुखिया की आंखें खुलीं। उसने देखा, तो घबरा गया।

कुछ देर तक मुखिया की आंखों के आगे अंधेरा-सा छाया रहा। फिर उसके कानों में किसी के कराहने की आवाज आई। उसने हिम्मत जुटाई। सामने देखा, एक लड़का जमीन पर पड़ा कराह रहा था।

मुखिया लड़के के पास गया। पूछा—"कौन हो, कहां से आए हो? तुम कराह क्यों रहे हो?"

लड़के ने आंखें खोलीं। मुखिया की ओर देखा। बोला—"मैं आया नहीं, ऊपर से गिर गया हूं। बहुत चोट लगी है।"

सुनकर मुखिया आश्चर्य से ताकता रह गया। उसने ऊपर की ओर भी देखा। मुखिया ने लड़के को सहारा देकर उठाया। अपनी झोंपड़ी की तरफ ले चला। रास्ते में पूछा—"तुम्हारा क्या नाम है?"

"तारा-सितारा।"—लड़के ने कहा।

सुबह सूरज उगा, तो मुखिया ने अंदर झांका। उसकी आंखें फटी रह गईं। वह लड़का कमरे में नहीं था। न जाने कहां गायब हो गया!

मुखिया कुछ न जान सका। सूरज की पहली किरण के साथ ही तारा-सितारा एक नन्हे फूल में बदल गया था। वह कमरे में यूं उड़ने लगा, जैसे तितली। मुखिया के दरवाजा खोलते ही तारा-सितारा उड़कर बाहर चला गया।

झील की दूसरी ओर ऊंची पहाड़ी थी। तारा-सितारा उसकी चोटी पर जा गिरा। दिन ढला, तो एक झाड़ी में अटककर फूल बना तारा-सितारा नन्हे सितारे जैसा दमकने लगा।

अगली सुबह एक चिड़िया पहाड़ी पर उतरी। उसने फूल को चोंच में दबाया और उड़ चली। रास्ते में तारा-सितारा उसकी चोंच से नीचे आ गिरा।

जंगली भैंसों का एक झुंड वहां से गुजर रहा था। तारा-सितारा एक भैंस के पैर से चिपक गया। भैंस जाकर झील में नहाने लगी।

रात को चांद नहीं निकला । सब तरफ घना अंधेरा फैल गया, लेकिन झील के पानी पर एक अजीब प्रकाश फैला था । अब तारा-सितारा वहां चमक रहा था ।

उस रात भी मुखिया की नींद टूट गई । आंखें खुलते ही वह झील पर पहुंचा । यह अद्‌भुत दृश्य देख, नीचे बैठ गया । फिर झील में कूद पड़ा । तैरता हुआ उस ओर बढ़ने लगा, जहां तारा-सितारा चमक रहा था । लेकिन जैसे-जैसे वह बढ़ता, तारा-सितारा उससे दूर खिसकता जाता ।

अगली सुबह मुखिया ने पूरे कबीले को झील के पास बुलाया । मुखिया का आदेश कौन टाल सकता था ! सबके मन में एक ही बात थी—'आखिर मुखिया ने हमें यहां क्यों बुलाया है ?'

मुखिया ने झील की ओर देखा। अब भी तारा-सितारा झील के बीचों बीच तैर रहा था । मुखिया बोला—''कबीले का हर सदस्य बारी-बारी से झील में कूदे । चमकते फूल को बाहर लाने की कोशिश करे ।''

कबीले वाले एक-एक करके झील में कूदने लगे । लेकिन फूल के पास तक कोई नहीं पहुंच सका । सब थक गए । निराश होकर वहां से चले आए । हर कोई चुप था । मुखिया भी सिर झुकाए सोच में डूबा हुआ था ।

तभी वहां गहरा काला धुआं फैल गया । यह उसी गढ़े से निकल रहा था, जिसमें देवता का मंदिर समाया था । मुखिया तुरंत उस तरफ दौड़ पड़ा । कबीले वाले भी पीछे-पीछे दौड़ रहे थे । वे सब गढ़े के चारों ओर दायरा बनाकर खड़े हो गए ।

धुआं अब बहुत तेजी से उठ रहा था । गढ़े से तरह-तरह की आवाजें आने लगीं । देवता का मंदिर धीरे-धीरे जमीन से बाहर निकल आया । काला धुआं गायब हो गया ।

यह चमत्कार देख, सब लोग मंदिर के सामने सिर झुकाकर खड़े हो गए। वे बहुत खुश थे ।

मुखिया ने कहा—''सब ध्यान से सुनें । आज देवता ने कबीले का अपराध क्षमा कर दिया । उन्होंने हमें फिर से दर्शन दिए हैं । आओ, हम सब मिलकर झील के पवित्र जल से उनकी पूजा करें ।'' वे झील की ओर चल दिए । अंजुली में जल लाकर देवता के चरणों में चढ़ाने लगे ।

तभी झील में तैरता तारा-सितारा तट की ओर खिसकने लगा । अब उसका आकार छोटा होता जा रहा था, मगर चमक वैसी ही थी ।

कबीले की एक युवती ने अंजुली में पानी भरा, तो तारा-सितारा आपसे आप उसकी अंजुलि में आ गिरा । लड़की ने तारा-सितारा देवता को अर्पण कर दिया । बाकी सबने जंगली फूल चढ़ाए । फूलों के बीच तारा-सितारा सफेद रत्नों-सा दमक रहा था । सब उस लड़की पर देवता की कृपा मान रहे थे ।

उसके बाद देर तक नृत्य-गान चलता रहा । कबीले की युवतियां सज-धजकर आई थीं । उन्होंने आपस में मिलकर फूलों से श्रृंगार किया था ।

दूसरे दिन से मुखिया कबीले वालों के साथ मंदिर में पूजा करने आया । अंदर जाते ही चौंक उठा । इधर-उधर देखने लगा—तारा-सितारा दिखाई न दिया । न जाने कहां गायब हो गया था !

उस दिन से कबीले वाले हर माह तारे का त्योहार मनाने लगे । कबीले की लड़कियां खूब सज-धजकर पूरी रात देवता के सामने नृत्य करती थीं ।

अब उन्हें हुंगा कबीले के देवता के पास जाने की जरूरत नहीं रही थी । ●

कृष्ण बट

—राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

यह घटना नंदगांव और बरसाने के बीच की है। एक बार श्रीकृष्ण और उनके सखा गाएं चरा रहे थे। कृष्ण ने गोपियों को देखा, तो सखाओं के साथ दौड़ पड़े। उनके सिर से दही की मटकियां उतार लीं। गोपियां पहले तो नाराज हुईं, पर बाद में मान गईं। मटकियां उतारने दीं। कृष्ण ने अपने सखाओं से कहा—"चलो, हम सब मिलकर भर पेट दही खाएं।" सखाओं ने कहा—"बर्तन कहां हैं, जिसमें डालकर खाएं ?"

कृष्ण पास ही उगे वट वृक्ष से कुछ पत्तियां तोड़ लाए। उन्हें हाथ से कटोरों की तरह बना डाला। फिर पत्तों के उन कटोरों में दही रख, खूब जी भरकर सबने खाया। गोपियां आठ थीं। वे खड़ी-खड़ी उन्हें देखती रहीं। मुसकराती रहीं। कृष्ण खाकर उठे ही थे कि गोपियां उनके कटोरे उठाकर ले गईं। वे सोचतीं थीं, इन्हें दिखाकर यशोदा से फरियाद करेंगी।

रास के समय भगवान कृष्ण ने जिन आठ गोपियों को खास तौर पर सखी चुना था। और जो भगवान की अष्ट सखी के नाम से प्रसिद्ध हैं, वे गोपियां ये ही थीं। जिस वट के पत्तों को लेकर कृष्ण ने दही खाने के बर्तन बनाए थे, आगे चलकर उसके सभी पत्ते कटोरे जैसे आकार के होते गए। उन वट वृक्षों की एक विशेष जाति ही बन गई—कृष्ण वट। आज ब्रज में ऐसे वृक्ष, दो एक ही संख्या में पाए जाते हैं। हां, दक्षिण भारत के कुछ तीर्थ यात्री, जो ब्रज से इसके छोटे-छोटे पौधे ले गए थे, उन्होंने इनको वहां उगाया। अब वे काफी संख्या में वहां फल-फूल गए हैं। इन पत्तों का फोटो लेख के साथ है।

डाल की चिड़िया

— अमरजीत सिंह

इस वर्ष सख्त जाड़ा पड़ा था। मौसम बदला, तो राजा समेंद्र सिंह अपनी रानी पुण्यवती के साथ घूमने निकल पड़े। एक दिन जब वे दोनों नगर से बाहर एक निर्जन स्थान से गुजर रहे थे, तो उन्हें एक बुढ़िया मिली। वह अत्यंत दुर्बल थी। चेहरे पर झुर्रियां पड़ी थीं। लाठी टेकती हुई रानी के पास पहुंची। कहा—"तुम्हारी कोख से एक सुंदर लड़की जन्म लेगी। पर जब तक वह सात वर्ष की न हो जाए, उसे एक पल के लिए भी महल से बाहर मत जाने देना। नहीं तो भारी विपदा का सामना करना पड़ेगा।" यह कहकर बुढ़िया अचानक अदृश्य हो गई।

राजा-रानी परेशान से खड़े रहे। फिर महल में लौट आए।

ठीक एक वर्ष बाद रानी पुण्यवती ने एक लड़की को जन्म दिया। राजा और रानी की खुशी की कोई सीमा न थी। परंतु रानी को सदा बुढ़िया की बात का ख्याल रहता। वह अपनी बेटी हेमा की स्वयं देख-भाल करती। एक पल के लिए भी अपने से अलग न करती थी।

रानी को बेटी की चिंता करते देख, राजा समेंद्र सिंह ने एक दिन उससे कहा—"तुम दिन-रात बच्ची की देखभाल में व्यस्त रहती हो। क्यों न कुछ विश्वासी सेविकाओं को इस काम के लिए रख लिया जाए। वे अपनी जान से भी ज्यादा राजकुमारी की रक्षा करेंगी। तुम्हारा सदा इस तरह महल में बंद रहना ठीक नहीं।"

"जब तक बच्ची सात वर्ष की न हो जाए, मैं स्वयं इसका ध्यान रखूंगी।"—रानी का एक टूक उत्तर था।

मां के प्यार की गहराई को समझ, राजा चुप रह गए।

हेमा बड़ी होती जा रही थी। अब उसे महल की कैद अच्छी न लगती। वह ललचाई नजरों से बाग की

ओर देखती। छायादार पेड़, रंग-बिरंगे फूल, बाग में उड़ती सुंदर तितलियां उसे अपनी ओर खींचती रहतीं। वह उदास स्वर में अपनी मां से पूछती—"मां, क्या मैं बाग में खेलने नहीं जा सकती?"

"जब तक तुम सात वर्ष की नहीं हो जातीं, तब तक के लिए नहीं।"—रानी उसे समझाती।

एक बार शिकार के दौरान राजा समरेंद्र सिंह को जंगल में एक नन्हा बालक मिला। देखने में वह राजकुमार ही लगता था। वह जंगल में बिल्कुल अकेला था। राजा अनाथ जान, उसे अपने साथ ले आए। उन्होंने लड़के का नाम रखा शिवेंद्र।

बालक शिवेंद्र महल में ही रहता था। राजकुमारी हेमा और शिवेंद्र दिन भर महल में खेलते रहते। दोनों ही बहुत खुश थे। राजकुमारी अब पांच वर्ष की हो चुकी थी।

एक बार खबर आई कि पुण्यवती की मां बहुत बीमार है। पुण्यवती को न चाहते हुए भी जाना पड़ा। साथ में राजा भी गए। चलते समय रानी ने सेविकाओं को अच्छी तरह समझा दिया था, वे हेमा को एक पल के लिए भी महल से बाहर न निकलने दें। दासियों ने रानी से कहा कि वे निश्चिंत होकर जाएं।

रानी को महल से गए कई दिन बीत गए थे। एक दिन राजकुमारी जिद पर अड़ गई। पूरे दिन उसने कुछ नहीं खाया। वह थोड़ी-सी देर के लिए बाग में जाना चाहती थी। अपने हाथों से सुंदर फूलों की एक माला बनाना चाहती थी।

सेविका बच्ची की यह बात मानने के लिए तैयार न थी, पर अंत में उसे राजकुमारी की जिद के आगे झुकना पड़ा। सैनिकों के कड़े पहरे में राजकुमारी को बाग में ले जाया गया।

बाग में कदम-कदम पर सैनिक चौकस खड़े थे।

राजकुमारी हेमा जीवन में पहली बार बाग में आई थी। किसी ओर से भी खतरे की आशंका न थी। फिर एकाएक जोर का तूफान उठा। तेज आंधी चलने लगी। दिन में भी घुप्प अंधेरा छा गया। कहीं कुछ नजर नहीं आ रहा था। यह स्थिति कुछ ही समय तक रही। तूफान शांत हुआ, तो सब घबरा गए। राजकुमारी हेमा का कहीं पता न था। सैनिकों ने बाग का चप्पा-चप्पा छान मारा, परंतु राजकुमारी न मिली। सभी लोग निराश होकर महल में वापस आ गए। सेविका रानी के क्रोध के डर से थर-थर कांप रही थी। शिवेंद्र सबसे अधिक परेशान था।

पूरा नगर शोक में डूब गया। राजा और रानी को इसकी खबर मिली। वे फौरन लौट आए।

राजकुमारी के खो जाने से राज्य के सभी लोग दुखी थे, पर रानी पुण्यवती के दुःख की कोई सीमा न थी। वह बीमार हो गई। खाना त्याग दिया। राजा समरेंद्र सिंह का भी राज्य के किसी काम में दिल नहीं लगता था।

इस बीच राजा और रानी का शिवेंद्र के प्रति स्नेह बढ़ता गया। वे उसे अपने बेटे की तरह प्यार करते थे। धीरे-धीरे राज्य के सभी लोग उसे राजकुमार शिवेंद्र के नाम से पुकारने लगे।

राजा ने हेमा की खोज में सब तरफ सैनिक भेजे, पर सब खाली हाथ लौट आए।

इस तरह कई वर्ष बीत गए। राजकुमार शिवेंद्र की ख्याति एक पराक्रमी योद्धा के रूप में चारों ओर फैल चुकी थी। अनेक युद्धों में राजा समरेंद्र की सेना ने शिवेंद्र की कमान में विजय प्राप्त की थी।

रानी पुण्यवती अत्यंत दुर्बल हो गई थी। वह बीमार रहती थी। इतने वर्ष बीत जाने पर भी राजकुमारी हेमा के खो जाने का दुःख वह भुला न पाती। शिवेंद्र से रानी की यह दशा देखी नहीं जाती थी। वह रानी को अपनी मां ही मानता था।

एक रात राजकुमार ने सपना देखा—वह घोड़े पर सवार एक जंगल से गुजर रहा है। जंगल में काफी दूर चलने पर उसे एक बड़ा-सा खंडहर दिखाई दिया। उसमें से किसी के रोने की आवाज आ रही थी। उसे ऐसा लगा, जैसे राजकुमारी हेमा रो रही है। इसी के साथ शिवेंद्र की नींद खुल गई।

सुबह होते ही राजकुमार ने राजा से अपने सपने की बात कही। साथ ही राजकुमारी को ढूंढ़ने की आज्ञा मांगी। उन्होंने शिवेंद्र को राजकुमारी की खोज में जाने की आज्ञा दे दी।

राजकुमार शिवेंद्र घोड़े पर सवार हो, राजकुमारी की खोज में निकल पड़ा। एक दिन चलते-चलते राजकुमार एक घने जंगल में पहुंचा। वह खुशी से उछल पड़ा। यह बिल्कुल वैसा ही था, जैसा उसने सपने में देखा था। उसके जंगल में प्रवेश करते ही जोर की आंधी आई। आंधी का वेग इतना भयंकर था कि सैकड़ों पेड़ धराशायी हो गए। काफी देर बाद आंधी शांत हुई। राजकुमार बड़ी कठिनाई से स्वयं को इस तूफान से बचा पाया था। पास में जो थोड़ा भोजन बचा था, उसे खाकर शिवेंद्र ने एक झरने से पानी पिया। घोड़े को थोड़ी देर के लिए खुला छोड़ दिया।

अब रात उतर आई थी। चारों ओर अंधेरा छा गया था। वह एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे जाकर सो गया।

अचानक आधी रात को उसकी नींद खुल गई। चारों ओर धीमी-धीमी रोशनी फैली हुई थी। रोशनी विशाल पेड़ के पत्तों से निकल रही थी। वह विस्मित-सा अपने चारों ओर देख रहा था। तभी एक तेज आवाज हुई। बरगद के तने में एक दरवाजा खुल गया। वहां से सफेद बालों वाला एक बूढ़ा बाहर आया। बूढ़े व्यक्ति ने उससे कहा—"राजकुमार शिवेंद्र, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा न जाने कब से कर रहा हूं।"

"आप मेरी प्रतीक्षा क्यों कर रहे हैं ?" —शिवेंद्र ने हैरान होकर पूछा।

"मैं वन देवता हूं। जानता हूं, तुम घर से क्यों निकले हो ? राजकुमारी हेमा को कराल राक्षस ने कैद कर रखा है। वह एक चिड़िया के रूप में कैद है। कराल मेरा पुराना शत्रु है। उसने बहुत-से लोगों को पत्थर की मूर्तियों में बदल दिया है। वह जब भी इस जंगल से गुजरता है, भयंकर आंधी के रूप में सैकड़ों पेड़ गिराता हुआ जाता है।"

राजकुमार विस्मित-सा वन देवता की बातें सुन रहा था। इसी बीच कहीं से शेरों के गरजने की आवाज आई। लगता था, जानवरों में कहीं युद्ध छिड़ गया है। थोड़ी देर बाद हाथियों की चिंग्घाड़ सुनाई दी। फिर जंगल में खामोशी छा गई।

वन देवता ने शिवेंद्र से उसकी तलवार मांगी। अपनी अंगुलियों को उसकी धार पर कई बार फेरा। फिर तलवार राजकुमार को वापस करते हुए

बोले—"कराल अत्यंत शक्तिशाली है। वह दक्षिण दिशा में यहां से सौ कोस की दूरी पर एक विशाल खंडहर में रहता है। पास ही, पेड़ों के झुरमुट में एक गहरी झील है। तुम्हें खंडहर में जाने से पहले उस झील में स्नान करना होगा। स्नान के बाद तुम्हारे शरीर में असीम बल आ जाएगा। इस तलवार में भी अब अद्भुत शक्ति आ गई है। तुम इससे राक्षस का सामना कर सकोगे।" इतना कहकर वन देवता अदृश्य हो गए।

शिवेंद्र ने चारों ओर देखा। पेड़ से निकलती रोशनी के अतिरिक्त बाकी सभी जगह अंधेरा फैला हुआ था। वह कुछ सोच ही रहा था, वन देवता फिर प्रकट हुए। उनके हाथ में एक छोटी-सी विचित्र टहनी थी। मुसकराते हुए टहनी उन्होंने राजकुमार को दे दी। कहा—"राजकुमारी हेमा इस टहनी को छूते ही फिर अपने असली रूप में आ जाएगी।"

वन देवता राजकुमार को आशीर्वाद देकर फिर उस विशाल तने में समा गए। इसके बाद पेड़ से निकलती रोशनी भी बुझ गई। शिवेंद्र थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गया, पर नींद न आई। पौ फटते ही वह घोड़े पर सवार होकर दक्षिण दिशा में बढ़ चला।

दूसरे दिन वह विशाल खंडहर के पास पहुंच गया। वह एक पहाड़ी पर था। शिवेंद्र झील की तलाश करने लगा। यहां आकर आगे का मार्ग बहुत विकट हो गया था।

दोपहर में शिवेंद्र को वह झील दिखाई दी। वह घने पेड़ों में छिपी थी। राजकुमार ने घोड़े को एक पेड़ से बांध दिया और झील में स्नान के लिए चल पड़ा।

राजकुमार ने साहस करके झील में छलांग लगा दी। कुछ क्षणों के लिए उसकी चेतना जैसे खो गई। स्नान करने के बाद वह झील से बाहर निकला, तो उसे अपने अंदर बहुत अधिक शक्ति महसूस हो रही थी।

थोड़ी देर बाद वह उस खंडहर की ओर बढ़ चला। कठिन मार्ग, सीधी चढ़ाई। कांटेदार झाड़ियों के कारण उसके शरीर से खून बहने लगा था। लेकिन उसने चिंता न की। ज्यों-ज्यों वह खंडहर के नजदीक पहुंच रहा था, उसके चारों ओर भयंकर शोर उठ रहा था। जैसे-तैसे खंडहर के प्रवेश द्वार पर पहुंच ही गया।

खंडहर में अंधेरा छाया था। राजकुमार ने तलवार हाथ में ले ली। उसने अंधेरे में ही आगे बढ़ना शुरू कर दिया। कई छोटे-बड़े कमरे पार करता, वह आगे बढ़ रहा था। अंत में वह एक विशाल कक्ष में पहुंच गया। वहां काफी रोशनी थी। कराल राक्षस वहीं था। शिवेंद्र को देखते ही वह उसकी ओर झपटा। राजकुमार ने अपनी तलवार से उस पर हमला किया।

अंत में घायल होकर कराल पृथ्वी पर गिर पड़ा। राजकुमार ने तुरंत पूरी शक्ति से प्रहार किया। कराल के प्राण पखेरू उड़ गए।

राक्षस की मृत्यु के बाद खंडहर न जाने कहां गायब हो गया। राजकुमार शिवेंद्र अब एक गुफा के द्वार पर खड़ा था। जैसे ही राजकुमार ने अपनी तलवार से दरवाजे को छुआ, वह एक झटके से खुल गया। कक्ष से एक सुंदर चिड़िया उड़कर बाहर पेड़ पर बैठ गई।

वह चिड़िया के पास गया और अपने कपड़ों में छिपी टहनी से उसको छुआ। टहनी से छूते ही चिड़िया राजकुमारी हेमा में बदल गई। इसके बाद राजकुमारी को ले, शिवेंद्र लौट आया।

राजा और रानी खुश थे। बेटी को पाकर रानी पुण्यवती के प्राण जाते-जाते लौट आए थे। ●

चटपट

● एक आदमी ने दुकानदार के पास नौकर को भेजते हुए लिखा—"दो किलो घी दे देना। यदि ठीक हुआ, तो चैक भेज दूंगा।"
दुकानदार ने जवाब लिखा—"पहले चैक भेज दीजिए। ठीक हुआ, तो घी दे दूंगा।"

● अध्यापक—मेरा कोट देख रहे हो। बस, इसी पर एक साफ-सुथरा और अच्छा निबंध लिखो। अगर लिखना न आए, मुझसे पूछ लेना।
छात्र—मास्टर साहब, फटे-पुराने और मैले-कुचैले कोट पर साफ-सुथरा निबंध कैसे लिखा जा सकता है?

● पिता—गवैया और शायर का अंतर जानते हो?
बेटा—हां, गवैया गांव में रहता होगा। शायर शहर में।

● पत्नी—मैंने ऊपर के काम के लिए नौकर रख लिया है।
पति—नौकर रखना है, तो अपने लिए रखो। ऊपर वालों से हमें क्या?

● बिट्टू—तुम शेर के पिंजरे में घुस गए और शेर ने कुछ नहीं कहा?
नीटू—अरे, वह पिंजरे में होता, तभी तो कुछ कहता।

● एक कैदी (जिसने घड़ी चुराई थी)—कितना समय हुआ?
दूसरा कैदी (जिसने भैंस चुराई थी)—यही कोई भैंस दुहने का।

● अध्यापक—सर, गलती से मैंने लालबत्ती पर सड़क पार कर ली। कृपया जल्दी छोड़ दें, जिससे कक्षा में छात्रों का नुकसान न हो।
जज—ठीक है, सौ बार लिखिए कि आप कभी लालबत्ती होने पर सड़क पार नहीं करेंगे।

● जेलर—कैदी कैसे भाग गया? क्या बाहर निकलने के सभी फाटक बंद थे?
चौकीदार—जी, वह बाहर निकलने के रास्ते से नहीं, आने वाले रास्ते से भागा था।

● सोहन—मैं गा रहा था, तभी किसी ने खिड़की से जूता फेंककर मारा।
मोहन—बहुत अच्छा। दोबारा गाओ, तो मुफ़्त में तुम्हारे जूतों का जोड़ा बन जाए। जूते आजकल बहुत महंगे हैं।

● एक व्यक्ति—अरे, भाई! कार में बैठा बच्चा क्यों चिल्ला रहा है?
दूसरा व्यक्ति—शायद कार का हार्न खराब है।

● बाबू (ग्रामीण से)—भाई, तुम इस फिल्म का टिकट तीसरी बार खरीद रहे हो। आखिर मामला क्या है?
ग्रामीण—क्या करूं साहब, जो आदमी गेट पर खड़ा है, न जाने उसकी मुझसे क्या दुश्मनी है। जब-जब टिकट लेकर अंदर जाना चाहता हूं, वह आधी टिकट फाड़ देता है।

● पड़ोसी—तुम कहते हो, तुमने एक थप्पड़ मारा था। मेरा बेटा कहता है, तुमने पांच थप्पड़ मारे थे।
लड़का—जी, मारा तो एक ही थप्पड़ था, मगर उसकी सेहत देखते हुए उसे पांच किस्तों में बांट दिया था।

● एक कवि—मेरी नई कविता का शीर्षक है—कोयला, पानी और धुआं।
श्रोता—सरल शब्दों में रेलगाड़ी क्यों नहीं कह देते।

तेनालीराम २१५

मीठा पानी

एक बार राजा कृष्णदेव राय सेनापति, राजपुरोहित और तेनालीराम के साथ घूमने निकले। राजा जानना चाहते थे कि इस बार राज्य में फसल कैसी है, मगर अपना दौरा गुप्त रखना चाहते थे। इसीलिए गांव के बाहर से जंगलों और खेतों के रास्ते वे जा रहे थे।

चलते-चलते दोपहर हो गई। जाड़ों के दिन थे। फिर भी घोड़े पर लगातार चलने से गर्मी लगने लगी। राजा को प्यास भी लग आई थी। राजा ने सेनापति से कहा—"पीने के लिए पानी तुरंत लाओ। मगर आसपास से ही। गांव में मत जाना।"
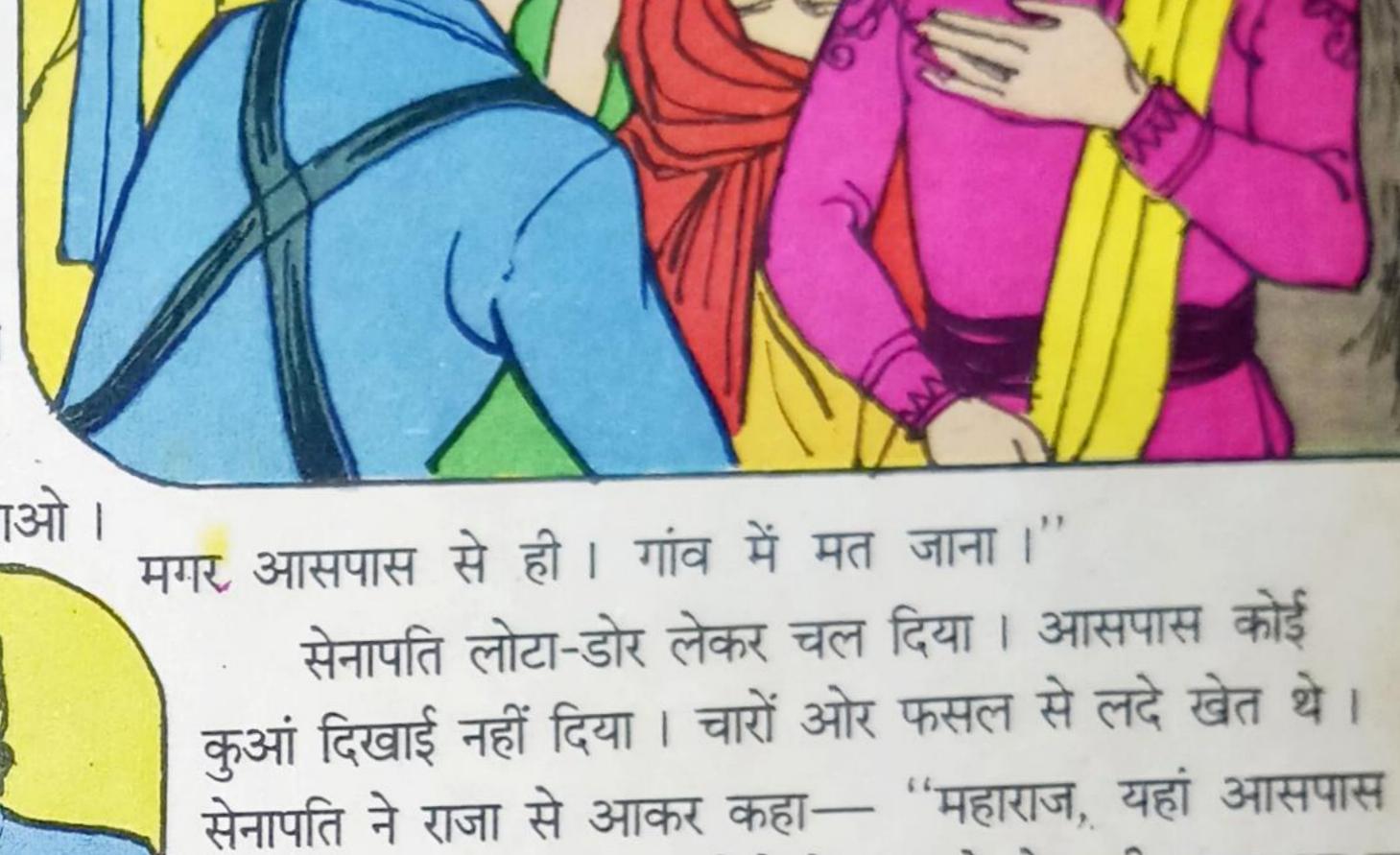
सेनापति लोटा-डोर लेकर चल दिया। आसपास कोई कुआं दिखाई नहीं दिया। चारों ओर फसल से लदे खेत थे। सेनापति ने राजा से आकर कहा— "महाराज, यहां आसपास कुआं नजर नहीं आया। खेतों में रजबाहे से पानी जरूर आ रहा है, मगर वह आपके पीने लायक नहीं।"

"तब क्या करें? क्या उसी पानी को पिएं?"— राजा ने पूछा।

पुरोहित कुछ सोचकर बोला— "महाराज, 'आपत्ति काले मर्यादा नास्ति' यह शास्त्र-वचन है। कोई हर्ज नहीं। मैं अंगोछे में छानकर उसी पानी को ले आता हूं।"

राजा ने पास खड़े तेनालीराम की ओर देखा— "तुम्हारा क्या ख्याल है?"

तेनालीराम बोला— "महाराज, प्यास की चिंता न करें। मैं अभी मीठा पानी लाता हूं।"

"महाराज! तेनालीराम बातों से बहला रहे हैं।" —राजपुरोहित बोला।

"जाओ, पानी लेकर आओ।"— राजा ने तेनालीराम से कहा।

तेनालीराम तुरंत ईख के खेत से चार गन्ने तोड़ लाया। बोला— "महाराज! लीजिए। पानी के चार गिलास ले आया। फिर तेनालीराम ने चाकू से गन्ने छीलकर गंडेरियां बनाईं। राजा ने चूसीं, तो सारी प्यास भाग गई।

चित्र : सरला टंडन

तराजू के पलड़े

—सूर्य मंगल

लोकपाल नामक एक आदमी था। उसे तरह-तरह की चीजें इकट्ठी करने का शौक था। एक बार वह कम्पूचिया गया। वहां उसे बौद्ध भिक्षु मिला। लोकपाल ने उसकी बहुत सेवा की। भिक्षु ने प्रसन्न होकर उसे गुड़ियों का जोड़ा भेंट किया। इन गुड़ियों ने धारीदार चमकीले कपड़े पहने हुए थे। एक हाथ से कमर पर उन्होंने फलों की टोकरी संभाली हुई थी, दूसरे हाथ से तराजू का एक-एक पलड़ा पकड़ा हुआ था। भिक्षु ने कहा—"ये गुड़ियां चमत्कारी हैं। इनके हाथ में तराजू भी विचित्र है। गुड़ियों के आगे अगर न्याय की बात की जाए, तो ये पलड़े आपस में जुड़ जाएंगे।"

लोकपाल अपने शहर लौटा तो सोचा—'तराजू की सच्चाई का पता लगाना चाहिए।' अगले दिन वह गुड़ियों के साथ काजी की अदालत में जा पहुंचा। यह काजी अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध था। काजी ने जब मुकदमे का फैसला सुनाया, तो सभी वाह-वाह कर उठे।

तभी लोकपाल ने गुड़ियों की तराजू की तरफ देखा। तराजू के पलड़े वैसे के वैसे ही थे।

अदालत खाली हो गई, तो लोकपाल काजी के पास पहुंचा। बोला—"हुजूर! गलती माफ हो। लगता है, आज के फैसले से आप संतुष्ट नहीं हैं।"

काजी ने लोकपाल को गौर से देखा। उसे लगा—'जरूर यह आदमी कोई भविष्य वक्ता है।' काजी सहम गया। दरअसल नगर कोतवाल के दबाव के कारण आज उसे फैसले को बदलना पड़ा था।

अगले दिन वह राजदरबार में पहुंचा। वहां राजा चापलूसों से घिरा हुआ था। चापलूस जो भी राय प्रगट करते, राजा उन्हीं को मान लेता था। दरबारी भी राजा के फैसलों पर वाह-वाह कर रहे थे। मगर गुड़ियों के तराजू के पलड़े आपस में जुड़े नहीं थे। लोकपाल समझ गया, सारे फैसले गलत हैं। दरबार उठने के बाद राजा महल की तरफ जाने लगा, तो राजा के पास जाकर बोला—"महाराज, एक सच्ची बात कहने की आज्ञा चाहता हूं।"

"कहो।"—राजा ने कहा। लोकपाल बोला—"आपके फैसलों पर पूरे राज्य का जीवन निर्भर है। मगर आपका सारा न्याय गलत है। आप फैसला देते समय सोचा करिए।"

सुनकर राजा को गुस्सा तो बहुत आया, मगर वह बिना कुछ बोले महल में लौट गया।

उस रात वह सो न सका। सोचता रहा—'आखिर उस व्यक्ति ने बिना मतलब तो कहा नहीं। जरूर उसकी बात में सच्चाई हो सकती है।' अगले दिन राजा ने दरबार में हर बात को ध्यान से सुना और तथ्यों के आधार पर ही अपना फैसला सुनाया।

लोकपाल ने गुड़ियों की तरफ देखा। अब तराजू के दोनों पलड़े जुड़ गए थे। लोकपाल बोला—"महाराज, की जय हो। अब आपका फैसला बिल्कुल ठीक है।" राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

नीली लकीर

एक था जादूगर । वह घने जंगलों में रहता था । था भी बड़ा मायावी । अनेक जादुई शक्तियां थीं उसके पास । जंगल के आसपास कई गांव भी थे । जादूगर गांव वालों को डरा-धमकाकर मनमानी किया करता था । लोग उसके जादू से थर-थर कांपते थे ।

इन्हीं गांवों में एक गांव था माणिकपुर । उसमें एक चरवाहा था । चरवाहे की इकलौती लड़की थी—रूपा । बड़ी निडर और चतुर थी वह । एक दिन वह जंगल में पशु चराने गई । वहां घूमते हुए उसने एक पेड़ से धुआं निकलते हुए देखा । वह डरी नहीं । सावधानी से इधर-उधर देखती हुई वहां आई । उसने भी जादूगर के बारे में बहुत-सी बातें सुन रखी थीं । इसीलिए मन में डर रही थी, कहीं जादूगर न हो ।

धुआं एक पेड़ के आसपास बड़ी तेजी से गोल घेरे में घूम रहा था । रूपा ने देखा, उस पेड़ की जड़ में बहुत-से फूल रखे हैं । उनके ऊपर रखी हुई थी सुराही और एक गिलास । सुराही के ऊपर फूल-पत्तियां कढ़ी हुई थीं । रूपा उन्हें उठाने आगे बढ़ी । तभी धुएं का एक गुबार उसकी आंखों में धंस गया । आंखें तिलमिलाने लगीं । मगर रूपा ने परवाह न करते हुए सुराही और गिलास को उठा लिया । उन्हें गांव के बाहर एक जगह छिपाकर रख दिया ।

तभी जादूगर वहां आया । वह नाराज होकर बोला—"मैं इस गांव को भस्म कर दूंगा । बताओ, मेरी पूजा में किसने विघ्न डाला है ? कौन लाया है मेरी सुराही और गिलास को उठाकर ।"

गांव वाले चुप । क्या जवाब देते ।

जादूगर बोला-"इतनी आसानी से पीछा नहीं छूटेगा । मैं सारे गांव वालों को लूला-लंगड़ा और अंधा बना दूंगा ।"

रूपा भी इसी भीड़ में खड़ी थी । गांव वालों की हालत देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ । जादूगर से बोली—"मैं अभी लेकर आती हूं तुम्हारी सुराही और गिलास । मैं ही उनको जंगल से उठाकर लाई थी ।" यह कहकर रूपा तेजी से भागी और जादूगर की चीजें उठा लाई । वह एक ऊंचे टीले पर खड़ी हो गई । जादूगर कहने लगा—"हां, हां, ला, वापस दे ।"

रूपा ने चिल्लाकर कहा—"ठहर जाओ जादूगर ! आगे बढ़े तो, मैं इन्हें अभी तोड़ दूंगी ।" यह सुनकर जादूगर के पैर तो जैसे जड़ हो गए । वह रुक गया । बोला—"बता क्या कहती है ? क्या चाहती है ?"

रूपा बोली— "वायदा करो, तुम गांव वालों को कभी नहीं सताओगे, जंगल छोड़कर भी चले जाओगे ।"

जादूगर की आंख क्रोध से लाल हो गई । मगर वह विवश था । उसने बात मान ली । फिर सुराही और गिलास छीनने के लिए तेजी से हवा में उछला । रूपा भी सावधान थी । उसने जादूगर के आने से पहले ही गिलास और सुराही को जमीन पर दे मारा । वे चूर-चूर हो गए । उनके फूटते ही नीले धुएं की एक लकीर जादूगर की ओर लपकी । इसके बाद जादूगर फिर वहां कभी दिखाई नहीं दिया ।

—कंचन

चित्र : लियाकत भाटी

बारात
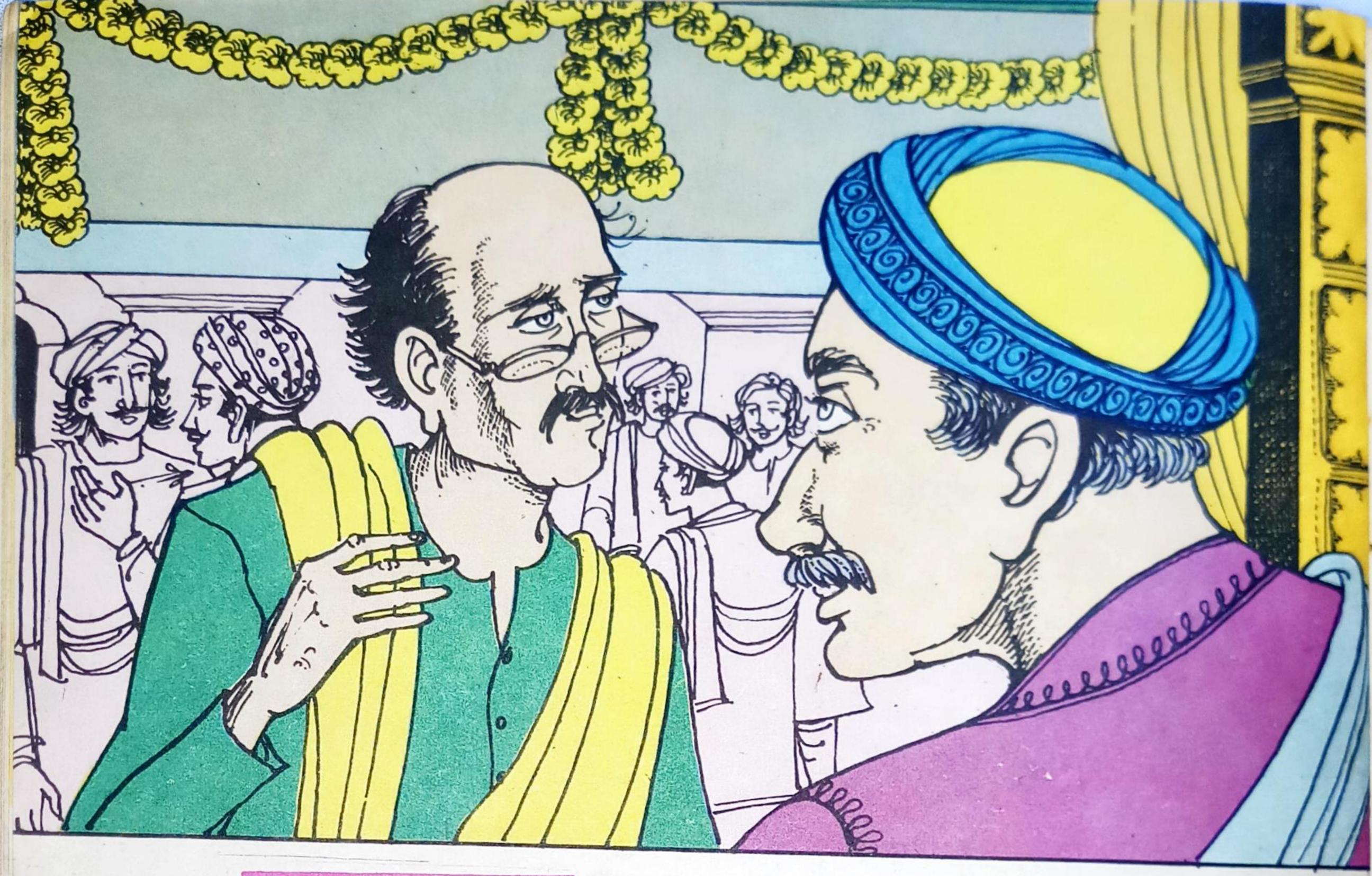
— शीतांशु नारद

सेठ कालूराम का एक ही लड़का था। नाम था सुरेश। सेठ ने उसे बड़े चाव से पढ़ाया-लिखाया था। जब सुरेश विवाह के लायक हुआ, तो उसका विवाह जयपुर में तय कर दिया गया।

सुरेश के विवाह की तैयारियां हवेली में जोर-शोर से होने लगीं। जगह-जगह से मेहमान आए। धूम-धाम मचने लगी। सगाई में शहर भर के लोग इकट्ठा हुए। इसके बाद बारात की बारी आई। सेठ का शहर में बड़ा मेल-जोल था। बहुत-से लोग सुरेश की बारात में जाने की आशा लगाए बैठे थे। वैसे भी बारात जयपुर जैसे मशहूर शहर में जा रही थी। सब सोचते थे — 'इस बहाने जयपुर भी देख आएंगे।'

निश्चित समय बारात जयपुर रवाना हुई। लम्बा सफर तय कर वहां पहुंची, तो लड़की के पिता सेठ करोड़ीमल ने बारात का खूब स्वागत किया। बढ़िया जनवासा, नौकर-चाकर। खाने पीने को तरह-तरह की मिठाइयां और शर्बत। सेठ ने मेवों के भी ढेर लगा दिए। शाम को बाजे वाले आए। सजावट वाले आए और बारात चल पड़ी, बेटी वाले की हवेली की ओर। सुरेश दूल्हा बना, घोड़े पर बैठा था।

करोड़ीमल ने बारात की अगवानी की। वरमाला होने के बाद बारातियों ने खाना खाया। खाना खाकर वे जनवासे में आराम करने चले गए। इसके बाद चढ़ावे का नेग होना था। तभी सेठ कालूराम को याद आया, बहुत बड़ी गलती हो गई। लड़की को चढ़ाने के लिए जो जेवर रखे थे, वे तो घर ही छोड़ आए। घर सैकड़ों मील दूर था। वहां जाकर जेवर का डिब्बा कौन लाता? उन्होंने अपने मुनीम से सलाह ली। मुनीम बोला— "आप चिंता न करें। देखता हूं, यहां जयपुर में भी जेवर मिल जाएंगे। मैं सर्राफे जाकर कुछ इंतजाम करता हूं।" इतना कहकर मुनीम सर्राफे गया। रात बहुत हो चुकी थी। सब दुकानें बंद हो गई थीं। मुनीम लौटकर आया। उसने सारी बात सेठ कालूराम को बताई। सेठ जी बोले— "अब क्या होगा?"

तभी मुनीम को एक बात सूझी। उसने कहा— "हम ऐसा क्यों न करें, चढ़ावे के वक्त हर जेवर के बदले में उसकी कीमत दे दें।" सेठ कालूराम ने बात मान ली। बोले — "हां, अब ऐसा ही करना पड़ेगा।"

चढ़ावे के वक्त लड़की मंडप के नीचे आई। पंडित ने मंत्र पढ़े। पहला मंत्र गले की माला चढ़ाने का था। मंत्र पढ़कर उसने लड़की के लिए माला मांगी। सेठ कालूराम के मुनीम ने बीस हजार रुपए के नोट निकालकर दे दिए। बोला — "ये माला के हैं।"

सेठ करोड़ीमल और उनके नगर वालों को कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन वे लोग चुप रहे। फिर पंडित ने मंगलसूत्र का मंत्र पढ़ा। अब मंगलसूत्र चढ़ाना था। मुनीम ने १० हजार रुपए निकालकर दे दिए। बोला — "ये मंगलसूत्र के हैं।" इसी तरह और भी जेवरों के बारे में होता रहा। पंडित मंत्र पढ़ता और मुनीम रुपए निकालकर दे देता। उस जेवर की कीमत के बदले में उन्हें मान लिया जाता। चढ़ावे का नेग पूरा हो गया। बाराती जनवासे में लौट आए।

दूसरे दिन जेवनार थी। सेठ करोड़ीमल की कोठी में दावत के लिए बहुत-से लोग आए थे। बारातियों को बड़े आंगन में मंडप के नीचे बैठाया गया। उनके आगे पत्तलें डाल दी गईं। इसके बाद पत्तलों पर पानी छिड़का गया। फिर करोड़ीमल का एक आदमी बर्तन में दस-दस पैसे के बहुत-से सिक्के भरकर लाया। उसने एक-एक सिक्का हर पत्तल में परोस दिया। परोसते समय वह कहता जाता था — "यह चटनी का है।" इसके बाद दूसरा आदमी अठन्नियां भरकर लाया। उसने भी हर पत्तल में एक-एक अठन्नी रख दी। साथ में यह भी कहा — "यह सब्जी की।" आखिर में सेठ करोड़ीमल पांच-पांच के नोट लेकर आए। उन्होंने हर पत्तल में एक-एक नोट रख दिया। फिर बोले — "यह पूरियों का है।" परोस पूरी हो गई। सेठ करोड़ीमल ने बारातियों से कहा — "आप भोजन शुरू करें।"

बाराती मुश्किल में पड़ गए। खाते तो क्या खाते? रुपया-पैसा तो खाया नहीं जा सकता था। उन्होंने सेठ कालूराम की ओर देखा। सेठ कालूराम उठकर खड़े हो गए। वह करोड़ीमल से बोले — "यह क्या हो रहा है? रुपए-पैसे भला कैसे खाए जा सकते हैं?"

करोड़ीमल बोले — "क्यों नहीं खाए जा सकते? कल रात आपने चढ़ावे में रुपए ही चढ़ाए थे। अगर मेरी लड़की रुपए पहन सकती है, तो बाराती इन्हें खा भी सकते हैं।"

सेठ कालूराम क्या उत्तर देते! उन्हें अपनी गलती पता चली। उन्होंने करोड़ीमल को सारी बात बता दी, कैसे वह जेवर का डिब्बा घर भूल आए। जयपुर में भी जेवर खरीदने की कोशिश की, लेकिन सर्राफा बंद हो गया था। मजबूर होकर ही यह सब करना पड़ा।

बात करोड़ीमल की समझ में आ गई। उन्होंने यह सब नाटक केवल रात की बात का उत्तर देने के लिए किया था। खाना तो तैयार था। फटाफट बारातियों को परोस दिया गया। सबने जी भरकर स्वादिष्ट खाना खाया।

एक मजेदार बात यह भी हुई। परोसी हुई चीजें वापस नहीं उठाई जा सकती थीं, इसलिए जो रुपए-पैसे पत्तलों पर परोसे गए थे, वे सब बारातियों ने उठाकर अपनी जेबों के हवाले कर दिए। ●

इंद्रजाल-स्पेक्ट्रम कॉमिक्स प्रतियोगिता

वाह! सपनों की दुनिया से डिज़्नीलैण्ड की सैर मुफ़्त!

अब आपके चहेते बहादुर नायक आपको शानदार इनाम दिला सकते हैं

२ १ले इनाम — डिज़्नीलैण्ड (अमेरिका) में हफ्ते भर मौज-ही-मौज (होटल में ठहरने की व्यवस्था के साथ)

५ २रे इनाम — रंगीन टीवी
KELTRON Color man TRAC

३ ३रे इनाम — सुदूर पूर्व में बैंकाक-पट्टाया-सिंगापुर की दिल लुभानेवाली सैर
TCI

१२ ४थे इनाम — बीएसए एसएलआर साइकिलें

१०० ५वे इनाम — तरंग २-बैंडवाले ट्रांज़िस्टर
KEONICS

मुफ़्त! EMI HMV एचएमवी कैसेट स्पेक्ट्रम कॉमिक्स के ५०० पहले सालाना ग्राहकों को

यूं हिस्सा लीजिए– इनाम जीतिए !
आपके चहेते बहादुर नायक आपस में एक रहस्यभरी बात कह रहे हैं. वह रहस्यभरी बात क्या हो सकती है ? हमें ज्यादा-से ज्यादा १० शब्दों में लिख भेजिए कि बेताल मैण्ड्रक से क्या कह रहे हैं ?
(देखिए प्रवेश पत्र)

ये प्रवेशपत्र इंद्रजाल कॉमिक्स के १५/२२/२९ दिसम्बर के अंकों में और हमारे नये साप्ताहिक प्रकाशन स्पेक्ट्रम कॉमिक्स के ६ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर के बीच छपनेवाले चारों अंकों में मिलेंगे.

SPECTRUM COMICS

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन समूह की ओर से

everest/85/IC/504—hn

'नंदन' ज्ञान-पहेली

५०० रु॰ पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, उस पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—

सम्पादक,

'नंदन' (ज्ञान-पहेली); हिंदुस्तान टाइम्स हाऊस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१

- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. मैं तो———रोटी खाऊंगा। (मोटी/छोटी)

३. "बस, वही———गया है।" मां ने कहा। (चबा/चला)

४. श्यामू जल्दी जल्दी———रहा था। (बोल/खोल)

५. वहीं———तो ठीक रहेगा। (रहो/रखो)

६. तब अक्ल पेड़ों पर———करती थी। (उगा/लगा)

७. आपकी———की अब कोई जरूरत नहीं। (दया/दवा)

९. देखते-देखते सब कुछ———गया। (मिट/टूट)

१०. "मत———। कब से कह रहा हूं।" (रो/सो)

११. अब और———कर क्या करेगा। (बहा/बना)

१२. **भारत के प्रसिद्ध वैद्य।**

ऊपर से नीचे

२. ऐसा———तो फिर बात ही न बन जाए। (कहो/करो)

८. **जापान का ज्वालामुखी।**

काटिए

'नंदन' ज्ञान-पहेली : २०६

नाम————————

आयु———पता————————

————————

१	टी	■	२ क	■	३ च	
अंतिम तिथि				■	■	■
४	ल	१०.१.८६	५ र		■	■
■	६	गा	■	■	७ द	
८	■	■	९	ट	■	■
जी	■	१०	■	■	११ ब	
■	■	■	१२	र		■

नं॰ ज्ञा॰ प॰ २०६

फैसला

– ध्रुवनारायण सिंघानिया
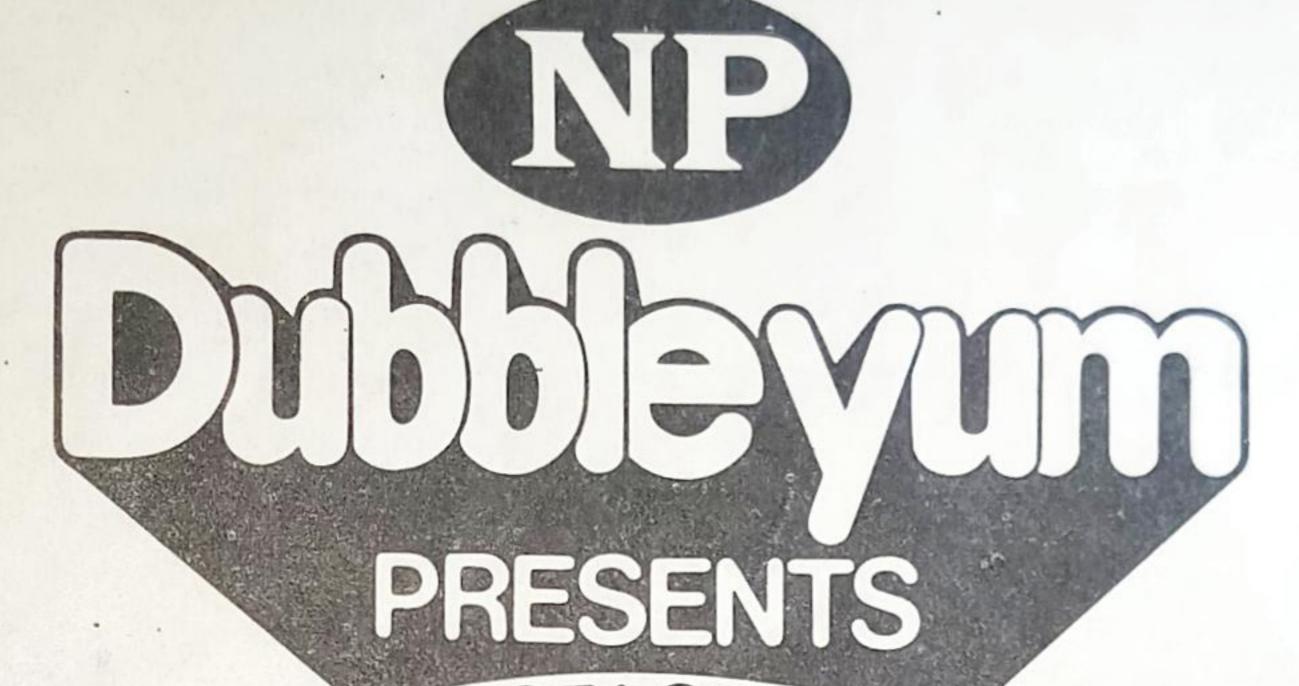
रामपुर नामक गांव में एक स्वार्थी आदमी रहता था। जिसका नाम था रामदेव। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वह कुछ भी कर सकता था। इसी कारण गांव के लोग उससे नफरत करते थे।

रामदेव के पास एक सुंदर घोड़ी थी। रामदेव उस पर सामान लादकर शहर बेचने ले जाता था।

एक दिन वह घोड़ी बीमार पड़ गई। असल में रामदेव उससे काम तो बहुत लेता था, परंतु खाने के लिए सूखी घास ही देता था। कमजोर वह पहले से ही हो रही थी। उस पर बीमारी ने उसे दबोच लिया। ऐसी हालत में भी रामदेव ने उससे काम लेना बंद नहीं किया।

दूसरे दिन रामदेव ने दो बोरे गेहूं लादे और घोड़ी को ले चला। घोड़ी में चलने की शक्ति नहीं थी। फिर भी पीठ पर पड़ते तड़ातड़ चाबुक उसे चला रहे थे। कुछ देर में उसकी शक्ति जवाब दे गई। जंगल में एक तालाब के पास से गुजरते हुए वह ठोकर खाकर गिर पड़ी।

रामदेव ने समझा, अब घोड़ी नहीं बचेगी। गेहूं के बोरे एक किराए की गाड़ी में रख, वह घोड़ी को वहीं छोड़कर चला गया।

उधर से नारायण नामक एक गड़रिया निकला। घोड़ी को देखते ही उसके कष्ट को समझ गया। वह पशुओं का इलाज भी करता था। तुरंत जंगल से एक जड़ी तोड़ लाया। पत्थर पर पीसकर घोड़ी के मुंह में जड़ी का रस निचोड़ दिया। थोड़ी देर में उसे होश आया। नारायण ने कुछ देर उसकी मालिश की। फिर उसे धीरे-धीरे चलाता हुआ अपने घर ले आया।

घोड़ी पूरा खाना न मिलने के कारण कमजोर हो गई थी। नारायण उसे हरी दूब और चने खिलाने लगा। जड़ी-बूटियों से उसके घाव ठीक किए। थोड़े ही दिन में घोड़ी पूरी तरह स्वस्थ हो गई।

एक दिन रामदेव ने नारायण को घुड़सवारी करते देखा। गौर से देखने पर वह अपनी घोड़ी को पहचान गया। उसने नारायण को आवाज देकर कहा—"मेरी घोड़ी तू ही चुरा ले गया था। कब से घोड़ी को ढूंढ़ रहा हूं मैं। इसे मुझे सौंपकर रफूचक्कर हो, वर्ना राजा के दरबार में तेरी शिकायत करूंगा।"

नारायण उसकी बात सुन, आश्चर्य में पड़ गया। बोला—"कैसी बात करते हो। यह घोड़ी तो जंगल में तालाब के किनारे बेहोश पड़ी थी। मैं इसे वहीं से लाया। बड़ी दवा-दारू के बाद ठीक हो पाई है यह। आपकी होती, तो वहां इसे क्यों छोड़ जाते?"

रामदेव यह सुनकर तिलमिला गया। फिर भी घोड़ी को पाने का लोभ रोक न सका। वह राजा के दरबार में पहुंचा। नारायण द्वारा घोड़ी चुराए जाने की झूठी शिकायत कर दी। राजा ने नारायण को घोड़ी सहित दरबार में हाजिर होने की आज्ञा दी। उसने नारायण को सच-सच बात बताने को कहा।

वह बोला—"राजा साहब, मैं बेकसूर हूं। मैंने चोरी नहीं की। मैंने इस घोड़ी की बड़ी सेवा की है। रामदेव ने मुझ पर झूठा आरोप लगाया है।"

तभी रामदेव बोल पड़ा—"हुजूर, यह झूठ बोलता है। यह घोड़ी मेरे घर से ही चुराकर ले गया।"

राजा ने मंत्री को आदेश दिया —"इस घोड़ी को खुला छोड़ दो। इन दोनों में से जिसकी घोड़ी होगी, उसके घर स्वयं ही पहुंच जाएगी।"

राजा का आदेश पा, मंत्री ने घोड़ी की रस्सी खोल दी। घोड़ी नारायण के पीछे-पीछे चल दी। यह देखकर रामदेव ने उसे अपनी ओर बुलाने की लाख कोशिश की, घोड़ी रुकी नहीं। अब रामदेव उसकी ओर बढ़ा। उसने घोड़ी को रोकना चाहा, तो घोड़ी ने लात मारकर उसे गिरा दिया।

यह देखकर राजा ने अपना फैसला सुनाया—"यह घोड़ी नारायण की ही है।"

राजा का फैसला सुन, रामदेव का चेहरा फक्क पड़ गया। वह सिर नीचा किए वहां से चल पड़ा। ●

पिता की धरोहर

— सुखबीर

एक आदमी मौत के बिस्तर पर पड़ा था। उसने अपने तीनों बेटों को बुलाकर कहा—"मेरा आखिरी समय आ गया है। मैं विरासत में अपनी गरीबी ही तुम्हें देकर जा रहा हूं। लेकिन साथ में एक और भी चीज देना चाहता हूं।" कहकर वह एक क्षण रुका। बेटों ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा। पिता ने गहरी सांस लेकर कहा—"और वह चीज है, तीखी नजर। हर चीज को तीखी नजर से देखना। उसे जानने-समझने का प्रयत्न करना। इससे तुम उन्नति कर सकोगे।" इसके कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई।

पिता की मृत्यु के बाद एक दिन तीनों भाई काम की तलाश में शहर के लिए चल पड़े। रास्ते में बड़ा भाई एक जगह अचानक रुक गया। उसने तीखी नजर से नीचे देखते हुए कहा—"कुछ ही देर पहले यहां से एक ऊंट गया है।"

मंझले भाई ने भी रास्ते के दोनों ओर ध्यान से देखते हुए कहा—"ऊंट दाईं आंख से काना था।"

इसके बाद छोटे भाई ने रास्ते की धूल को देखते हुए कहा—"लगता है, ऊंट पर एक औरत अपने बच्चे के साथ सवार थी।" इसके बाद वे आगे चल पड़े।

कुछ आगे एक घुड़सवार उनके पास से गुजरा। बड़े भाई ने उससे पूछा—"क्या तुम्हारा ऊंट खो गया है?"

"हां"— घुड़सवार ने कहा।

फिर उन तीनों ने ऊंट के बारे में जो खोज की थी, उस आदमी को बता दी। ऊंट बिल्कुल वैसा ही था। वह उनकी बात सुनकर चौंक पड़ा। फिर बोला—"तुम लोगों ने सही बताया! कहां है वह ऊंट?"

"आगे गया होगा।"—उन्होंने कहा।

"तुमने उसे कितनी देर पहले देखा था?"—घुड़सवार ने पूछा।

"हमने उसे नहीं देखा।"—वे बोले।

"देखा नहीं, तो उसके बारे में सब कुछ सही-सही कैसे बता दिया?"—घुड़सवार बोला।

—"बस, बता दिया। लेकिन हमने उसे देखा नहीं है।"

घुड़सवार ने उन्हें शक की नजर से देखा। बोला—"इसका मतलब है, वह ऊंट तुम्हीं ने चुराकर कहीं इधर-उधर कर दिया है। बताओ, कहां है वह?"

"घोड़ा तेजी से दौड़ाकर उसके पीछे जाओ। रास्ते में ही कहीं मिल जाएगा।"—बड़े भाई ने कहा।

"और बाद में तुम चम्पत हो जाओ। क्यों? वाह, बड़े चालाक बनते हो!"—कहकर घुड़सवार ने अपनी तलवार म्यान से निकाली। तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का हुक्म देते हुए कहा—"चलो, बादशाह के पास। वहीं तुम्हारा फैसला होगा।"

शहर पहुंचने पर घुड़सवार ने तीनों भाइयों को बादशाह के दरबार में पेश किया। सारी बात बताते हुए उन पर अपना ऊंट चुराने का इल्जाम लगाया।

बादशाह ने कुछ क्षण सोचा। फिर तीनों भाइयों की ओर देखकर पूछा—"क्या तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?"

"हुजूर, हमने ऊंट नहीं चुराया। चुराना क्या, हमने तो उसे देखा तक नहीं।"—बड़े भाई ने कहा।

"फिर तुमने उसके बारे में सब कुछ सही-सही कैसे बता दिया?"—बादशाह ने पूछा।

"यह तो मामूली-सी बात है। हमें हर चीज को गहरी नजर से देखने और उसके बारे में सोचने की आदत है। इसीलिए हमने ऊंट को देखे बिना, उसके बारे में सब कुछ सही-सही बता दिया।"—मंझले भाई ने कहा।

"ठीक है, हम आजमाकर देखते हैं।"—कहते हुए बादशाह ने अपने वजीर को पास बुलाया। उसके कान में कुछ कहा। वजीर वहां से चला गया। कुछ ही देर में दो नौकरों को साथ लिए लौटा। नौकरों ने अपने हाथों पर एक बहुत बड़ी पेटी उठाई हुई थी।

"हां, तो बताओ। इस पेटी में क्या है?"—बादशाह ने तीनों भाइयों से पूछा।

बड़े भाई ने कहा—"हुजूर, उसमें कोई छोटी-सी गोल चीज है।"

"वह चीज अनार हैं।"—मंझले भाई ने कहा।

"अनार अभी कच्चे हैं।"—"छोटे भाई ने कहा।

बादशाह ने सुना, तो हैरान रह गया। तभी उसके मुंह से निकला—"बिल्कुल ठीक बताया। हम दाद देते हैं तुम्हारी नजर और अक्ल की।" इसके बाद वजीर ने पेटी खोलकर उसमें से अनार निकालकर दरबारियों को दिखाए।

बादशाह ने घुड़सवार से कहा—"ये चोर नहीं हैं। तुम्हारा ऊंट कहीं आगे निकल गया होगा। जाओ, जिस रास्ते पर इन्होंने बताया था, उस पर पता लगाकर आओ। तब तक ये तीनों यहीं रहेंगे।"

घुड़सवार चला गया। लौटकर उसने कहा—"बादशाह सलामत, ऊंट मिल गया। उसी रास्ते पर जा रहा था, जिस पर इन्होंने बताया।"

बादशाह ने तीनों भाइयों की ओर देखकर कहा—"तुमने सचमुच कमाल कर दिखाया। हम तुम्हें इनाम देंगे।" उसने सोने की एक सौ मोहरें उन्हें दीं। तीनों भाई मोहरें पाकर बहुत खुश हुए।

"अच्छा, यह बताओ, तुमने बिना देखे ही ऊंट और पेटी में पड़े अनारों के बारे में कैसे बता दिया?"

"रास्ते में ऊंट के पैरों के निशान देखकर पता चला, यहां से कोई ऊंट गया है।"—बड़े भाई ने कहा। मंझले ने कहा—"रास्ते के बाईं ओर की घास तो चरी हुई है, लेकिन दाईं ओर की घास वैसी ही खड़ी थी। मैंने सोचा, ऊंट की दाईं आंख कानी होगी।"

छोटे भाई ने कहा—"आगे जाने पर मैंने एक जगह ऊंट के घुटनों के निशान देखे। मैंने सोचा, ऊंट वहां बैठा होगा। पास ही एक औरत और बच्चे के पैरों के निशान थे। यह इस बात का सबूत था कि ऊंट पर औरत और बच्चा सवार थे।"

बड़े भाई ने फिर कहा—"अब सुनिए अनार के बारे में। दोनों नौकर पेटी को जिस तरह उठाए ला रहे थे, उससे पता लग रहा था, पेटी भारी नहीं है। जब पेटी नीचे रखी गई, तो उसमें किसी गोल चीज के लुढ़कने की आवाज आई।"

मंझले भाई ने कहा—"मैंने सोचा, पेटी बाग की ओर से लाई गई है, इसलिए वह गोल चीज अनार ही होगा। दरबार में आते समय मैंने बाग में सिर्फ अनार ही अनार देखे थे।"

"अनार के कच्चे होने का अनुमान मैंने यह सोचकर लगाया, क्योंकि अनारों के पकने का मौसम अभी नहीं आया है।"—छोटे भाई ने कहा।

सुनकर बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने वजीर से कहा—"इन्हें एक सौ मोहरें और इनाम के तौर पर दी जाएं।" ●

पेटू मिठवा

—रामकुमार 'कृषक'

एक खरगोश और एक लोमड़ी में गहरी दोस्ती थी। दोनों अक्सर मिलते थे। लोमड़ी के एक छोटा बच्चा था। खरगोश उसे प्यार से मिठवा कहता था।

एक बार खरगोश ने लोमड़ी और मिठवा को दावत पर बुलाया। दावत के लिए खरगोश ने अत्यंत स्वादिष्ट भोजन बनाए थे।

मिठवा के मुंह से लार टपक रही थी। ऐसी महक उसे आज तक नहीं मिली थी। खाना शुरू हुआ। मिठवा बड़ी तेजी से पत्तल पर हाथ साफ करने लगा। लोमड़ी और खरगोश दोनों धीरे-धीरे खा रहे थे। मिठवा की हरकतों पर एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकरा देते थे।

आखिर तीन पत्तल भर खाना खाकर मिठवा का पेट भरा।

दावत के बाद मिठवा मां के साथ घर लौटा। रात हो गई, तो दोनों सोने के लिए अपने-अपने बिस्तरों पर जा लेटे। परंतु कुछ ही देर बाद मिठवा के पेट में दर्द उठा। वह चुपचाप बिस्तर पर इधर-उधर करवटें बदलने लगा। आखिर जब दर्द सहन न हो सका, तो उसने रोना शुरू कर दिया।

रोना सुनकर लोमड़ी की आंख खुल गई। वह उठ बैठी। मिठवा के पास गई। सारी बात जानकर बोली—"तब नहीं सूझता था तुझे, पेट में ठूंस-ठूंसकर खाने का यही नतीजा होता है। अब मैं कर ही क्या सकती हूं?" काफी देर बाद मिठवा की तबियत कुछ ठीक हुई। लोमड़ी ने उससे कहा—"अब जब भी किसी दावत में जाओ, कम और चबा-चबाकर खाओ। इससे न तो पेट दर्द होगा, न ही खिलाने वालों पर बेवकूफी जाहिर होगी। साथ ही मेरी भी नींद खराब नहीं होगी।" ●

दो चेले

—राजीव शर्मा

एक साधु थे। उनके कई शिष्य थे। उनमें से दो शिष्य कुछ ज्यादा ही घमंडी थे। दूसरों को अपने सामने तुच्छ समझते थे। साधु भी उन दोनों की ओर से चिंतित रहते थे।

एक दिन दोनों शिष्य पूजा करने मंदिर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक लकड़हारा दिखाई दिया। उसके पैर में लकड़ी चुभ गई थी। लगातार खून बह रहा था। दोनों ने उस लकड़हारे को देखा, तो मुंह फेर लिए। जैसे, लकड़हारे ने उनकी पूजा में विघ्न डाल दिया हो। लकड़हारे की कोई मदद न की। यह सोचते हुए कि अपनी मदद आप कर लेगा, वे आगे चल दिए।

कुछ दूर एक काला नाग बीच रास्ते पर धूप सेंक रहा था। घमंड में अकड़े शिष्यों को वह दिखाई नहीं दिया। उन दोनों में से एक का पैर नाग के ऊपर पड़ गया। नाग ने फौरन ही उसे डस लिया यह देखकर दूसरा शिष्य चीखता हुआ आश्रम की तरफ भागा।

घायल लकड़हारे ने जब चीख सुनी, तो वह अपना दुख भूल गया। दौड़कर उस ओर आया, जहां पहला शिष्य धरती पर पड़ा था। पैर से काफी खून बह जाने के कारण लकड़हारा भी अधमरा हो रहा था। फिर भी वह मुंह से चूस-चूसकर शिष्य के बदन से जहर बाहर निकालने में जुट गया।

दूसरा शिष्य आश्रम से साधु के साथ आया। उसने लकड़हारे को अपने साथी की जान बचाते देखा तो उसका सिर लज्जा से झुक गया। दूसरा शिष्य भी, जिसे सर्प ने डसा था, होश में आ चुका था। दोनों ने लकड़हारे से माफी मांगी।

साधु को सारी बात पता चली, तो वह दोनों शिष्यों पर नाराज हुए। मगर साथ ही प्रसन्न भी, क्योंकि आज उन दोनों का घमंड चूर-चूर हो गया था। ●

चीटू नीटू

यह छोटा रास्ता ठीक रहेगा

नए साल में डैडी ने नई साईकिल दिला कर बहुत अच्छा किया। अब तो हम देर से चल कर भी समय पर स्कूल पहुंच सकते हैं।

मन्नू और अन्नू लेट हो जाएंगे। इन्हें भी ले लेते हैं

पिन्टू ने पाठ याद नहीं किया, इसलिए रास्ते में...
इसे भी बैठा लेते हैं, इसके ऊंचे-ऊंचे पढ़ने से हमें भी याद...

नए साल में हम कान पकड़ते हैं, फिर लेट नहीं आएंगे

शीर्षक बताइए

फूलों जैसे प्यारे हो, नन्हे राज दुलारे हो : इस चित्र के ऐसे ही बहुत-से शीर्षक हो सकते हैं। चित्र ध्यान से देखिए और अच्छा-सा शीर्षक सोचिए। उसे १० जनवरी तक — **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए दो शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : मार्च '८६ अंक

चित्र : कुलवंत सिंह

पुरस्कृत चित्र

अनुपमा जैन, १२ वर्ष, श्री हेमचंद्र जैन, २४६/१ मोहल्ला काजियान, जी. टी. रोड, खतौली (उ. प्र.)

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—राजेशकुमार दास, गिरिडीह; अमीता रानी, नई दिल्ली; प्रमोद चौधरी, सिंहभूम; सुषमा दास, कलकत्ता; सुंदरम चौधरी, बंगलौर।

पुरस्कृत कथा:

चावल

एक था सेठ। उसके घर में तीन प्राणी थे—एक वह, उसकी पत्नी और बेटी। घर में बहुत-से नौकर-चाकर थे। मगर सेठ हमेशा परेशान और चिंतित बना रहता था। वह सोचता—'मेरे पास इतना धन आए कि वह कभी खत्म न हो। पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहे।'

संयोग से एक महात्मा सेठ के घर पधारे। सेठ ने महात्मा जी का खूब आदर-सत्कार किया। आज वह बहुत खुश था, क्योंकि सिद्ध पुरुष अपने आप उसके घर पधारे थे। सेठ की लड़की ने पिता को खुश देखा, तो वह भी बहुत प्रसन्न हुई।

शाम को काम-धंधे से फुर्सत पा, सेठ महात्मा जी के पास आया। वह अब तक उसी के घर थे। सेठ ने उनके चरण छुए। महात्मा जी ने आशीर्वाद देकर पूछा-"सुना है, तुम दुखी रहते हो। तुम्हारे दुःख का कारण क्या है?"

सेठ ने फौरन अपने मन की बात बता दी। सुनकर महात्मा हंस दिए। फिर बोले—"कल तुम्हारी समस्या का हल बताऊंगा।"

महात्मा जी के भोजन और विश्राम की व्यवस्था कर, सेठ खुशी-खुशी अपने कमरे में चला गया।

अगली सुबह वह महात्मा जी के पास पहुंचा, तो उन्होंने कहा—"मैंने तुम्हारी समस्या का हल खोज लिया है। तुम्हें एक काम करना होगा। तुम्हारे घर के पिछवाड़े एक गरीब बुढ़िया और उसकी विधवा बहू रहती है। तुम अपने घर से एक सेर चावल उन्हें दे आओ।"

सेठ ने तुरंत चावल लिए। वह बुढ़िया के घर की तरफ चल दिया। वहां जाकर उसने बुढ़िया से कहा—"आपके लिए चावल लाया हूं लीजिए।"

"मगर आज तो खाने के लिए चावल हैं हमारे पास।"—बुढ़िया ने कहा।

—"तो यह कल काम आ जाएंगे।"

"हम कल के लिए नहीं जोड़ते।"—बहू ने जवाब दिया।

बुढ़िया और बहू के जवाब से सेठ की आंखें खुल गईं। सेठ लौटा तो महात्मा जी के चरणों पर गिर पड़ा। बोला—"मेरी उलझन सुलझ गई। मुझे क्षमा करें।"

—रामप्रसाद शर्मा, नूरपुर, कांगड़ा (हि.प्र.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं: गुरुदयाल सिंह सलारिया, जम्मू तवी; आलोककुमार शर्मा, लखावटी, बुलंदशहर; सुस्मिता जिनेश, भोपाल।

पप्पू   रुचि-शुचि

आगामी अंक

जाड़े की ऋतु की ताजगी और फूलों की महक-सा महकता फरवरी अंक।

- नए रूप : नए रंग : दो पृष्ठों में मन मोहने वाली तरह-तरह की छवियां, फैंसी ड्रेस कैसी-कैसी।
- एलबम में फ्रेम कराने योग्य डाक टिकट : पक्षियों के।
- विश्व की महान कृतियों में पढ़िए : चार्ल्स किंग्सले की अमर-रचना—'द वाटर बेबीज' की संक्षिप्त कथा।
- डेढ़ दर्जन से अधिक अनकही कहानियां—रोचक कविताएं।
- साथ में ८ पृष्ठों की रंगबिरंगी चित्र-कथा। तेनालीराम के चातुर्य भरे कारनामे, चीटू-नीटू की शरारतें, चटपटी खबरों से भरा 'नंदन बाल समाचार' और सभी स्तम्भ।

शीर्षक बताइए : परिणाम

नवम्बर अंक में छपे चित्र पर ढेर सारे शीर्षक आए। इन दो शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

सारी दुनिया से प्यारी
मम्मी की गोद हमारी

बिन्दु गुप्ता, द्वारा श्री एस. सी. गुप्ता, १५०३ गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

मम्मी लगे यशोदा मैय्या
गोदी में है कृष्ण कन्हैया

कु. अर्चना चौरसिया, उमरियापान, जि. जबलपुर (म. प्र.) **इनके शीर्षक भी पसंद आए**—सरदार दलीप सिंह, दुर्ग; कंचन मालिनी, कलकत्ता; अरुण देशपांडेय, सिंकद्राबाद; भावना सहगल, बरेली।

नंदन ज्ञान पहेली: २०४ (परिणाम)

इस पहेली में सबसे अधिक पाठकों ने भाग लिया। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है।

सर्वशुद्ध हल : एक : दो सौ रुपए

किरण पोद्दार, कन्नूलाल लेन, कलकत्ता।

एक गलती : पंद्रह : प्रत्येक को बीस रुपए

१. हरीशकुमार राजपाल, दिल्ली; २. राजदीप सिंह, मेरठ कैंट; ३. श्रीनिवासकुमार, नालंदा; ४; अरविंदकुमार 'मंटु', पटना; ५; नेहा कंसल, कोटा; ६; संजयकुमार चौरसिया, रांची; ७; कु. हाशु नैथानी, दिल्ली; ८; ऋचा शुक्ल, नई दिल्ली; ९; प्रेरणा प्रभाकर वेकनालकर, माऊंट आबू; १०. राजीव पांडेय, गोरखपुर; ११. राजेश अग्रवाल, बलिया; १२. इशरत आलम आरा, दरभंगा; १३. राजीव कुमार शर्मा, पटना; १४. अश्विनी शर्मा, नई दिल्ली; १५. कमल जैन, मुजफ़्फ़रनगर।

आप कितने बुद्धिमान हैं? (उत्तर)

1. रेफ्री का बायां पैर दूसरी दिशा में है।
2. उसके पीछे छत पर लटकी बत्ती का शेड बड़ा है।
3. दूसरे आदमी के हाथ में लगे स्टूल की एक टांग गायब है।
4. बाईं ओर की खिड़की में एक छड़ नहीं है।
5. बोतल पकड़े आदमी के स्वेटर के गले पर धारियां हैं।
6. उसके हाथ में दबे स्पंज से अधिक पानी टपक रहा है।
7. खम्भे का सिरा सपाट हो गया है।
8. मुक्केबाज के रेडियो का एरियल बड़ा है।
9. उसके निक्कर की सफेद धारी कम चौड़ी है।
10. बाईं ओर बैठे, सिग्रेट पीते आदमी के मूंछें हैं।

नई पुस्तकें

जूनियर साइंस एनसाइक्लोपीडिया—अनुवादक :डा. सुनीता गुप्ता; प्रकाशक : पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-६; पृष्ठ २५४; मूल्य : रु. ७२.००।

इस विश्वकोश के पांच खंड हैं—१. पृथ्वी और ब्रह्मांड, २. माप, गति एवं ऊर्जा, ३. प्रकाश, दृष्टि एवं ध्वनि, ४. इलेक्ट्रानों की उपयोगिता और ५. खोज एवं आविष्कार। इन विषयों को समझाने के लिए अनेक रंगीन चित्र हैं। वैज्ञानिकों के चित्र भी दिए गए हैं। विज्ञान के छात्र कितनी ही खोजों के बारे में जान सकते हैं। किशोरों के लिए पुस्तक उपयोगी है। छपाई भी अच्छी है। भारतीय विज्ञान और वैज्ञानिकों के बारे में कुछ जानकारी जोड़ दी जाती, तो और अच्छा रहता।

हिंदी सीखने के लिए तीन पुस्तकें : हिंदी शिक्षण : १. नागरी लिपि, २. उच्चारण—वाचन, ३. लेखन-बोधन; लेखक :डा. उमाशंकर सतीश; प्रकाशक :जुगल किशोर एंड कम्पनी, राजपुर रोड, देहरादून।

दूसरे देशों में बच्चे और बड़े भी हिंदी सीखना चाहते हैं, पर उन्हें सही पुस्तकें नहीं मिल पातीं। ये तीन पुस्तकें विदेशी छात्रों के लिए बहुत उपयोगी हैं। इनमें वैज्ञानिक तरीका अपनाया गया है। डा. सतीश बरसों से विदेश में हिंदी पढ़ाते रहे हैं। उनका कहना है कि वह कुल दस घंटे में नागरी लिपि सिखा सकते हैं। उच्चारण और लेखन सिखाने के लिए दूसरी और तीसरी पुस्तकें हैं।

चुटकुले

● टिकट चैकर—यह तो लिफाफे पर लगने वाला टिकट है।

लड़का—जब इसे लगाकर लिफाफा पूरे हिंदुस्तान में जा सकता है, तब मैं इससे दूसरे स्टेशन तक क्यों नहीं जा सकता?

● पति—मैंने दोस्त को दावत पर बुलाया है। तुम बर्तन इधर-उधर क्यों छिपा रही हो?

पत्नी—साथ में उसकी पत्नी भी आएगी। वह अपने बर्तन अच्छी तरह पहचानती है।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली
में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन